संस्कार सागर

• वर्ष : 20 • अंक : 236 • दिसम्बर 2018

• वीर नि.संवत 2545 • विक्रम सं. 2074 • शक सं. 1939

लेख

- भारती धर्मों में जैन धर्म मान्य तप का विशिष्ट्य 08
- भारतीय संस्कृति को श्रमण परम्परा का योगदान 15
- आचार्य विद्यासागर जी महाराज का जीवन जन जन के मन का प्रेरणा स्त्रोत बन गया 19
- आदिपुराण में दार्शनिक तत्व 22
- सिद्ध भगवान भी पुनः संसार में लौटकर आते है ? 27
- प्रतिष्ठा पितामाह पं. गुलाबचन्द्र जी पुष्प की जीवन कृति नवागढ़ 41
- आचार्य नेमीचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती का व्यक्तित्व और कृतित्व 47
- जैन धर्म के सम्बन्ध में प्रचलित भ्रान्तियाँ आगम के परिपक्ष्य में 52
- जैन व्यक्तित्व श्री झवेरचंद्र कालिदास मेघाणी (जैन) 55
- टिमटिमाते दोहे 57

बाल कहानी

- समझदार ओम 59

कविता

- कैसी गरमी 16
- संयम करो अरे, जीवन में 21
- वीरा तेरी शरण में 31
- जलती रही जिन्दगी 39
- कमाते कमाते 53
- निशा का स्वप्न 54

कहानी

- ऐसा क्या होता है 44

नियमित स्तंभ

• **पाती पाठकों की** : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 17
• चलो देखें यात्रा : 26 • आगम दर्शन :30 • पुराण प्रेरणा : 33 • माथा पच्ची : 33
• कैरियर गाइड : 34 • दुनिया भर की बातें : 35 • इसे भी जानियेः 39 •दिशा बोध : 40
• आओसीखें : जैन न्याय : 43 • हमारे गौरव : 54 • डाकटिकटों पर जैन इतिहास :55• हास्य तरंग : 58
• बाल संस्कार डेस्क : 59 • संस्कार गीत व बाल कविता : 60 • समाचार : 61

प्रतियोगिताएं : **अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा :65 : वर्ग पहेली : 66**

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
ऐलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर–89895 05108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़–94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर–9826548159

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर–95425053111
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस–9575634441
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली–9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली–94128 89449
ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर–8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर–97938 21108
अभिनंदन सांधेलीय, पाटन–9425863244
डॉ. पंकज जैन, भोपाल–9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, साढूमल–9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर – 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर–9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ, इन्दौर (म.प्र.)

✲ आंतरिक सज्जा ✲
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का
बाकी सदस्यता शुल्क
जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें । बकाया राशि में त्रुटि हो तो सुधार हेतु हमें सूचित करें।

सदस्यता शुल्क
-आजीवन : **2100/-** (15 साल)
परम संरक्षक : **15000/-**

अपनेशहर के
- स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (संस्कार सागर)
  खाता क्र. 63000704338 (IFSC : SBIN0030463)
- भारतीय स्टेट बैंक (ब्र. जिनेश मलैया)
  खाता क्र. 30682289751 (IFSC : SBIN0011763)
- ओरिएन्टल बैंक ऑफ कामर्स
  खाता क्र.07882151004198(IFSC:ORBC0100788)
- आईडीबीआई बैंक (श्री दिगंबर जैन युवक संघ)
  खाता क्र. 155104000037022
- आईसीआईसीआय बैंक (श्री दिगम्बर जैन युवक संघ)
  खाता क्र. 004105013575 (IFSC : ICIC0000041)

में भी अपनेपूर्ण पतेसहित राशि जमा कर हमारे कार्यालय कोसूचित कर सकतेहैं।

कार्यालय
संस्कार सागर
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर –10
फोन नं. : 0731–2571851, 4003506
मो. : 89895-05108, 8717924109
website :www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

◆ लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
◆ संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
◆ कथा–साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होतेहैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
◆ पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

•श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर–10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी–1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

पाती पाठकों की....

• सम्पादक महोदय, विगत माह पाँच राज्यों के चुनाव सम्पन्न हुए इन चुनाव में नेताओं ने वोट कबाड़ने के लिए जो हथकण्डे अपनाये वे लोकतंत्र की नीव हिलाने वाले साबित हुए वोट खरीदना और बेचना तथा वोट के बदलें में कोई भी मुफ्त उपहार ग्रहण करना भारतीय दण्ड संहिता के अंतर्गत अपराध की श्रेणी में आता है। वोट खरीद फरोक्त के चलते भ्रष्टाचार को रोक पाना कैसे संभव हो पाएगा कानून तो हैं परन्तु उनका पालन करना व करवाना मात्र प्रशासन व चुनाव आयोग के बस की बात नहीं है । जब तक कि देश की जनता इस विषय में जागरूक न हो। अतः जनता जनार्दन को सर्वप्रथम स्वयं ही भ्रष्टाचार से बचना होगा।

अंशुल पारासर (लटेरी)

• सम्पादक महोदय, विगत माह सीबीआई के विशेष निर्देशक राकेश अस्थाना को करोड़ों रूपये के भ्रष्टाचार आरोपों में गिरफ्तार करने की स्थिति बनीं किन्तु हाईकोर्ट ने उन्हें थोड़ी राहत दी पर उनके खिलाफ जांच रोकने से इन्कार कर दिया। हांलाकि यह सीबीआई के अधिकारियों का आपसी टकराव का परिणाम है परन्तु जिस संस्था की जिम्मेदारी भ्रष्टाचार रोकने की है यदि उसके ही शीर्ष पर बैठे लोग अपने आप को संदेह के घेरे में लाएंगे तो भारत से अपराधन व भ्रष्टाचार को दूर करने के प्रयास मात्र दिवास्वप्न ही सिद्ध होंगे अतः भारत को भ्रष्टाचार मुक्त स्वच्छ वातावरण कायम रखने के लिए जांच ऐजेंसियों को पहले शुद्ध करना होगा।

राजकुमार जैन (इन्दौर)

• सम्पादक महोदय, विगत माह दीपावली का उत्सव बड़ी ही धूमधाम से मनाया गया सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद भी लोगों का पटाखों से मोह नहीं छूटा पर्यावरण सुरक्षा को घत्ता बताते हुए खुले आम कई जगह आतिशबाजी 10 बजे रात के बाद हुई। सुप्रीम कोई के निर्देशों का पालन कराना प्रशासन का पहला कर्त्तव्य है आतिशबाजी हिंसा और बीमारियों को आमंत्रण देती है, पटाखे छोड़ना निर्दयता की ओर बढ़ना ही है। कम से कम जैन लोगों को आतिशबाजी से परहेज अवश्य करना चाहिए। जिससे महावीर के भक्त होने का संदेश साफ हो सके एवं उनकी अहिंसा का सम्मान सदैव सदैव के लिए विश्वव्यापी हो सके।

श्रीमति अनीता जैन (ललितपुर)

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर के अंक नवम्बर में बाल कहानी स्तंभ में डॉक्टर की सिगरेट कहानी का जब मैंने अध्ययन किया तब मैंने निश्चित किया कि दुनिया में ज्ञान/जानकारी सब व्यक्तियों को हो सकती है किन्तु बोध होना बहुत कठिन बात होती है औरों को समझाना बहुत सरल काम है किन्तु समझना बहुत कठिन काम है। ज्ञान से आचरण करना सबसे बड़ी बात है चरित्र से डरने वाले अपनी बात तो बहुत करते हैं परन्तु खुद के आचरण में नहीं ला पाते है यही एक बिडम्बना है। यह कहानी पढ़कर संस्कार सागर का हर एक पाठक अपने जीवन को बदलने का प्रयास अवश्य करेगा ऐसी अपेक्षा इस कहानी के लेखक की होगी।

श्रीमति रश्मि जैन (सागर)

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर के नवम्बर 2018 के अंक में प्रायः सभी लेख पठनीय हैं। संस्कार प्रवाह के अन्तर्गत आपका लेख समाज संगठन आज की जरूरत में आपने दो बातें बहुत महत्वपूर्ण कही हैं- जाति पंथ और क्षेत्र के आधार पर हम अपने साधर्मियों को तोड़ने का काम व खूबी कर रहे हैं किन्तु साधर्मियों को जोड़ने का काम अभी तक कोई नहीं कर पाया हैं। जितनी संख्या में धर्म के तीर्थ बन रहे हैं, क्या उसके एक अंश में भी साधर्मियों को जोड़ने का ईमानदार प्रयास हो रहा है ? आपके दोनों ही बिन्दु महत्वपूर्ण हैं, इन पर गम्भीरता से विचार होना चाहिए। यदि आप अपने आगामी अंको में इन मुद्दों से सम्बन्धित और लेख प्रकाशित करें तो अच्छा रहेगा। अन्य सभी पत्र-पत्रिकायें भी इन पर अपने विचार रखें। **डॉ. अनिल कुमार जैन (जयपुर)**

भक्ति तरंग

भरम-तिमिर हरन जिन धुनि

जय जय जग-भरम- तिमिर, हरन जिन धुनि ।। टेक ।।
या बिन समुझे, अजौ न, सौज निज मुनि ।
यह लखि हम निजपर अविवेकता लुनी ।।1।। जय जय.।।
जाको गनराज अंग, पूर्वमय चुनी ।
सोई कही है कुन्दकुन्द, प्रमुख बहुमुनी ।।2।। जय जय.।।
जे चर जड़ भये पीय, मोह बारूनी ।
तत्व पाय चेते जिन, थिर सुचित सुनी ।।3।। जय जय ।।
कर्ममल परवारनेहि, विमल सुरधुनी ।
तज बिलंव अब करो, दौल उर पुनी ।।4।। जय.जय ।।

जगत में भ्रमरूपी अंधकार को हरने वाली, जिनेन्द्र के मुख से निकली दिव्यध्वनि की जय-जय हो।

जिसको समझे बिना अब तक, मुनियों को भी अपनी सामर्थ्य-शक्ति का, स्वरूप का ज्ञान न हो सका। इसे समझकर अब स्व-पर के भेदज्ञान बिना हुआ हमारा अविवेक नष्ट होने लगा है।

गणधरदेव ने जिसकी रचना अंग और पूर्व में की जिसे कुन्द कुन्द आदि प्रमुख मुनियों ने अपने मुख से कही है उस दिव्यध्वनि की जय हो।

मोहरूपी वारूणी (मदिरा) पीकर जो चेतन जड़रूप हो रहे थे वे इस तत्व को दिव्यध्वनि को पाकर सचेत हो गए और स्थिर चित होकर सुनने लगे उस दिव्यध्वनि की जय हो।

कर्ममल को धोने के लिए है यह विमल दिव्यध्वनि खिरी है। दौलतराय कहते हैं कि अब बिलम्ब छोड़कर इसे हृदय में धारण करो।

संस्कार प्रवाह

अहिंसा से टाला जा सकता है पर्यावरण का खतरा

खतरे में अहिंसा और पर्यावरण-

अहिंसा और पर्यावरण का बहुत गहरा संबंध है। दोनों एक दूसरे के बिना अधूरे हैं। बिडम्बना यह है कि अहिंसा और पर्यावरण के लिए खाद पानी देने वाले बहुत कम लोग हैं सुप्रीम कोर्ट इस मामले में सदैव अपनी सजगता दिखाता रहता है लेकिन जन-जागृति का अभाव होने से वृक्षों का कटाव, भूमि का उत्खनन, नदियों में गन्दगी का फैलाव तथा ध्वनि प्रदूषण फैलाने वाले डी.जे. और आतिशबाजी इन सब को रोकने के लिये सुप्रीमकोर्ट के अहम फैसले आते रहते हैं।

जल जंगल और जमीन का संतुलन बनाने के लिए केन्द्र में पर्यावरण मंत्रालय है और राज्यों में पर्यावरण विभाग भी बने हुए हैं अनेक नीतियाँ बनी है और पर्यावरण की सुरक्षा करने के लिए नियंत्रक संस्थाए भी हैं किन्तु ये सभी व्यवस्थाऐं तब धाराशाही होते हुए नजर आती हैं जब अदालतें हमें चेताती हैं और हस्ताक्षेप करके पर्यावरण बचाने के लिए कदम उठाती हैं सच यह है कि यह कदम प्रशासन के द्वारा उठाना चाहिए। किन्तु प्रशासनिक व्यवस्था की कमियां या खामियां स्पष्ट नजर आती हैं।

अहिंसा का सम्मान करना यदि जनमानस सीख जाए तो पर्यावरण की सुरक्षा स्वतः ही संभव हो जायेगी। मात्र कानून से पर्यावरण कि सुरक्षा कि बात सोचना अपनी जिम्मेदारी से दूर हटना है। जिस तरह से स्वच्छ भारत अभियान बखूबी आगे बढ़ रहा है तो फिर पर्यावरण सुरक्षा जो जीवन मरण का प्रश्न हैं उसे जन आन्दोलन क्यों नही बनाया जा रहा है ? जल वृक्ष और जमीन तीनों को जैन धर्म ने जीव आत्मा के रूप में स्वीकार किया है। सर जगदीशचन्द्र बसु ने अपने वैज्ञानिक शोध के माध्यम से इन्हें जीव सिद्ध किया है तथा इसे प्राणवान माना है जल और जमीन को प्राणवान सिद्ध करने के लिए वैज्ञानिक शोधरत हैं। शीघ्र ही उनके अनुसंधान प्रतिवेदन हम सबके सामने आने वाले हैं । वृक्षों की कटाई, जमीन की खुदाई, जल में गंदगी या जल का अपव्यय अथवा जल सरंक्षण के प्रति उदासीनता ये सभी समस्यायें मानव के अंदर पलती अनन्त लालसाओं का परिणाम हैं अथवा मानवीय विलासिता और व्यसन के चलते पर्यावरण पर खतारा बढ़ता चला जा रहा है कार्बनडाई आक्साईड वाहनों का धुआं, फैक्ट्रियों का धुआ वायु को प्रदुषित कर रहा है जिससे जनजीवन का भविष्य खतरे में पड़ता जा रहा है।

दीपावली के पूर्व सुप्रीम कोर्ट ने 10 बजे के बाद पटाखा छोड़ने पर प्रतिबंध लगाया एवं ग्रीन पटाखें छोड़ने का प्रावधान किया था किन्तु कुछ बाहुबली राजनेताओं ने तथा दीपावलीा मनाने में उत्साहित लोगों ने सुप्रीम कोर्ट के आदेशों की जब अवहेलना की तब प्रशासनिक अधिकारी चूहा बिल्ली का खेल खेलते नजर आये। पर्यावरण की सुरक्षा एवं जन स्वास्थ्य पर आतिशबाजी सबसे बड़ा खतरा पैदा करती है तथा अर्थ अपव्यय का मुख्य कारण आतिशबाजी ही होती है। मात्र क्षणिक मनोरंजन के लिए पर्यावरण और अहिंसा पर खतरा पैदा करना किसी अच्छे नागरिक का काम नहीं हो सकता है यदि भारत का प्रत्येक नागरिक अहिंसा को अपनाले तो पर्यावरण का खतरा अपने आप दूर हो जायेगा।

भारतीय धर्मों में जैन धर्म मान्य ''तप'' का वैशिष्ट्य

❊ प्रो. प्रेम सुमन जैन (उदयपुर) ❊

जैन धर्म के सम्बन्ध में उपलब्ध परम्परा और विभिन्न साक्ष्यों से यह स्पष्ट होता है कि जैन धर्म का प्रारम्भ किसी व्यक्ति विशेष या स्थान विशेष से नहीं हुआ है, अतः यह स्वाभाविक है कि जैन धर्म की स्थापना का सम्बन्ध उस काल विशेष से जुड़ता है जब से किसी पुरुषार्थी योगी ने आत्मा-स्वभाव को जानने के लिए साधना की होगी। आत्मविजय करने वाले राग-द्वेष से रहित जितेन्द्रिय व्यक्ति को **''जिन''** कहा गया है। ऐसे किसी जिन के द्वारा सर्वप्रथम दिये गये आत्मसाधना और सदाचार के मार्ग अथवा जीवन-पद्धति को ही जैनधर्म संज्ञा मिली होगी। ऐसा आत्मस्वभाव को प्रकट करने वाला धर्म जैनधर्म के रूप में आज विश्वव्यापी हुआ है। प्राचीन समय में भले ही उसके विभिन्न नाम प्रचलित रहे होंगे।

जैन धर्मः आत्म धर्म - जैन धर्म के साथ जुड़े हुए धर्म शब्द के स्वरूप पर भी यदि चिन्तन किया जाय तो यह शब्द भी जाति, व्यक्ति, स्थान आदि से परे है । प्राचीन से प्राचीन काल ने भी स्वतंत्र रहने और आनन्दपूर्वक जीवन व्यतीत करने की नैसर्गिक भावना रही होगी । स्वधीनता और सुख की खोज ने ही सदाचार रूपी धर्म को जन्म दिया है। यह धर्म क्रमशः मनुष्य की जीवन-पद्धति बनता चला गया और सुख तथा आनन्द के दायरे की बढ़ते चले गये उसी अनुपात में धर्म की परिभाषा भी विकसित होती रही । जीवन के आस-पास के पदार्थों के स्वभाव को जानने के साथ-साथ साधक व्यक्ति ने आत्मा के **''स्वभाव''** को जानने में अधिक सुख का अनुभव किया और आत्मा के चरम विकास परमतत्व के प्रति उसकी आस्था बढ़ी, तब धर्म का अर्थ पदार्थ के **''स्वभाव को जानना और परमतत्व में विश्वास करना हो गया''** । व्यक्ति आत्मा के स्वभाव को जानने से अन्य प्राणियों की आत्मा में भी अपने जैसी सुख-दुख की अनुभूति से परिचित हुआ। **तब उसने ''समता'' को धर्म का अनिवार्य अंग माना होगा। इसी समता की रक्षा हेतु अहिंसा और अन्य अन्य नैतिक आचरण अस्तित्व में आये ।** मनुष्य की आत्मा के अनेक गुण भी क्षमा, संतोष, कोमलता आदि धर्माचरण से प्रकट हुए। इन सब अनुभवों को धर्म की परिधि में विचारवान साधकों ने संजोया है तभी यह कहा जा सका कि जो लोक को धारण करता है वह धर्म है अथवा वस्तु का स्वभाव धर्म है, इत्यादि दश भाव है, रत्नत्रय का पालन करना धर्म है तथा प्राणियों का सरंक्षण करना धर्म है।

धम्मो वत्थु सहावो, खमादिभावो दसविहो धम्मो।
रयणत्तयं च धम्मो जीवाणं रक्खणं धम्मो॥

धर्म की ये सभी विशेषताएं जैन धर्म में निहित हैं। इन विशेषताओं को व्यक्त करने के लिए जैन धर्म के इतिहास में अनेक शब्दों का प्रयोग हुआ है। उनको सामूहिक रूप से श्रमण संस्कृति के रूप में जाना जाता है । श्रमण संस्कृति के मुनियों ने शास्वत सुख की खोज में योग और ध्यान को विशेष महत्व दिया, और इसलिए उनके आचरण भक्ति की अपेक्षा श्रम से अधिक जुड़ते चले गये।

महाव्रतों की साधना श्रमण धर्म- अहिंसा की पूर्णता की साधना के लिये श्रावक क्रमशः साधु जीवन में प्रवेश करता है। इस तरह वह गुणस्थान क्रम में आगे बढ़ता है।

साधु जीवन महाव्रतों की साधना है। अहिंसा आदि व्रतों का सूक्ष्मता से पालन करना महाव्रतों को धारण करना है। इसमें अहिंसा की पूर्णता, ब्रह्मचर्य की अखंड़ता, सत्य तथा सामान्य उपयोग की भी कोई वस्तु बिना पूछे ने लेने रूप अचौर्य का पालन करता है । संयमपूर्वक पुस्तक आदि वस्तुओं को उठाना और रखना, संयमपूर्वक चलना, संयमपूर्वक हित, मित और प्रिय वचन बोलना, संयमपूर्वक आहार लेना तथा संयमपूर्वक दैनिक क्रियाओं को करना पंच समिति का पालन है । मन,वचन और काया की तीन वृत्तियों का संयम गुप्ति का पालन है।

मुनि पाँच महाव्रतों, पाँच समितियों और तीन गुप्तियों का पालन करता हुआ अन्तरंग एवं बाह्य तपों की भी साधना करता है। इन तपों के द्वारा मुनि निद्रा को जीतता है, ध्यान को दृढ़ करता है। शरीर के ममत्व को त्यागता है, सुख-दुःख में समभावी होता है, स्वाध्याय को बढ़ाता है तथा इन्द्रियों के विषयों के प्रति अनासक्त होता है। तपों के द्वारा विनीत होता हुआ दोषों का परिमार्जन करता है। ये तप मुनि को ध्यान और स्वाध्याय में अप्रमादी बनाते हैं।

ध्यान और स्वाध्यायः तप के आधार स्तम्भ - महावीर ने कहा कि ध्यान के बिना जो साधु कर्मक्षय की इच्छा करता है वह उसी मनुष्य के समान है जो बिना पैर का होने पर भी मेरू पर्वत के शिखर पर चढ़ने की इच्छा करता है । जिस प्रकार पुरुषार्थहीन व्यक्ति इच्छित वस्तु को नहीं पा सकता, उसी प्रकार ध्यानहीन साधक आत्मस्वरूप का अनुभव नहीं कर सकता । अतः मुनि समस्त विकल्पों को छोड़कर ध्यान द्वारा आत्मस्वरूप में मन को स्थिर करे, ऐसा महावीर ने कहा है। निर्विघ्न ध्यान में गति स्वाध्याय द्वारा होती है। आत्म शुद्धि की प्रेरणा देने वाले ग्रन्थों का पठन-पाठन करना स्वाध्याय है। स्वाध्याय से बुद्धि में प्रखरता आती है, नैतिक और आध्यात्मिक प्रयत्नों में बल मिलता है, वैराग्य उत्पन्न होता है, तप करने में उत्साह बढ़ता है और साधना के दोषों को दूर करने की प्रेरणा मिलती है। वास्तव में ध्यान और स्वाध्या साधु जीवन की धुरी हैं। इस प्रकार आत्म-साधना के पथ पर चल कर मुनि आत्मानुभव की एक ऐसी ऊँचाई पर स्थित हो जाते हैं जहाँ वे सुख-दुःख, निन्दा-प्रशंसा, शत्रु-मित्र आदि द्वन्दों से प्रभावित नहीं होते हैं । वे एक ऐसे सुख का अनुभव करते हैं जो अनन्त, अपूर्व, आत्मोत्पन्न, अतीन्द्रिय, अनुपम और अटूट होता है।

श्रावकधर्म की अंतिम श्रेणी से मुनिधर्म प्रारम्भ होता है, जिसमें आत्मबोध का पूर्ण विस्फोट होता है। आत्मा एवं शरीर की भिन्नता का स्पष्ट अनुभव तथा निर्मल ज्ञान की प्राप्ति मुनिधर्म के लिए आवश्यक है। इस अवस्था में मुनि के आचरण से मूलभूत पांचों व्रतों की पूर्णता का बोध होता है। वह इतना अपरिग्रही एवं निरहंकारी हो जाता है कि आत्मकल्याण के मार्ग में नग्न विचरण कर सकता है। उसका दिगम्बरत्व इस बात का साक्षी होता है कि इस व्यक्ति ने अपनी सभी आवयकताएं जगत् पर छोड़ दी हैं। सुरक्षा के प्रति यह पूर्ण अभय है इसके द्वारा साधे जाने व्रत महाव्रत कहलाते हैं क्योंकि वह उनकी पूर्णता के साथ उन्हें पालन करता है । उसकी अहिंसा प्राणिमात्र तक विकसित हो जाती है । वह जगत् के सत्य भेदविज्ञान को पहिचान लेता है । उसकी मौलिकता उसके व्यक्तित्व से झलकती है। उसकी समस्त शक्तियां आत्मध्यान को निर्मल करती हैं । तथा वह अपनी आत्मा के

अतिरिक्त और किसी का स्वामी नहीं होता है। मुनि के इस स्वरूप को विकसित करने के लिए तथा उसकी सुरक्षा के लिए कुछ अन्य नियम भी हैं , जिनका महावीर के धर्म में विधान है। वह पांच समितियों का पालन करता है। तीन गुप्तियों से रक्षित होता है तथा बारह अनुप्रेक्षाओं में अपने चित्त का शोधन करता है। प्रतिदिन सामायिक करते हैं, तीर्थंकरों की स्तुति करते हैं, उन्हें नमस्कार करते हैं, प्रमाद से लगे हुए दोषों का शोधन करते हैं, भविष्य में लग सकने वाले दोषों से बचने के लिए अयोग्य वस्तुओं का मन,वचन और काय से त्याग करते हैं और लगे हुए दोषों को शोधन करने के लिए अथवा तप की वृद्धि के लिए अथवा कर्मों की निर्जरा के लिए कायोत्सर्ग करते हैं। **खड़े होकर, दोनों भुजाओं को नीचे लटका कर, पैर के दोनों पंजों को सीध में रख बीच में एक दूसरे से चार अंगुल का अन्तर रखकर साधु के निश्चय आत्मध्यान में लीन होने को कायोत्सर्ग कहते हैं।**

जैनाचार्यों ने श्रमणाचार के सम्बन्ध में अपने ग्रन्थों में यत्र-तत्र जो भी उल्लेख किया है, वह आगम और आगम के व्याख्या साहित्य के आलोक में ही हुआ है। आचार्य उमास्वाति ने तत्वार्थसूत्र में तथा प्रशमरति प्रकरण में, आचार्य हरिभद्र ने पंचवत्थुग, सम्यक्तसप्तति, पंचासक, धर्मबिन्दु में श्रमणाचार का निरूपण किया है। तत्वार्थसूत्र के व्याख्या साहित्य में सभी लेखकों ने श्रमणाचार के सम्बन्ध में अत्यधिक विस्तार से चर्चाएँ की हैं। **जैन आचार सिद्धान्त और स्वरूप** नामक पुस्तक में श्री देवेन्द्र मुनि शास्त्री ने श्वेताम्बर परम्परा की दृष्टि से श्रमणाचार का विस्तार से विवेचन किया है।

तपः बाह्य और आभ्यन्तर - विषयों से मन को दूर करने के हेतु एवं राग-द्वेष पर विजय प्राप्त करने हेतु जिन-जिन उपायों द्वारा शरीर, इन्द्रिय और मन को तपाया जाता है, अर्थात् इन पर विजय प्राप्त की जाती है वे सभी उपाय तप हैं। तप के दो भेद हैं- **1. बाह्य और 2. अभ्यान्तर।** बाह्य द्रव्य की अपेक्षा होने के कारण जो दूसरों को दिखाई पड़ते हैं, वे बाह्यतप हैं। बाह्यतप आभ्यन्तर तप की पुष्टि में कारण हैं। जिन तपों में मानसिक क्रियाओं की प्रधानता हो, जो अन्य को दिखलाई न पड़ें वो आभयन्तर तप हैं।

अनशन, अवमोदर्य, वृत्तिपरिसंख्यान, रसपरित्याग, विविक्त शैयासन और कायक्लेश-ये छह बाह्य तप हैं।

अनशन-संयम की पुष्टि, राग का उच्छेद, कर्मनाश और ध्यानसिद्धि के लिये भोजन का त्याग करना अनशन तप है। इसमें ख्याति पूजा आदि फल प्राप्ति की आकांक्षा नहीं रहती।

अवमौदर्य- संयम को जागृत रखने, दोषों के प्रशम करने, सन्तोष एवं स्वाध्याय को सिद्ध करने के लिए भूख से कम खाना अवमौदर्य तप है। मुनि का उत्कृष्ट ग्रास बत्तीस ग्रास हैं, अतः इससे अल्प आहार करना अवमौदर्य है।

वृत्तिपरिसंख्या-आहार के लिये जाते-समय घर, गली आदि का नियम ग्रहण करना वृत्तिपरिसंख्यान तप हैं यह चित्तवृत्ति पर विजय प्राप्त करने और आसक्ति को घटाने के लिये धारण किया जाता है।

रसपरित्याग- इन्द्रियों और निन्द्रा पर विजय प्राप्तार्थ घी, दुग्ध, दधि, तैल, मीठा और नमक का यथायोग्य त्याग करना रसपरित्याग तप है।

विविक्तशैयासन-ब्रह्मचर्य, स्वाध्याय, ध्यान आदि की सिद्धि हेतु एकान्त स्थान में शयन करना तथा आसन लगाना विविक्त

शैयासन तप है।

कायक्लेश- कष्ट सहन करने के अभ्यास के हेतु विलास भावना को दूर करने तथा धर्म की प्रभावना के लिए ग्रीष्मऋतु में पर्वतशिला पर, शीत ऋतु में खुले मैदान में और वर्षा ऋतु में वृक्ष के नीचे ध्यान लगाना कायक्लेश है।

आभ्यन्तर तप-आभ्यन्तर तप के प्रायश्चित्त विनय, वैय्यावृत्य, स्वाध्याय, व्युत्सर्ग और ध्यान-ये छह भेद हैं।

1. प्रायश्चित- प्रमाद से लगे हुए दोषों को दूर करना प्रायश्चित तप है।

2. विनय- पूज्य पुरुषों के प्रति आदभाव प्रकट विनयतप है।

3. वैय्यावृत्य- शरीर आदि के द्वारा सेवा-शुश्रुषा करना वैय्यावृत्य है।

4. स्वाध्याय- आलस्य को त्यागकर ज्ञान का अध्ययन करना स्वाध्या है। स्वाध्याय के पाँच भेद हैं

1. वाचना- ग्रन्थ, अर्थ तथा दोनों का निर्दोष रीति से पाठ करना।
2. पृच्छना- शंका को दूर करने या विशेष निर्णय की पृच्छा करना।
3. अनुप्रेक्षा- अधीत शास्त्र का अभ्यास करना, पुनः पुनः विचार करना।
4. आम्नाय- जो पाठ पढ़ा है उसका शुद्धतापूर्वक पुनः पुनः उच्चारण करना।
5. धर्मोपदेश- धर्मकथा या धर्मचर्चा करना।

5. व्युत्सर्ग- शरीर आदि के अंहकार और ममकार आदि का त्याग करना व्युत्सर्ग है। इसके दो भेद हैं -1. बाह्यव्युत्सर्ग और 2. आभ्यन्तर व्युत्सर्ग। भवन, खेत, धन, धान्य आदि पृथकभूत पदार्थों के प्रति ममता का त्याग करना बाह्यव्युत्सर्ग और आत्मा के क्रोधादि परिणाम का त्याग करना आभ्यन्तर व्युत्सर्ग है।

6. ध्यान- चंचल मन को एकाग्र करने के लिए किसी एक विषय में स्थित करना ध्यान है। उत्तम ध्यान तो उत्तम संहनन के धारक मनुष्य को प्राप्त होता है। यह अपनी चित्तवृत्ति को सभी ओर से रोककर आत्मस्वरूप में अवस्थित करता है। जब आत्मा समय शुभाशुभ संकल्प-विकल्पों को छोड़, निर्विकल्प समाधि में लीन हो जाती है तो समस्त कर्मों की श्रृंखला टूट जाती है। ध्यान का अर्थ भी यही है कि समस्त चिन्ताओं, संकल्प विकल्पों को रोककर मन को स्थिर करना, आत्मस्वरूप का चिन्तन करते हुए पुदगल द्रव्य से आत्मा को भिन्न विचारना और आत्मस्वरूप में स्थिर होना।

अहिंसा महाव्रत से ही विकसित होने वाले सत्य, अचौर्य, ब्रम्हचर्य, और अपरिग्रह इन पांचों महाव्रतों का सम्यंग रूप से पालन करना श्रमण-जीवन के लिए अनिवार्य है। रात्रिभोजन का परित्याग भी अहिंसा महाव्रत के पालक श्रमण के लिए आवश्यक है। और वह महाव्रत की भाँति ही एक व्रत के रूप में श्रमण-जीवन का आवश्यक अंग बन गया।

ध्यान एवं योग- महावीर ने तपों की व्याख्या करते हुए दस तपों के बाद ध्यान तप का क्रम रखा है। अतः जब व्यक्ति इतनें तपों में जीने लगे, उसकी आत्मा इतनी जानी-पहचानी हो जाए तब उसे ध्यान करना कठिन नहीं होगा। किन्तु ध्यान का समझना और समझाना बड़ा कठिन है। इसलिए महावीर पहले गत ध्यानों की व्याख्या करते हैं जिससे साधक उन्हीं में फंसकर न रह जाय। असली ध्यान तक उसे पहुंचना हैं।

शास्त्रों में ध्यान के चार भेद कहे गये हैं- आर्त, रौद्र, धर्म और शुक्ल ध्यान। अनिष्ठ के संयोग, इष्ट के वियोग दुःख की वेदना तथा भोगों की अभिलाषा से जो संक्लेष भाव होते

हैं उन्हें बदलने के लिए जो चिंतन किया जाता है वह सब आर्त ध्यान है। अनिष्ट कार्यों की प्राप्ति तथा जीवों के घात-प्रतिघात से सम्बन्धित ध्यान को रौद्र ध्यान कहते हैं। इनसे व्यक्ति तो दुःखी होता ही है, उनके प्रभाव से समाज भी अशांत होता है। अतः महावीर ने इन ध्यानों को अशुभ और त्याज्य कहा है।

महावीर ने ध्यान के माध्यम से स्व एवम् पर की सुन्दर व्याख्या की है। उनका कहना है कि जब तक हम अपने से बाहर किसी पर ध्यान लगाते रहेंगे। हम ध्यान के वास्तविक अर्थ को नहीं पा सकेंगे। क्योंकि बाहर किसी भी वस्तु पर चित्त को लगाना ध्यान नहीं, प्रार्थना है। इसीलिए जिन्होंने अपने से भिन्न परमात्मा को माना वे ध्यान में नही जा सके। उन्होंने प्रार्थना को विकसित किया। ध्यान और प्रार्थना दो अलग-अलग बातें हैं। **ध्यान में कोई निवेदन नहीं है, स्व की पहिचान है, जब कि प्रार्थना में दूसरे की सहायता की मांग है।** अतः ध्यान की प्राप्ति के लिए ही महावीर ने ईश्वर के अस्तित्व की चिंता नहीं है।

ध्यान के स्वरूप के सम्बन्ध में तथा उसकी प्रक्रिया के विषय में महावीर बहुत स्पष्ट हैं। उनका कहना है कि ध्यान का अर्थ है- जो मैं हूँ जैसा मैं हूँ उसी में ठहर जाना। ध्यान शब्द से यह सोचना पड़ता है कि किसका ध्यान ? अतः महावीर ने ध्यान शब्द का बहुत कम प्रयोग किया है। इसके लिए उन्होंने दो महत्वूपर्ण शब्द चुने हैं-प्रतिक्रमण और सामायिक। प्रतिक्रमण का अर्थ है- अपनी चेतना को बाह्य जगत् से वापिस बुला लेना और सामायिक का अर्थ है- उस लौटी हुई चेतना में रम जाना। महावीर ने इस स्थिति के लिए बहुत सुन्दर शब्द का प्रयोग किया है- आत्मरमण। आत्मा में रमना ही महावीर का ध्यान है।

जगत् के अन्य विज्ञानों से भी यह प्रमाणित होता है कि चेतना की गति समय में होती है। अतः महावीर ने आत्मा को समय कहा और आत्मा की गति में ठहर जाना सामायिक कहलाया। महावीर ने इसे स्पष्टतया समझाते हुए कहा है कि शरीर की समस्त गतियों का ठहर जाना आसान है और चित्त की सारी गति का ठहर जाना ध्यान। चेतना की गति में ठहर जाने की प्रक्रिया क्या है। इसे महावीर ने धर्मध्यान और शुक्लध्यान द्वारा समझाया है। ये ध्यान की उत्कृष्ट अवस्थाएँ हैं, जिनकी फलश्रुति आत्म-साक्षात्कार होती है।

जैन साहित्य में ध्यान के विभिन्न पक्षों का वर्णन प्रायः सम्यक्चारित्र के वर्णन के प्रसंग में आता है। जैनदर्शन में संक्षेप रूप में संसार-बंधन का कारण आस्रव और बन्ध को माना गया है तथा संसार से मुक्त के लिए संवर और निर्जरा को प्रमुखता दी गयी है। कर्मों की निर्जरा में सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान एवं सम्यक्चारित्र को आधार माना गया है। सम्यक्चारित्र में तप की प्रधानता है। तप के आभ्यन्तर छह भेदों में एक भेद ध्यान तप भी है। इसी ध्यान का वर्णन जैनाचार्यों ने अपने ग्रन्थों में किया है। ध्यान पर स्वतन्त्ररूप से भी ग्रन्थ लिखे गये हैं। स्तुतः जैन दर्शन में ध्यान आत्मा के ज्ञान गुण को प्रकट करने वाला है। अतः ध्यान और ज्ञान में अटूट सम्बन्ध है। मध्ययुग के 11वीं शताब्दी के जैनाचार्य शुभचन्द्र ने अपने ध्यानशास्त्र को ज्ञानशास्त्र का ग्रन्थ मानकर इसे ज्ञानार्णव नाम प्रदान किया है। विषय की दृष्टि से वास्तव में यह ग्रन्थ ध्यान का समुद्र है। ध्यान के सभी पक्षों का इसमें विस्तार से वर्णन है। इसीलिए आचार्य ने इसे ध्यानशास्त्र भी कहा है।

इति जिनपतिसूत्रात्सारमुदधृत्य किंचित्।
स्वमतिविभवयोग्यं ध्यानशास्त्रं प्रणीतम्॥

आचार्य शुभचन्द्र नेअपने इस ग्रन्थ को

योगप्रदीप भी कहा है। उनकी दृष्टि से ध्यान एवं योग शब्द समान अर्थ को व्यक्त करते हैं। यद्यपि जैन परम्परा में इन दोनों शब्दों का अपना अलग इतिहास भी है। आचार्य शुभचन्द्र एवं उसके ज्ञानार्णव के सम्बन्ध में इस ग्रन्थ के सम्पादक पं. कैलाशचन्द्र शास्त्री एवं अनुवादक पं. बालचन्द्र शास्त्री ने अपनी प्रस्तावनाओं में पर्याप्त प्रकाश डाला है। जैन योगशास्त्र की परम्परा में ज्ञानार्णव का विशेष स्थान है। ज्ञानार्णव में पूर्ववर्ती ध्यानविषयक सामग्री का सार प्रस्तुत किया गया है इस कारण यह ग्रन्थ परवर्ती जैनाचार्यों के लिए आधार-ग्रन्थ बन गया है। आचार्य हेमचन्द्र के योगशास्त्र के साथ इसका घनिष्ट सम्बन्ध है।

योगशास्त्र में ध्यान के स्वरूप आदि पर चिंतन करते हुए उससे सम्बन्धित अन्य बातों पर भी विचार किया जाता है। शुभचन्द्र ने ध्याता, ध्यान, ध्येय और ध्यान का फल, इन चारों पर विस्तार से चिंतन किया है। शुभचन्द्र लौकिक फल के लिए ध्यान का उपयोग करना ठीक नहीं समझते। अतः वे आध्यात्मिक जागृति के लिए ही शुभध्यान का महत्व प्रतिपादित करते हैं। वैसे ही आत्माहितैषी ध्याता को वे प्रमुखता देते हैं, लौकिक योगी को नहीं। वे मानते हैं कि जो योगी व साधु ध्यान को जीविका का साधन बनाते हैं, उन्हें लज्जा आनी चाहिए। उनका ऐसा ध्यान कभी सार्थक नहीं हो सकता। यह ध्यान का दुरुपयोग है। ध्यान को, साधुवेष को आजीविका का साधन बनाना माता को वेश्या बनाने जैसो है। यथा

यतित्वं जीवनोपयं कुर्वन्तः किं न लज्जिताः।
मातुः पणमिवालम्ब्य यथा केचित्तघृणाः
॥4-54

ज्ञानार्णव के अनुसार सच्चा ध्याता वही हो सकता है, जिसने वास्तविक संयम को प्राप्त किया है। निर्मल ज्ञान की साधना से जिनका अन्तः करण पवित्र है, जगत् के सभी जीवों के प्रति जिनके मन में दया एवं संरक्षण का भाव है, जो वायु की तरह परिग्रह के मोह से रहित हैं, वे ही योगी सच्चे ध्याता हैं, ध्यान के अधिकारी हैं। जिस योगी के ध्यानस्थ होने पर प्राणवायु का संचार रूक जाता है, शरीर नियमित हो जाता है, इन्द्रियों की प्राप्ति रूक जाती है, नेत्रों का स्पन्दन नष्ट हो जाता हैद्व अन्तः करण विकल्पों से रहित हो जाता है, मोहरूपी अन्धकार नष्ट हो जाता है तथा विश्व को प्रकाशित करने वाला तेज प्रकट हो जाता है, वह योगी धन्य है। वही ध्यान के श्रेष्ठ आनन्द को अनुभव कर सकता है।

त्रिविध साधना- जैन दर्शन मोक्ष की प्राप्ति के लिए त्रिविध साधना मार्ग प्रस्तुत करता है। तत्त्वार्थसूत्र के प्रारम्भ में ही कहा है सम्यग्ज्ञान,सम्यग्दर्शन, सम्यक्चारित्र और सम्यक्तप ऐसे चतुर्विध मोक्ष मार्ग का भी विधान है। जैन आचार्यों ने तप का अन्तर्भाव चारित्र में किया है और इसलिए परवर्ती साहित्य में उसी त्रिविध साधना मार्ग का विधान मिलता है। उत्तराध्ययन में भी ज्ञान, दर्शन और चारित्र के रूप में त्रिविध साधना पथ का विधान है। आचार्य कुन्दकुन्द ने समयसार एवं नियमसार में, आचार्य अमृतचन्द्र ने पुरुषार्थ सिद्धपुपाय में आचार्य हेमचन्द्र ने योगशास्त्र में त्रिविध साधना पथ का विधान किया है।

बौद्ध दर्शन में भी त्रिविध साधना मार्ग का विधान हैं। प्राचीन बौद्ध ग्रंथों में इसी का विधान अधिक है। वैसे बुद्ध ने अष्टांगमार्ग का भी प्रतिपादन किया है। लेकिन यह अष्टांगमार्ग का त्रिविध साधना मार्ग में ही अन्तर्भूत है। बौद्ध दर्शन में त्रिविध साधना मार्ग के रूप में शील, समाधि और प्रज्ञा का विधान है। कहीं कहीं समाधि और प्रज्ञा के स्थान पर वीर्य, श्रद्धा

और प्रज्ञान का भी विधान है। वस्तुतः वीर्य शील का और श्रद्धा समाधि की प्रतीक है। श्रद्धा और समाधि दोनों समान इसलिए हैं कि दोनों में चित्त विकल्प नहीं होते हैं। समाधि या श्रद्धा को सम्यक्दर्शन से और प्रज्ञा को सम्यक्-ज्ञान से तुलनीय माना जा सकता है। बौद्ध दर्शन का अष्टांगमार्ग सम्यक् -दृष्टि, सम्यक्- संकल्प, सम्यक् - वाणी, सम्यक् - कर्मान्त, सम्यक् - आजीव, सम्यक्- व्यायाम, सम्यक्- स्मृति, और सम्यक् समाधि है। इनमें सम्यक् वाचा, सम्यक् - कर्मान्त, और सम्यक् - आजीव इन तीनों का अन्तर्भाव शील में सम्यक् -व्यायाम, सम्यक् -स्मृति और सम्यक् - समाधि इन तीनों का अन्तर्भाव चित्त, श्रद्धा या समाधि में और सम्यक् - संकल्प और सम्यक् - दृष्टि इन दो का अन्तर्भाव प्रज्ञा में होता है। इस प्रकार बौद्ध दर्शन में भी मौलिक रूप से त्रिविध साधना मार्ग की प्ररूपित है।

बौद्धधर्म में सम्यग्दर्शन के ही समानान्तर में सम्मादिट्ठि को स्वीकार किया है। चतुरार्य सत्यों को समझना ही सम्मादिट्ठि है। उसके बिना मुक्ति-प्राप्ति सम्भव नहीं । भगवान् बुद्ध ने कहा था, भिक्षुओं ! जिस समय आर्यश्रावक दुराचरण को पहचान लेता है, दुराचरण के मूल कारण को जान लेता है, सदाचरण को पहचान लेता है, तब उसकी दृष्टि सम्यक् कहलाती है। सांसारिक दुःखों की प्रकृति को जानते हुए सत्कायदृष्टि, आत्मवाद आदि सिद्धान्तों से विरक्त होना इसका फल है। इसी से समभाव प्राप्त हो जाता है। सम्यक् दृष्टिवाले में अनुत्पन्न कुशल-धर्म उत्पन्न हो जाते हैं । उत्पन्न कुशल-धर्म वृद्धि को विलुपता को प्राप्त हो जाते हैं । इस प्रकार बुद्ध सम्यक् दृष्टि को नैतिक जीवन के लिए आवश्यक मानते हैं । उनकी दृष्टि में मिथ्या दृष्टिकोण संसार का किनारा है और सम्यक् - दृष्टिकोण निर्वाण का किनारा है। बौद्ध-परम्परा में सम्यग्दर्शन के सामानार्थी सम्यग्समाधि, श्रद्धा एवं चित्त शब्द मिलते हैं।

गौतम बुद्ध ने दुःखक्षय और शान्ति स्थापना के लिये अहिंसा की आवश्यकता पर बल दिया है। अपनी तपश्चर्या के सन्दर्भ में वे कहते हैं कि कोई छोटे जीव-जन्तु के प्राणों का हनन न हो जाये, इसके लिए मैं सावधान रहता था

सुखकामानि भूतानि यो दण्डेन विहिंसति। अत्तनो सुखमेसानो पेच्च सा न लभते सुखम्॥ धम्मपद, 10/2

इस प्रकार प्रायः सभी परम्पराओं में संयम और साधना के समय प्राणी रक्षा का ध्यान रखने की बात कही गयी है।

सन्दर्भ

1. जैन आचार सिद्धान्त और स्वरूप देवेन्द्र मुनि शास्त्री, 1982
2. जैन दर्शन और संस्कृति-युवाचार्य महाप्रज्ञ
3. जैनधर्म-पंडित कैलाशचन्द्र शास्त्री, मथुरा 1985
4. जैन, हीरालालः भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान, भोपाल 1962
5. आचारांगसूत्र, आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर
6. जैन धर्म की सांस्कृतिक विरासत- प्रो. प्रेम सुमन जैन, दिल्ली
7. जैन संस्कृति और पर्यावरण-संरक्षण- प्रो. प्रेम सुमन जैन, उदयपुर
8. जैन, सागरमल, जैन, बौद्ध और गीता का तुलनात्मक अध्ययन, जयपुर, 1982
9. सम्मादिटिठसुत्तन्त (मज्झिमनिकाय) 1/1/9
10. बुद्धवचन, पृष्ठ 21
11. अंगुत्तरनिकाय 1/17 2-वही 10/12

भारतीय संस्कृति को श्रमण परम्परा का योगदान

❊ ब्र. जिनेश मलैया (इन्दौर) ❊

विराट स्वरूप भारतीय संस्कृति सत्य और अहिंसा की पर्याय है भारतीय संस्कृति जीवन दर्शन के आयामों को स्थायी स्वरूप प्रदान करने के लिए हर युग में प्रयास रत रही है इस संस्कृति की शाखायें अनेक हैं उनमें इतिहास दर्शन साहित्य कला विज्ञान समाज धर्म राष्ट्र आर्थिक तत्व प्रमुखता से रहें है पर्व उत्सवों के आधार पर संस्कृति की अभिव्यक्ति होती है। वेशभूषा भाषा जीवन व्यवहार संस्कृति को स्पष्ट करने वाले तत्व हैं संस्कृति कोई भी हो वह बिना भावना के अपना विकास नहीं कर सकती है प्रेमकरूणा संवेदना और संवाद और साहित्य संगोष्ठियाँ भाषण अभिव्यक्ति पत्र व्यवहार यात्रायें संस्कृति का आदान प्रदान व प्रचार करती हैं।

जैन धर्म दर्शन कला बिना भारतीय संस्कृति अधूरी ही रहती है जैनधर्म के अनुसार जीवन यापन की दृष्टि कुछ अलग ही है। अच्छा मनुष्य बनने के लिए जैन धर्म अपनी आचार संहिता प्रस्तुत करता है जिसके अंतर्गत ग्रहस्थ भूमिका अणुव्रतों से प्रारंभ होती है ये अणुव्रत स्वतंत्रता सहिष्णुता, समानता की स्थापना करते हुए समाज को शोषण के शिकंजे से बाहर निकालते हैं तथा पर्यावरण की सुरक्षा करते हुए प्रदूषण से पृथ्वीं को मुक्त रखने के लिए अपनी अहम् भूमिका निर्वाहित करते हैं। अणुव्रतों के साथ गुणव्रत और शिखा व्रत प्राकृतिक ससांधनों के दुप्रयोग रोकने के लिए प्रहरी के समान खड़े हो जाते है। जैन दर्शन का आचार पक्ष मात्र सभ्य मानव नहीं बनाता है अपितु दया प्रेम त्याग की भावना से भरा हुआ आत्मकल्याणार्थी, परोपकारी सदाचारी मानव तैयार करता है श्रमणाचार श्रावकाचार के मार्ग पर ले जाकर श्रमण परम्परा ने विश्व को शिष्ट शांति दूत उपलब्ध करायें है।

श्रमण परम्परा का साहित्य भण्डार अनेक विधाओं में उपलब्ध है उनमें दर्शन, सिद्धान्त, काव्य, पुराण, गतिण, संगीत, भाषा-विज्ञान, मनोविज्ञान, इतिहास, कला, आयुर्वेद, तर्क-विद्या जैसी विधाओं में अनेक ग्रंथों का लेखन जैनाचार्यों ने किया है संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, गुजराती, मराठी, कन्नड़, तमिल, मलयालम, उड़िया, कश्मीरी, अर्धमागधी मागधी भाषा में जैन साहित्य रचकर जैन मनीषियों ने अपनी अनुपम प्रतिभा का परिचय दिया है।

भारतीय संस्कृति को दिशा निर्देश देने का कार्य प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव ने किया है। और उनसे पूर्व 14 कुलकरों ने नव-सृष्टि के प्रारम्भिक दिनों में जीने की इच्छा रखने वाले प्रजाजनों को परम पूज्य प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव ने असि, मसि, कृषि, शिक्षा, शिल्प, और वाणिज्य शिल्पकला शिक्षा का उपदेश देकर भारतीय संस्कृति की दिशा सुनिश्चित की थी एवं आदिनाथ भगवान के उपदेशों का महत्व भारतीय संस्कृति के लिए आज भी प्रासंगिक हैं।

जैन स्मारकों की कला यह बताती है कि जैनों का कला के प्रति समर्पण कितना विशिष्ट व अद्वितीय रहा है खजुराहो का आदिनाथ पार्श्वनाथ जिनालय एलोरा की गुफायें उदयगिरि खण्डगिरि की रानी और हाथी गुफायें सौन्दर्य उपासना की अद्वितीय उदाहरण हैं जैन तीर्थों का यदि मूल्यांकन किया जाये तो उनमें स्थापित मूर्तियों की कला अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

मानस्तंभ आदि श्रमण संस्कृति के श्रेष्ठतम उदाहरण हैं अनेक विध्वंसो के बाद भी जैन मूर्ति कला अपने प्रभाव को किसी भी रूप में कम नजर नहीं आती है मोहन जोदड़ो और हड़प्पा में मिली जैनमूर्ति कला का कुछ शीलों के माध्यम से दर्शन होता है तथा मौर्यकालीन कुशान कालीन

एवं गुप्त कालीन, कलचुरी और चंदेल बंशी राजाओं द्वारा निर्मित जैन मूर्तियाँ भारतीय संस्कृति के लिए विशिष्ट अवदान हैं तथा राष्ट्रकूट, पाण्डेय, पाल, चोल, चालुक्य, कदम्बर, होयसल, गंगवंशीय राजाओं ने जैनधर्म का अनुसरण करते हुए द्रविण आर्य संस्कृति की माला में श्रमण संस्कृति के प्रतिनिधित्व करने वाले साधु और श्रावकों ने अनेक मोती पिरोयें हैं।

शिक्षा संस्कृति की व्यापकता का मापदण्ड होता है जैनदर्शन की गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति एवं श्रमण संघ शिक्षा पद्धति ने दर्शन कला के माध्यम से अपनी अलग पहचान बनाई है जहाँ श्रमणों ने भारतीय शिक्षा पद्धति को षड्अंगनीय विकास को प्रभावित किया है व्याकरण काव्य कल्प आन्वीक्षी शिक्षा को बहुत प्रोत्साहन दिया है साथ ही अपनी शिक्षा में गणित जीवन विज्ञान पदार्थ विज्ञान के गंभीर चिंतन में अपना प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया है नाट्यकला में भी अनेक साहित्य लिखकर जैनाआचार्यों ने बहुआयामी बना है।

राष्ट्र समाज साहित्य कला दर्शन और समाज जैनसे संस्कृति के स्तंभों में जैनाचार्य नींव के पत्थर की भूमिका में दिखाई देते हैं।

अतः हम यह कह सकते हैं श्रमण परम्परा भारतीय संस्कृति का प्रमुख आधार स्तंभ है।

कविता

कैसी गरमी

आसमान की लाली है, गरम हवा दुख वाली है
अमुआ डाली फूक रही, वो कोयल तो काली है
उमस भरी ये साँझ है, कितनी साँझ है कितनी
मौसम है गर्मी है कितनी, रेत भरी आँधी चलती है
रह रह कर लू भी चलती, सारी दुनिया परेशा कितनी
गहरी साँस है गर्मी, कितनी कभी हवा रूक जाती है
मच्छर की सेना आती है , भिन्न-भिन्न करती जब
नींद अचानक खूल जाती, तब कहते है कैसा मौसम
कैसी गर्मी मिले कहाँ पर, ठन्डा पानी पशू पक्षी में
तेराई तेराई छाँव ना देती, कभी दिखाई धूप
अनल सी ऐ लगती है, काया तो हर दम जलती है
प्रभु तुम अब कृपा कर दो, इस गर्मी से मुक्ति दे दो

संयम स्वास्थ्य योग

जीरा
Cuminum Cyminum

पर्याय नाम-
हिन्दी - जीरा, सफेद जीरा, सादा जीरा
संस्कृत - जीरक, पाचक, अजा जी
गुजराती - जीरं, शकुन, जीरम्
बंगाली - जीरे
अंग्रेजी - क्यूमिन सीड़ Cumin Seed
लेटिन - क्यूमिन साइमिनम् Cuminum Cyminum

उत्पत्ति स्थान- जीरे की खेती भारत के उष्ण प्रदेशों में राजस्थान, गुजरात, सौराष्ट्र, कच्छ, पंजाब, उत्तरप्रदेश में होता है। इसका पौधा एक से तीन फुंट तक ऊँचा शाखाएं पतली होती है। यहाँ से यह सम्पूर्ण विश्व में निर्यात होता है।

उपयोगी द्रव्य- फल

गुणधर्म- उष्ण प्रदेशों में उत्पन्न होने से यह उष्ण वीर्य, कफशामक, वातशामक, पित्तवर्धक, दीपन, पाचन वातानुलोमन, ग्राही, कृमिघ्न, रक्त शोधक, स्तन्यजन्य एवं गर्माश्य शोधक है। स्त्रियों के लिए यह उत्तम टॉनिक है। सभी स्त्री रोगों में यह अनुपान विशेष के साथ प्रयोग करते हैं। यह शुक्र वर्धक है।

रासायनिक संगठन- इसमें एक उड़नशील तैल थाईमिन Thyment 3.5% से 5.2% तक होता है। यही इसके स्वाद एवं गंध का कारण है। इस तैल को कृत्रिम रूप से थाइमल Thymol (अजवाइन सत्) में परिवर्तित किया जा सकता है। यह एक उत्तम प्रतिदूषक Antiseptic एवं कृमिघ्न पदार्थ है। इसके अलावा 10% पन्टोसान Pentosan 6.5% प्रोटीन यौगिक होते हैं। इसमें जो एथेन्शियल प्रोटीन है यह रक्त की वृद्धि करते है। इसका जीभ पर सीधा असर होने से भोजन में रूचि बढ़ाकर जठराग्नि (पाचन शक्ति) को बढ़ाता है इसीलिए जीरा में दीपन पाचन गुण होने से रस एवं रक्त की वृद्धि होकर सप्त धातुओं का पोषण होता है।

औषधीय उपयोग-

1. स्तन्य दूध वर्धक- प्रसूता स्त्रियों को यदि दूध पर्याप्त न आ रहा हो तो 100 ग्राम जीरा पीसकर उसमें 100 ग्राम गुड़ एवं 25 ग्राम घी मिलाकर इसके 10 भाग कर छोटे छोटे 10 लड्डू बना लें। नित्य सुबह शाम 1-1 लड्डू सेवन कर गर्म दूध पियें। यह प्रयोग लगातार 2-3 मास तक करें।

2. जीरा का चूर्ण 2 से 10 ग्राम घी के साथ प्रसव के बाद प्रसूता स्त्री को देने से प्रसूति के बाद मोटापा नहीं होता है। एवं जच्चा बच्चा दोनों को ही पेट दर्द, गैस अपचन आदि नहीं होते है।

3. पांच लीटर जल में 20 ग्राम जीरा डालकर पानी उबालकर रखें। यह जल जब भी प्यास लगे तब प्रसूता को पीने को दें। इससे पाचन शक्ति बढ़ती है एवं वात विकार दूर होते हैं।

दक्षिण भारत में तो सामान्य व्यक्ति भी इस जल का सेवन करते हैं। उष्ण वीय होने से जीरा मेटावाल्जिम Metabolism बढ़ाता है इससे शरीर में केलोरी का ह्रास होता है एवं फेट नहीं

बनता है।

4. मासिक धर्म की अनियमितता एवं श्वेत प्रदर एवं रक्त प्रदर होने पर गर्माश्य या बीजाश्य की शिथिलता के कारण यदि रजः शुद्धि न होती हो तो जीरा महीन पीसकर घी एवं मिश्री के साथ 5 से 15 ग्राम तक की मात्रा में सुबह-शाम सेवन करें। यह प्रयोग भी लगातार 3-4 मास तक करें।

5. आंत में मल की रूकावट होने के कारण जो सड़ांध या दुर्गन्ध पैदा होती है। यह उसे दूर कर भोजन के पाचन में सहायक होता है। इसीलिए दही, तक्र (छाछ) रायता एवं दाल सब्जियों में इसका प्रक्षेप किया जाता है। इससे उदर में वायु प्रकोप, आध्यमान, एवं कोष्ठवद्धता नहीं होती है। पाचन शक्ति बढ़ाता है।

6. मूत्राघात, पूरामेह एवं अश्मरी में इसके चूर्ण को शक्कर या मिश्री के साथ देते हैं । इससे पेशाब साफ होती है एवं जलन दूर होती है। जीरा सौंफ एवं धनिया समभाग मिश्री मिलाकर भी सेवन कर सकते हैं। अम्लपित्त में भी लाभप्रद है।

7. अतिसार (दस्त) में जीराचूर्ण, दही या छाछ के साथ लेने से लाभ होता है। भोजन के बाद, भुना हुआ जीरा, कालीमिर्च सेंधानमक मिलाकर छाछ के साथ सेंवन करने से लाभ होता है। अर्श एवं ग्रहणी में भी यह लाभ दायक हैं।

8. ज्वर के शमन होने पर अग्निमांद्य एवं निर्मलता के निवारणार्थ जीराचूण 20 ग्राम 2 लीटर जल में उबालकर रख दें। रोगी को दिन में यही पानी पीने को दें इससे ज्वर की उष्णता का शमन होता है। मुख एवं ओंठो पर छाले फुसिंयाँ, संधिवेदना, वैचेनी आदि दूर होती है।

9. लवण भास्कर चूर्ण, हिग्वाष्टक चूर्ण, जीरकादि चूर्ण, जीरकादि गुटिका, जीर का गुटिका, जीरक खंड जीरकादि मोदक या पाक, जीरकारिष्ट आदि औषधिक में प्रमुख घटक के रूप में प्रयुक्त होता है।

पथरीधन चूर्ण

पथरी की अचूक दवा

सेवन विधि–

1) यह चूर्ण सुबह भोजन के बीच में लिया जायें।
2) पानी दिनभर अधिक मात्रा में लें, पेट खाली न हो।
3) प्रथम खुराक लेनेके बाद, दूसरी खुराक एक दिन छोड़कर ही ली जाये।

नोट– यह औषधि निःशुल्क दी जाती है। ठीक होने पर औषधि निर्माण हेतु सहयोग कर सकतेहैं ।

प्राप्ति स्थान –**ब्र. जिनेश मलैया,संस्कार सागर**
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मन्दिर, बॉम्बेहास्पिटल के पास, इन्दौर (म.प्र.)
फोनः 0731-4003506 मो.:8989505108, 6232967108

दवा देने के विभिन्न स्थानों पर केन्द्र है आप भी अपने यहां केन्द्र चाहते हैं तो सम्पर्क करें

आचार्य विद्यासागर जी महाराज का जीवन जन जन के मन का प्रेरणा स्त्रोत बन गया

❊ उमेश जैन (नैकोरा) ललितपुर ❊

आचार्य विद्यासागर जी को देश-दुनिया के लोग जानते हैं उनके संघर्ष और तप से पूरी दुनिया प्रभावित है भारत-भू पर अनेक महापुरुष और संत कवि जन्म ले चुके हैं उनकी साधना और कथनी-करनी की एकता ने सारे विश्व को ज्ञान रूपी आलोक से आलोकित किया है इन अपने जीवनानुभव की वाणी सेत्रस्त और विघटित समाज को एक नवीन संबल प्रदान किया है।

आचार्य विद्यासागर जी का जन्म 10 अक्टूबर 1946 शरद पूर्णिमा को कर्नाटक केबेल गांव जिले के सद्लगा ग्राम में हुआ था उनके पिता मल्लप्पा व मां श्रीमति ने उनका नाम विद्याधर रखा कन्नड़ भाषा में हाईस्कूल तक अध्ययन करने के बाद विद्याधर ने 1967 में आचार्य देशभूषण जी महाराज से ब्रह्मचर्य व्रत लें लिया इसके बाद जो कठिन साधना का दौर शुरु हुआ तो आचार्य श्री ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा, धार्मिक विचारों से ओत प्रोत संवेदशन शील, सदगृहस्थ मल्लप्पा जी नित्य जिनेन्द्र दर्शन एवं पूजन के पश्चात ही भोजनादि आवश्यक करते थे साधु-सत्संगति करने से परिवार में संयम अनुशासन रीति-नीति की चर्या का परिपालन होता था।

आप माता-पिता की द्वितीय संतान होकर भी अद्वितीय संतान है बड़े भाई श्री महावीर प्रसाद स्वस्थ्य परम्परा का निर्वहन करते हुए सात्विक पूर्वक सदगृहस्थ जीवन-यापन कर रहें है माता-पिता दो छोटे भाई अनंतनाथ तथा शांतिनाथ एवं बहिनें शांता वसुवर्णा भी आपसे प्रेरणा पाकर घर-गृहस्थी के जंजाल से मुक्त होकर जीवन-कल्याण हेतु जैनेश्वरी दीक्षा लेकर आत्म-साधनारत हुए धन्य है वह परिवार जिसमें सात सदस्य सांसारिक प्रपंचों को छोड़कर मुक्ति-मार्ग पर चल रहे हैं इतिहास में ऐसी अनोखी घटना का उदाहरण बिरले ही दिखता है।

विद्याधर का बाल्यकाल घर तथा गाँव वालों के मन को जीतने वाली आश्चर्यकारी घटनाओं से युक्त रहा है। खेलकूद के स्थान पर स्वयं या माता-पिता के साथ मन्दिर जाना धर्म-प्रवचन सुनना शुद्ध सात्विक आहार करना मुनि आज्ञा से संस्कृत के कठिन सूत्र एवं पदों को कंठस्थ करना आदि अनेक घटनाएं माना भविष्य में आध्यात्म मार्ग पर चलने का संकेत दे रही थी। आप पढ़ाई हो या गृहकार्य सभी को अनुशासित और क्रमबद्ध तौर पर पूर्ण करते बचपन से ही मुनि-चर्या को देखने उसे स्वयं आचरित करने की भावना ही बावड़ी में स्नान के सायं पानी में तैरने के बहाने आसन और ध्यान लगाना मन्दिर में विराजित मूर्ति के दर्शन के समय उसमें छिपी विराट ताको जानने का प्रयास करना बिच्छू के काटने पर भी असीम दर्द को हँसते हुए पी जाना परंतु धार्मिक -चर्या में अंतर ना आने देनाा उनके संकल्पवान पथ पर आगे बढ़ने के संकेत थे बाल्यकाल में खेलकूद में शतरंज खेलना शिक्षा प्रद फिल्में देखना मन्दिर के प्रति आस्था रखना गिल्ली डंडा खेलना महापुरुषों और शहीद पुरुषों के तैलचित्र बनाना आदि रूचियाँ आप में विद्यमान थी।

ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर प्रस्फुटित हुआ 20 वर्ष की उम्र जो की खाने -पीने भोगोपभोग या संसारिक आनन्द प्राप्त करने की होती है तब आप साधु-सत्संगति की भावना को हृदय में धारण कर आचार्य श्री देशभूषण महाराज के पास जयपुर (राजस्थान) पहुँच वहाँ अब ब्रह्मचारी विद्याधर उपसर्ग और परीषहों को जीतकर ज्ञानतपस्या और सेवा का पिण्ड प्रतीक बन करजन-

जन के मन का प्रेरणा स्त्रोत बन गया था।

आप संसार की असारता जीवन के रहस्य और साधना के महत्व को पहचान गये थे। तभी तो हष्ट-पुष्ट युवा विद्याधर की निष्ठा दृढ़ता और अडिगता के सामने मोहमाया श्रृंगार आदि घुटने टेक चुके थे वैराग्य भावना दृढवती हो चली पदयात्री और करपात्री बनने की भावना से आप गुरुवर श्री ज्ञानसागर जी महाराज के पास मदनगंज किशनगढ़ (अजमेर) राजस्थान पहुँचे गुरुवर के निकट सम्पर्क में रहकर लगभग 1 वर्ष तक कठोर साधना से परिपक्व होकर मुनिवर श्री ज्ञानसागर जी महाराज के द्वारा राजस्थान की ऐतिहासिक नगरी अजमेर में आषाढ़ शुक्ल पंचमीवि सं. 2025 रविवार 30 जून 1968 ईस्वी को लगभग 22 वर्ष की उम्र में सन्यम का परिपालन हेतु आपने पिच्छि कमन्डलु धारण कर संसार की समस्त बाह्य वस्तुओं का परित्याग कर दिया पूज्य मुनि श्री विद्यासागर महाराज अब धरती ही बिछौना आकाश ही उड़ौना और दिशाएँ ही वस्त्र बन गये थे दीक्षा के उपरांत गुरुवर श्री ज्ञानसागर जी महाराज की सेवा सुश्रुषा करते हुए आपकी साधना उत्तरोत्त्र विकसित होती गयी तब से आज तक अपने प्रति वज्र से कठोर परंतु दूसरों के प्रतिनवनीत से भी मृदु बनकर शीत-ताप एवं वर्षा के गहन झंझावातों में भी आप साधना हेतु अरुक अथक रूप में वर्तमान हैं श्रम और अनुशासन विनय और संयम तप और त्याग की अग्नि मे तपी आपकी साधना गुरु आज्ञा पालन सबके प्रति समता की दृष्टि एवं समस्त जीवकल्याण की भावना सतत प्रवाहित होती रहती है।

गुरुवर आचार्य श्री ज्ञानसागर जी की वृद्धावस्था किन्तु सल्लेखना के पहले गुरुवर्य ज्ञानसागर जी महाराज ने आचार्य पद का त्याग आवश्यक जानकर आपने आचार्य पद मुनि विद्यासागर को देने की इच्छा जाहिर की परंतु आप इस गुरुतर भार को धारण करने किसी भी हालत में तैयार नहीं हुए तब आचार्य ज्ञानसागर जी ने सम्बोधित कर कहा के साधक को अंत समय में सभी पद का परित्याग आवश्यक माना गया है इस समय शरीर की ऐसी अवस्था नहीं है कि मैं अन्यत्र जाकर सल्लेखना धारण कर सकूँ तुम्हें आज गुरु दक्षिाण अर्पण करनी होगी और उसी के प्रतिफल स्वरूप यह पदग्रहण करना होगा गुरू-दक्षिणा की बात सुनकर विद्यासागर निरूत्तर हो गये, तब धन्य हुई नसीराबाद (अजमेर) राजस्थान की वह घड़ी जब मगसिर कृष्ण द्वितीया संवत 2029 बुधवार 22 नवम्बर 1972 ईस्वी को आचार्य श्री ज्ञानसागर जी ने अपने करकमलों आचार्य पद पर मुनि श्री विद्यासागर महाराज को संस्कारित कर विराजमान किया।

कठिन तपस्या- ठंडबरसात और गर्मी से विचलित हुए बिना आचार्य श्री ने कठिन तप किया उनका त्याग और तपोबल आज किसी से छिपा नहीं है इसी तपोबल के कारण सारी दुनिया उनके आगे मस्तक है, 50 वर्ष से वे एक महान साधक की भूमिका में है उनके बताए गए रास्ते पर चलकर हम देश तथा संपूर्ण मानव जाति की भलाई कर सकते हैं।

कई भाषाओं का ज्ञान- आचार्य पद की उपाधि के बाद आचार्य विद्यासागर ने देश भर में पदयात्रा की चातुर्मास गजरथ महोत्सव के माध्यम से अहिंसा व सद्भाव का संदेश दिया समाज को नई दिशा दी आचार्य श्री संस्कृत व प्राकृत भाषा के साथ हिन्दी मराठी और कन्नड़ भाषा का भी विशेष ज्ञान रखते हैं। उन्होंने हिन्दी और संस्कृत में कई रचनाएं भी लिखी हैं इतना ही नहीं पी एच डी व मास्टर डिग्री के कई शोधार्थियों ने उनके कार्य में निरंजना शतकभावना शतकपरीशह जाया शतक सुनीति शतक और शरमाना शतक पर अध्ययन व शोध किया है।

कविता

संयम करो अरे, जीवन में

रचियताः कांति कुमार जैन करुण खिमलासा

संयम करो अरे ! जीवन में, भव सिन्धु से पार जगायेगा ।
खोया जीवन विषय भोग में, अब कितना दुख उठायेगा ॥
क्षण क्षण जीवन बीत रहा है, धर्म किया न जीवन में ।
नही करी करूणा जीवों पर, कितने विकल्प आये मन में ॥
न ही प्रभु के गुण गाये हैं, जब पाप कर्म तब छायेगा ।
संयम करो अरे ! जीवन में, भव सिन्धु से पार जगायेगा ॥
यह संसार सदा नश्वर है, फिर क्यों इससे प्रीत करे ।
यही भ्रमाता जीवन पथ में, कर्म उदय भयभीत करे ॥
जागों चेतन क्यों सोये हो, धर्म करों सुख आयेगा ।
संयम करो अरे ! जीवन में, भव सिन्धु से पार जगायेगा ॥
सम्यक धारों अंतर मन में, सुख का मार्ग बतायेगा ।
रत्नत्रय निधि है सबसे प्यारी, जो मेष दिगम्बर धारेगा ॥
वही मुक्ति के पथ पर होगा, प्रभु की महिमा गायेगा ।
संयम करो अरे ! जीवन में, भव सिन्धु से पार जगायेगा ॥
धर्म ही सच्चा साथी होगा, धर्म का फल अति है प्यारा ।
जिनने धर्म को अपनाया है, वही जगत से होता न्यारा ॥
न ही करूण तुम होगे जग में, शिव सुख का मार्ग बतायेगा ।
संयम करो अरे ! जीवन में, भव सिन्धु से पार जगायेगा ॥

आदिपुराण में दार्शनिक तत्व

❊ पं. राकेश कुमार जैन (भारिल्ल) श्रवणबेलगोला❊

प्रस्तावना :- प्रथमानुयोग के ग्रन्थों में दार्शनिक विषयों का वर्णन एक रोचक तथ्य है। वैसे तो सभी प्रथमानुयोग के ग्रन्थों में आदिमध्यान्त कहीं न कहीं सैद्धान्तिक विषयों पर एवं दार्शनिक विषयों पर आचार्यों ने लेखनी चलाई है। इस प्रकार आचार्य जिनसेन द्वारा रचित ग्रन्थ आदिपुराण भी आचार्य महाराज की ज्ञानज्योति के द्वारा प्रकाशित हुआ है। इस ग्रंथ में आचार्य महाराज ने अनेक स्थानों पर जैन दर्शन के मूलभूत सिद्धांतों एवं दार्शनिक तथ्यों का वर्णन किया है। कुछ दार्शनिक तत्वों का विश्लेषण निम्न कुछ बिन्दुओं के द्वारा करने का प्रयत्न किया है, जिनके माध्यम से आचार्य जिनसेन के द्वारा उद्घाटित दार्शनिक तत्वों को समझकर उनके बौद्धिक प्रकाण्डता एवं दर्शन के मर्म का स्पर्शन किया जा सकता है।

1. सृष्टिवाद का खण्डनः- जैसा कि अन्यान्य मतों में एवं दर्शनों में सृष्टि की उत्पत्ति के बारे में भिन्न-भिन्न मत उपलब्ध होते हैं उन सभी मतों का खण्डन करते हुए आचार्य जिनसेन स्वामी ने आदिपुराण पर्व- 4 के 39-40 श्लोक में सृष्टि एवं जीव संरचना को अकृत्रिम एवं कर्मफलानुसार बताते हुए इस प्रकार लिखा-

ततोऽसा-व-कृतोऽनादि निधनः काल तत्त्ववत्।
लोको जीवादि तत्त्वाना माधारात्मा प्रकाशते ।।39।।

अर्थात मानना चाहिए कि यह लोक कालद्वय की भाँति ही अकृत्रिम है, अनादि निधन है, आदि अन्त से रहित है, और जीव अजीव आदि तत्वों का आधार होकर हमेशा प्रकाशमान रहता है।

असृज्योऽमसंहार्यः स्वभाव नियस्थितिः।
अथस्तिर्यगुपर्याख्यैस्त्रिभिर्भेदैः समन्वितः ।।40।।

न इसे कोई बना सकता है और न ही इसका कोई संहार कर सकता है यह हमेशा स्वभाविक स्थिति में विद्यमान रहता है तथा अधोलोक, तिर्यग्लोक एवं ऊँध्वलोक इन तीन भेदों से सहित है।

इन व्याख्याओं से जो लोग ईश्वर को ही सृष्टि का कर्ता, पालक एवं संहारक मानते है सृष्टि का आदि मानते है। ईश्वर अमूर्तिक होकर मूर्तिक का कर्त्ता मानते हैं सृष्टि का आदि अन्त मानते हैं ईश्वर को रागी द्वेषी सिद्ध करते हैं, ऐसे दुर्बद्धियों के मत का परिहार करते हुए जैन दर्शन का अपना अलौकिक एवं निर्दोष मत प्रस्तुत करते हुए जिनसेनाचार्य ने जैन दर्शन का गौरवान्वित किया है।

2. आत्मा का स्वरूप :- इस संसार में हर प्राणी आत्मा के सच्चे स्वरूप को नहीं जानता, क्योंकि उसे आत्मा के सत्यस्वरूप को बतलाने वाला हितोपदेशक प्रान्त नहीं हुआ, अतः वो सच्चे आत्मास्वरूप से अनभिज्ञ ही प्रकृति में अधिष्ठित हैं। एकाकी जैन दर्शन ही जिसमें आत्मा के सत्यस्वरूप का प्रकाशन किया हैं। जैसा कि आदिपुरण के पाँचवें सर्ग में वर्णित है। भूतवादी चार्वाक मत वाला व्यक्ति आत्मा को मानता ही नहीं वह तो उसे पंच तत्व से निर्मित वस्तु मानता है। विज्ञानवादी हर वस्तु को क्षणभंगुर मानते हैं, अतः वह आत्मात्व को भी नित्य नहीं मानते उनके अनुसार हर वस्तु ज्ञान का विकार मात्र है। इसी तरह नैरात्मवादी (शून्यवादी) समस्त जगत को शून्य रूप मानते है, ऐसे में आत्म या जीवतत्व प्रथक सिद्ध नहीं होता। इन सभी मतों का खण्डन करते हुए आचार्य जिनसेन स्वामी आत्मतत्व का निरूपण करते हुए पाँचवें पर्व के श्लोक 50-60 तक इस प्रकार कथन करतें हैं -

हे भूतवादि। आत्मा नहीं है यह आप मिथ्या कह रहे हैं, क्योंकि पृथ्वी आदि भूत चतुष्टय के अतिरिक्त ज्ञानदर्शन रूप चैतन्य की भी प्रतीति होती है वह चैतन्य शरीर रूप नहीं है और न शरीर चैतन्य रूप है। क्योंकि दोनों का परस्पर विरूद्ध स्वभाव है। चैतन्य नित्स्वरूप है, ज्ञानदर्शन रूप है और शरीर अचित् स्वरूप है, जड़ है। शरीर और चैतन्य दोनों मिलकर एक नहीं हो सकते क्योंकि दोनों में परस्पर विरोधी गुणों का योग पाया जाता है। चैतन्य का प्रतिभास तलवार के समान अन्तरंग रूप होता है और शरीर का प्रतिभास म्यान के समान बहिरंग रूप होता है। यह चैतन्य न तो पृथ्वी आदि भूतचतुष्टय का कार्य है और न उनका कोई गुण ही है, क्योंकि दोनों की जातियाँ प्रथम हैं। एक चैतन्य रूप है, दूसरा जड़रूप है। यथार्थ में कार्य कारण भाव सजातीय में होता है, विजातीय में नहीं। इनके सिवाय एक कारण यह भी है कि पृथ्वी आदि से बने हुए शरीर का ग्रहण उसके अंश रूप इन्द्रियों द्वारा होता है जबकि ज्ञानरूप चैतन्य का स्वरूप अतीन्द्रिय है- ज्ञान मात्र से ही जाना जाता है। यदि चैतन्य पृथ्वी आदि का कार्य या स्वभाव होता तो पृथ्वी आदि से निर्मित शरीर के साथ ही साथ इन्द्रियों द्वारा उसका भी ग्रहण अवश्य होता, परन्तु ऐसा नहीं होता।

इससे स्पष्ट है कि शरीर और चैतन्य प्रथक-प्रथक पदार्थ हैं। शरीर मूर्तिक है, चैतन्य अमूर्तिक अतः मूर्तिक से अमूर्तिक की उत्पत्ति असंभव है।

इस प्रकार आचार्य जिनसेन महाराज ने, जैन दर्शन में आत्मा को शरीर से प्रथक स्वयं शक्तिमान चैतन्य स्वरूपी सिद्ध करते हुए, संसारी प्राणी का पथ प्रदर्शन किया है।

3. संसार की नश्वरता- वैसे तो किसी भी दर्शन ने संसार को शाश्वत सिद्ध नहीं किया है, अर्थात् सभी वस्तुएँ नाशवान हैं, ऐसे सभी का अभिमत स्वीकृत है, परन्तु जैन दर्शन में संसार की नश्वरता का जितनी गहनता से विश्लेषण किया है, वैसा अन्यत्र प्राप्त नहीं होता। यहाँ तो वस्तु को नाश होता देखकर बड़े-बड़े महाराजाओं, चक्रवर्तियों को वैराग्य हो जाता है, और गृहत्याग कर वन को प्रस्थान कर जाते हैं, वैसे तो आदिपुराण में सृष्टि की नश्वरता को सिद्ध करने वाले अनेक उदाहरण उपलब्ध हैं परन्तु एक उदाहरण भगवान ऋषभदेव का अतिविख्यात है, कि जब नीलांजना का नृत्य देखते समय एक नीलांजना की आयुपूर्ण होने पर उसी रूप वाली दूसरी नीलांजना नृत्य करने लगती है, इसका ज्ञान केवल महाराज ऋषभदेव को होता है और वो विरक्त हो जाते हैं, इसके अलावा इन्हीं ऋषभदेव का जीव अपनी वज्रबाहु की पर्याय में महल की छत पर बैठे शरद ऋतु के बादल को विलीन होता देखकर एवं बादल के समान संसार की सभी वस्तओं को क्षणभंगुर जानकर वैराग्य को प्राप्त करते हैं, एवं गृह त्यागकर श्री यमधर मुनिराज के समीप 500 राजाओं के साथ जिनदीक्षा स्वीकार करते हैं।

इसी तरह महाराज वज्रदन्त कमल के अन्दर मरे हुए भ्रमर को देखकर विरक्त हो जाते हैं, उन्हें समझ आ जाता है इस सम्पूर्ण जगत के सभी प्राणी इसी भ्रमर सदृश विषय भोगों से आकृष्ट होकर, अपना जीवन समाप्त कर रहे हैं। और फिर वो वज्रदन्त महाराज ने एक हजार पुत्रों एवं 60 हजार रानीयों 20 हजार राजाओं के साथ जिन शिक्षा दीक्षा ग्रहण कर लेते हैं।

इन प्रसंगों के माध्यम से एक बात साधारणतया ज्ञात होती है कि संसार के सभी, आत्मा से भिन्न बाह्य पदार्थ नाशवान् एवं अहितकारी हैं। ऐसा सभी दर्शनकारों का अभिमत हो सकता है, परन्तु इन वस्तुओं लखकर आत्मकल्याण हेतु जिन दीक्षा धारण करना ही एकमात्र मार्ग शेष है यह केवल जैन दर्शन की सिखाता है जो कि आचार्य जिनसेन महाराज ने वर्णित किया है।

4. सम्यग्दर्शन- जैन दर्शन में सम्यग्दर्शन एक विशिष्ट विषय स्वीकृत किया गया है। अन्य-अन्य= अन्यान्य दर्शनों की भाँति जैन दर्शन में भी तत्वों की गणना की गई है जो कि 7 है। जैनदर्शन में भी तत्व प्रतिपादन की शैली में एक विशेषता यह रही है कि तत्वों का मात्र, पठन, स्मरण एवं अवधाराण मात्र श्रेयस्कार नहीं अपितु उक्त सप्त तत्वों पर दृढ़ता पूर्वक श्रद्धान करना कार्यकारी बतलाया।

श्रद्धान को सम्यग्दर्शन की संज्ञा प्रदत्त है। जैसा कि पं. दौलतराम जी ने मोक्ष महल की प्रथम सीड़ी कहकर सम्यग्दर्शन की सरलतम व्याख्या की है, इसी सम्यग्दर्शन को आचार्य जिनसेन महाराज ने वर्णित किया है- वीतराग, सर्वज्ञदेव, आप्तोपज्ञ, आगम और जीवादि, पदार्थों का बड़ी निष्ठा से श्रद्धान करना सम्यग्दर्शन माना गया है। सम्यग्दर्शन ही सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र का मूलकारण माना गया है। जीवादि सात तत्वों का तीन मूढ़ता रहित और अष्टांग सहित यथार्थ श्रद्धान करना ही सम्यग्दर्शन है

इस प्रकार स्पष्ट परिलक्षित होता है कि सम्यग्दर्शन की भूमिका अतुलनीय है जिसके बिना मोक्षमार्ग ही नहीं बनता।

5. पुनर्जन्म - पुनर्जन्म जैसे सिद्धांत को विज्ञान भी स्वीकार नहीं करता, तथा भौतिकवादी दर्शन भी अस्वीकृत करता है, परन्तु सम्पूर्ण आदिपुराण में जिस प्रकार ऋषभदेव के पिछले भवों का वर्णन एवं अन्य महापुरुषों के पूर्वभवों का वर्णन है इससे जन्मान्तरों का ज्ञान स्पष्टमेव है। जैसा कि हे भव्य जीव ! तू महाबल का शरीर छोड़कर स्वर्ग चला गया और मैंने रत्नत्रय को प्राप्त कर दीक्षा धारण कर ली। तब खेद है कि वे तीनो ढीठ मन्त्री कुमरण से मरकर दुर्गति को प्राप्त हुए। इस प्रकार आचार्य जिनसेन महाराज ने पुनर्जन्म के सिद्धांत को माना है।

6. कर्मफल सिद्धांत- कर्मसिद्धांत की जैसी प्रक्रिया जैन दर्शन में प्रतिपादित है वैसी अन्य दर्शनों में अप्राप्य है। कहीं ईश्वर के अनुसार सब कुद परिणत बताया गया है और कहीं पर सब कुछ कालानुसार होना कहा गया है, परन्तु जैन दर्शन ही अनूठा दर्शन है जो व्यक्त करता है कि जीव जो भी सुख-दुखों का अनुभव एवं गतियों में भ्रमण करता है, यह सर्वमेव कर्मों का ही परिणाम है। उक्त तथ्य को आचार्य जिनसेन महाराज निम्न रूप से वर्णित करते हैं- जो हिंसा करने में आसक्त रहते हैं, झूठ बोलने में तत्पर रहते हैं, चोरी करते हैं, परस्त्री रमण करते हैं, प्राणियों में सदा निर्दय रहते हैं, बहुत आरम्भ और परिग्रह रखते हैं, सदा धर्म से द्रोह करते हैं, अधर्म में संतोष रखते हैं साधुओं की निन्दा करते हैं, मात्सर्य से उपहत हैं तथा धर्मसेवी और परिग्रह रहित मुनियों में बिना कारण ही क्रोध करते हैं, अतिशय पापी हैं, मधु माँस सेवन में तत्पर हैं, अन्य हिंसक प्राणियों को पालते हैं, एवं ऐसे लोगों की प्रसंसा करते हैं, वे जीव पाप के भार से नरक में प्रवेश करते हैं।

कर्मफल के विषय में एक विषय और भी ध्यातव्य है कि वर्तमान में यदि किसी विद्वान या प्रतिष्ठित व्यक्ति के परिजन या पुत्रादि कलह करते हुए देखे जाते हैं तो कहा जाता है कि विद्वान के पुत्र कलह कर रहे, परन्तु आदिपुराण में ऋषभदेव के पुत्र भरत एवं बहुबली भी तीर्थंकर के पुत्र होकर भी तथा स्वयं क्षायिक सम्यक्त्वी तथा तद्भव मोक्षगामी होकर भी, कर्मों के परिणाम स्वरूप कलह से युक्त हुए। तथा मुनि वृषभदेव को 6 माह तक विधि न मिलना भी अन्तराय कर्म के उदय का परिणाम है।

इस वर्णन में स्पष्ट है कि जीव को अपने ही किये कर्मों का फल भोगना पढ़ता है। ब्रह्मा या अन्य कोई शक्ति नहीं जो हर जीव का भाग्य लिखती हो और उसका फल जीव को भोगना पड़ता हो।

पुण्यपाप- कर्मफल से ही जुड़ा हुआ एक विषय पुण्यपाप है। कर्म सिद्धांत में कर्मों की प्रकृतियों को पुण्य और पाप प्रकृतियों रूप दो प्रकार से विभक्त किया है। इसी का वर्णन आदिपुराण में इस प्रकार किया है। इस संसार में जीवों को जो सुख दुःख होते हैं वे दोनों ही अपने कर्मबंध के अनुसार हुआ करते हैं ऐसा श्री अरिहंत देव ने कहा है। वह कर्म पुण्य और पाप के भेद से दो प्रकार का कहा गया है। जिस प्रकार खाये हुए अन्न का मधुर और कटुक रूप से दो प्रकार का विपाक देखा जाता है उसी प्रकार पुण्य और पाप रूपी कर्मों का भी क्रम से मधुर और कटुक विपाक देख जाता है। पुण्य कर्मों का उत्कृष्ट फल सवार्थसिद्धि एवं पाप कर्मों का उत्कृष्ठ फल सप्तम पृथ्वी कहा है।

इस प्रकार वर्णन करके आचार्य श्री ने जीवों को होने वाले सुख-दुःख के कारण को स्पष्ट किया है। इस प्रकार वर्णन अन्य दर्शनों में अनुपलब्ध है।

7. तत्व- तत्व का विवेचन करते हुए आचार्य इस प्रकार लिखते हैं- जीव आदि पदार्थों का यथार्थ स्वरूप ही तत्व कहलाता है। यह त्व ही सम्यग्ज्ञान का अंग है अर्थात् कारण है और यही जीवों की मुक्ति का कारण है। वह तत्व सामान्य रीति से एक प्रकार का है। जीव और अजीव के भेद से दो प्रकार का है। जीव के संसारी और मुक्त भेद करने से संसारी जीव, मुक्त जीव एवं अजीव इस प्रकार तीन भेद वाला है। संसारी जीव दो प्रकार के माने गये हैं , भवय और अभव्य अतः मुक्त जीव, भव्यजीव, अभव्य जीव एवं अजीव इस तरह तत्व 4 प्रकार का माना गया है। अथवा संसारिक जीव दो प्रकार के भव्य और अभव्य तथा अजीव के भी दो भेद मूर्तिक एवं अमूर्तिक इस प्रकार तत्व के 4 भेद है। पाँ च अस्तिकायों की अपेक्षा से तत्व पाँच प्रकार का स्मरण किया जाता है। इसी में काल को मिला देने से तत्व छः भेद वाला हो सकता है। इस प्रकार विस्तार पूर्वक जानने की इच्छा करने वालों के लिए तत्व का विस्तार अनन्त भेद वाला हो सकता है।

इस प्रकार आचार्य श्री जिनसेन महाराज ने आदिपुराण में अन्य सैद्धांतिक ग्रन्थों की तरह तत्वों की गणना सात न कहकर अनिश्चित एवं अनन्त कर दी है। यह विचारणीय है।

8. भव्य एवं अभव्य जीव- जीवों में भव्य और अभव्य इन दो भेदों से जीव की परिगणना भी जैन दर्शन का वैशिष्ट्य है क्योंकि भव्य जीवों में ही मुक्त होने की योग्यता है अन्य में नहीं। आदिपुराण में भव्य जीव को स्वर्णपाषाण एवं अभव्य जीव को अन्धपाषाण की उपमा दी हैं। अन्धपाषण कभी स्वर्ण नहीं बन सकता वैसे ही अभव्य मोक्ष नहीं जा सकता, इस तरह का प्रतिपादन एवं जीवों में योग्यता का विभाजन अन्यत्र दर्शनों में अनुपलब्ध है।

9. मोक्ष तत्व- मोक्ष तत्व को किन्हीं अन्य दर्शनकारों ने भी स्वीकारा है परन्तु दर्शन में मोक्ष की परिभाषा को जिस ढंग से प्रस्तुत किया है वैसा किसी भी दर्शन में नहीं किया, आचार्य जिनसेन महाराज भी आदिपुरण में कहते है (पर्व-42 श्लोक 76-77) जिस प्रकार निगल अर्थात् बेड़ी में बंधा व्यक्ति अपने इष्ट स्थान पर जाने के लिए समर्थ नहीं होता, उसी प्रकार कर्मरूप बंधन से बंधा हुआ जीव भी अपने इष्ट स्थान पर नहीं पहुँच सकता। जिस प्रकार इस लोक में बंधन से छूटा हुआ पुरुष परम स्वतंत्रता को प्राप्त होता है उसी प्रकार कर्मबंध से छूटा हुआ पुरुष (आत्मा) भी स्वतंत्रता को प्राप्त होता है, अर्थात् मुक्त हो जाता है। इसी का नाम मोक्ष हैं।

10. उपसंहार- इस तरह आचार्य जिनसेन महाराज ने अनेक दार्शनिक तत्वों को समावेश करते हुए मोक्षप्रदायी इस आदिपुरण नामक ग्रन्थ का गुंफन किया है। इन समस्त तत्वों का ज्ञान करके दृढ़ श्रद्धान कर सम्यक्तव की उपलब्धि द्वारा अपनी निजात्मा रूपी लब्धि को प्राप्त करने का उपक्रम कर सकते हैं । इस ग्रन्थ में अन्य दार्शनिक विषय भी प्राप्त किय जा सकते हैं जिनका आलेख में समायोजन हो सकता है जो कि मेरी दृष्टि से परे रहे, उन्हें सुधीजन खोजने का उपक्रम करें।

चलो देखें यात्रा

वाराणसी (बनारस-काशी)

नाम एवं पता :-वाराणसी शहर में अलग अलग स्थानों पर चार क्षेत्र हैं इनके प्रबन्ध के लिये अलग अलग संस्थायें है। शहर में मुख्यता 13 मन्दिर है।

भेलपुर वाराणसी : श्री दिगम्बर पार्श्वनाथ जैन तीर्थ क्षेत्र भेलपुर फोन 0542-2275892, 2275357 प्रबंधक श्री सुरेन्द्र यादव-093692-53642 (0542-2353420) संपर्क सूत्र श्री अरूण कुमार जैन 09415343022 श्री दीपक जैन अध्यक्ष 09838059055

सुविधायें : सुविधायुक्त 72 कमरे है। हॉल 7 है। बसें एवं कारे क्षेत्र तक जाती है। भोजनशाला नियमित एवं सशुल्क है। मन्दिर धर्मशाला एक ही केम्पास में है। दिगम्बर मन्दिर से सटा हुआ विशाल श्वेताम्बर मन्दिर में सर्वसुविधा युक्त धर्मशाला है। भोजनशाला नियमित है फोन 0542-275407

मार्गदर्शन: वाराणसी स्टेशन से क्षेत्र लंका तुलसी मानस मन्दिर मार्ग पर 4 किमी. यही रोड बी.एच.यू जाती है।

महत्व एवं दर्शन: क्षेत्र पर मन्दिर एक है। मन्दिर ऊँची कुर्सी पर बड़े हॉल में है। जहाँ मुख्यतः तीन वेदियों पर अनेक प्राचीन एवं नवीन प्रतिमायें है। यहाँ भगवान पार्श्वनाथ का जन्म हुआ था और चारों कल्याणक यही हुये थे। मन्दिर धर्मशाला साहित्य विक्रय केन्द्र एक ही परिसर में है। सेठ खडगसेन का दिगम्बर जैन मन्दिर क्षेत्र के पास मेन रोड़ पर है। यहाँ स्वर्ण कारीगारी एवं पद्मावती की मूर्ति दर्शनीय है।

भदैनी जी (वाराणसी)- गंगा तट पर यह क्षेत्र भगवान सुपार्श्वनाथ की जन्म भूमि है। भेलपुर क्षेत्र से यह गलियों में डेढ़ कि.मी है। भगवान के चारों कल्याणक यहाँ हुये हैं। काशी वाराणसी के रईस बाबा छेदीलाल जी ने इस जगह मन्दिर एवं घाट बनाया था जो आज जैन घाट के नाम से जाना जाता है। फोन : 0542-2275756 प्रबंधक - श्री सुरेन्द्र कुमार जैन सम्पर्क सुत्र श्री प्रशांत कुमार जैन 09431419369

सिद्ध भगवान भी पुनः संसार में लौटकर आते है ?

❊ बिन्दु जैन (पटपड़गंज दिल्ली) ❊

मेरी यह बात सुनकर आप सभी आश्चर्य चकित हो रहे होंगे कि क्या बोल रही हूँ मैं सिद्ध भगवान और फिर से संसारी पर मैं एक गहन और सच्चाई से भरी हुई जानकारी आप तक पहुँचा रही हूँ।

यद्यपि यह बात प्रत्यक्ष रूप से आगम ग्रन्थों में कही भी नहीं लिखी है। फिर भी अप्रत्यक्ष रूप से यह बात आगम ग्रन्थों में ही लिखी है। करूणानुयोग में अनेक अनेक प्रमाणों से यह बात स्वतः स्पष्ट सिद्ध होती है।

आप मेरी बात माने या न माने यह आप पर निर्भर है। मेरा आप सभी से आग्रह है आप लोग एक जिज्ञासु की तरह बहुत ही ध्यान से, खुले दिमाग से मेरी बात सुने और विचार करें। हमारा दिमाग छाता की तरह है वह केवल तभी काम करते हैं जब वह खुले हुए हो।

मेरी बात समझने के लिए एक सुनिश्चित वस्तु व्यवस्था को समझना होगा।

प्रथम प्रमाण-छह द्रव्यों का समूह रूप विश्व है ,इसे आगम में महासत्ता कहा है, और इस महासत्ता को परिणमन शील भी कहा है। पंचास्तिकाय गाथा- 8 अन्यत्र इसे महापदार्थ भी कहा है। यह परिणमनशील महासत्ता अपने अंगों रूप छहः पदार्थों के द्वारा एक नियत विशेष व्यवस्था के अनुसार परिणमन करके सदाकाल विश्व की नियत व्यवस्था को बनाये रखती है।

जीव और पुदगल इसी परिणमनशील महासत्ता के नियमों के अनुसार परिणमन-आवागमन -संयोग-वियोग-स्थिति जन्म मरण और अपने परिणाम करते हैं। कोई भी जीव और पुदगल इस व्यवस्था को तोड़कर परिणमन नहीं करते हैं। जैसे-

1. सभी मार्गणाओं में जीव की संख्या नियत है।
2. सभी गतियों और उनके भेदों में भी जीवों की संख्या नियत है।
3. सभी गुणस्थानों में भी जीवों की संख्या और उनके परिणाम भी सुनिश्चित है।
4. और उनका आवागमन भी सुनिश्चित है।
5. अन्य मार्गणा में भी जीवों की संख्या निश्चित है। इस कारण से ही अनादिकाल से भव्य जीवों का मोक्ष गमन होने पर भी भव्य जीवों का अभाव नहीं हुआ है। और सदाकाल भव्य जीवों की नियत संख्या बनी रहती है।
6. सिद्धालय में और सभी गुणस्थान आदि में जीव निश्चित संख्या में रहते हैं। जैसे- 8, 98, 502 केवली सदाकाल बने रहते हैं। जब भी जिस समय भी इनमें से एक 14वें गुणस्थान में जाता है ठीक उसी समय नया केवली प्रकट होता है। NO GAP अर्थात् कोई अन्तराल नहीं होता।
7. संसार की प्रत्येक मार्गणा में भी सभी जीवों के रहने की आवागमन की नियत और निश्चित व्यवस्था है। जो सदाकाल बनी रहती है। चाहे वह भव्य मार्गणा हो या अभव्य मार्गणा हो, गति इन्द्रिय आदि कोई भी मार्गणा हो अगर यह व्यवस्था नहीं होती तो 6 महीना और 8 समय में 608 जीवों के मोक्ष जाते रहने से सभी जीव मोक्ष में पहुँच जाते या पहुँच जायेंगे क्योंकि काल का तो आदि अन्त है ही नहीं और जीव तो निश्चित संख्या में ही हैं।
8. भूतकाल का कोई आरंभ नहीं होने के कारण भूतकाल की कोई सीमा नहीं है और भविष्यत

काल को भी आगम मेंजीवों से अनंत गुणा कहा है।

अतः यह बात तो आगम में स्वतः सिद्ध है कि सभी जीवों की संख्या और उनके परिणाम विश्व व्यवस्था के अनुसार ही रहते हैं और इस व्यवस्था का कभी उल्लंघन नहीं होता है और यह व्यवस्था भी तभी बनेगी जब सिद्ध भगवान की संख्या भी नियत रहे, सुनिश्चित रहे।

9. अब मैं यह बनाना चाहती हूँ कि कर्मबीज जल गये हैं जिनके ऐसे सिद्ध परमात्मा बिना कर्मोदय के अपने परम पद से कैसे गिरेंगे ? कैसे पुनः संसार में लौट के आयेंगे ?

समाधान करती हूँ- सभी जीवों के सभी गुणों की पर्यायों में निरन्तर षड्गुणी हानि-वृद्धि होती रहती है।

उदाहरण के लिए- उपशम श्रेणि में 11वें गुणसथान में अन्तरकरण में जब जीव रहता है तब मोहनीय कर्म की कोई भी प्रकृति का उदय नहीं रहता है। उस अन्तरकरण काल में तीन पीरियड होते है- प्रथम पीरियड़ में बढ़ती हुई गुण श्रेणि निर्जरा होती है। दूसरे पीरियड़ में घटती हुई गुण श्रेणि निर्जरा होती है। तीसरे पीरियड़ में बिना कर्म उदय के ही अन्तरकरण के बाहर की प्रकृतियों का अनुभाग बढ़ता है, और स्थिति-अनुभाग घटकर अन्तरकरण के भीतर प्रवेश कर उदय में आकर उपशम गुणस्थान से नीचे गिरा देती है।

इस व्यवस्था से यह बात सिद्ध हुई जिन गुणस्थानों में चढ़ते हुए बढ़ती हुई विशुद्धि के कारण निरन्तर गुणश्रेणि निर्जरा हो रही थी, उन्हीं गुणस्थानों में गिरते समय बढ़ते संक्लेश के कारण निर्जरा नहीं होती और अनुभाग बुद्धि बढ़ती जाती है। मोहनीय कर्म का उदय नहीं था फिर भी बिना कर्मोदय के मात्र परिणामों से ही नवीन कर्म बंधते हैं और उदय में भी आते हैं।

सिद्ध दशा में भी नवीन कर्म बंधन हो सकता है न ? क्योंकि इसका मुख्य कारण जीव के परिणाम की विशुद्धि और संक्लेश दोनों का घटना बढ़ना ही है। अर्थात् श्रेणि का चढ़ना और गिरना, जीव के चरित्र गुण की विशुद्धि का बढ़ना और घटना ही है और उसी के अनुरूप कर्मो के उदय उपशम आदि भी होते रहते हैं। किन्तु धर्म के उदय और उपशम आदि के अनुसार जीव के परिणाम नहीं होते यदि कर्म के उदय आदि के अनुसार जीव के परिणाम हो तो जीव कभी मुक्त नहीं हो सकता।

तेरहवें गुणस्थान में प्रवेश करने के अन्तरमुर्हूत तक सत्ता में स्थित सभी पुण्य प्रकृतियों का अनुभाग प्रतिसमय अन्नत गुण बढ़ता रहता है। और पाप प्रकृतियों की श्रेणि निर्जरा भी होती जाती है।

यह सब किसी कर्म प्रकृति के उदय में आने के कारण नहीं होता बल्कि जीव के परिणामों के फलस्वरूप ही होता है।

तेरहवें गुणस्थान में साता वेदनीय कर्म की प्रकृति का एक समय की स्थिति वाला तीव्र अनुभाग सहित प्रदेश बन्ध होता रहता है। संसार अवस्था में चारित्र गुण के परिणामों में मात्र चार गुणी हानि वृद्धि होती है। और इसी के क्षपक श्रेणी में प्रतिसमय असंख्यात गुणी विशुद्धि की वृद्धि से ही अन्तरमुहुर्त में सर्व मोहनीय कर्म क्षय कर दिया जाता है और केवली बन जाते है।

सिद्ध अवस्था में तो चारित्र गुण की निरन्तर छह गुणी अर्थात् अनन्त गुणी हानि वृद्धि होती ही रहती है। वे ही सिद्ध भगवान अपना काल पूरा होने पर सम्यग्चारित्र गुण, ज्ञान गुण, दर्शन गुण और वीर्यगुण की गिरती विशुद्धि से संक्लेश की वृद्धि से क्षदमस्त दशा को प्राप्त हो जाते हैं।

11. अब प्रश्न यह होता है कि आगम में कहीं पर भी यह बात स्पष्ट रूप से क्यों नहीं लिखी है- उत्तर यह है यदि आचार्य आगम में यह कथन स्पष्ट रूप से कहते तो जन सामान्य मोक्ष मार्ग से विमुख हो जाता वे सोचते जब मोक्ष जाकर जब संसार में वापस आना ही है तो इतने महाकष्ट सहन कर मोक्ष पुरुषार्थ क्यों किया जावे ? संसार में ही पुण्य कमाओं और मजे लूटो- शायद इसी कारण आचार्य इस विषय में मौन रहे। परन्तु परिणमन शील वस्तु व्यवस्था बतलाने में यह बात पूर्ण रूप से मुखर हुई हैं।

आज विद्वानों ने इसी आशंका से वचने के लिए नये शब्द का आविष्कार किया-अक्षय अनन्त अर्थात् अनन्त संख्याओं का कभी अन्त नहीं आता। इस शब्द का आगम में कहीं उल्लेख ही नहीं है। यहाँ तक कहा जाता है कि सर्वज्ञ भी अनंत संख्या का अन्त नहीं जानते, जबकि आगम में स्पष्ट उल्लेख है आकाश द्रव्य भी केवलज्ञान के अनन्तवें भाग प्रमाण है। तथा यह भी कथन है कि आकाश द्रव्य सभी ओर से अनन्त है फिर भी केवली भगवान उसे इस प्रकार जानते हैं जैसे हम अपने घर को सब तरफ से जानते हैं। या हम एक बरफी को हथेली पर रखकर जानते हैं।

12. सत्य तो यह है अक्षय अनन्त संख्या भी अंत हो सकती है। अक्षय अनन्त कहे जाने वाले संसारी जीवों की समाप्ति कैसे होती है। समाधान-

एक निगोद शरीर में सिद्धों से भी अनंत गुने निगोदिया जीव रहते हैं। एक साधारण वनस्पति के रूप में जब निगोद शरीर की उत्पत्ति प्रारंभ होती है जब प्रथम समय में नाना गतियों से एकत्रित होकर अनन्त जीव उस निगोद शरीर में उत्पन्न होते हैं इसी क्रम से पोने पाँच मिनट तक प्रति समय अनन्त जीव आते हैं और सभी जीव एक श्वांस के 18वें भाग समय में वहीं पर जन्म मरण करते हैं और पोने पाँच मिनट के अन्दर 6012 बार जन्म मरण करके प्रति समय अनन्त जीव उस शरीर को छोड़कर अन्य गतियों में चले जाते हैं। इसी क्रम में वह शरीर साधारण वनस्पति से प्रत्येक वनस्पति होने पर सभी निगोद के जीव उस शरीर से निकलकर अन्य गतियों में चले जाते हैं। और इस प्रकार सिद्धों से भी अनन्त गुने अधिक जीवों का संग्रह और विघटन हो जाता है।

सर्व संसारी जीवों की संख्या का माप भी आगम में बताया गया है। एक निगोदिया शरीर के जीवों की संख्या से असंख्यात लोक की संख्या का गुणा करने पर सर्व संसारी जीवों की संख्या आती है जो अक्षय अनन्त नहीं है।

इन संसारी जीवों में अधिकांश जीव निगोद में रहते हैं जितने संसारी जीव है उनमें अनन्तवें भाग अभव्य जीव हैं। शेष अनन्त बहुभाग भव्य जीव है। बहुभाग का अर्थ है- 1 लाख में 1 जीव ही मोक्ष जाने योग्य है। इन भव्य जीवों में भी अनन्त बहुभाग दूराति दूर भव्य है, जो कभी मोक्ष नहीं जायेंगे। इस प्रकार सभी संसारी जीवों के मात्र अनन्तवें भाग जीव ही मोक्ष जाये योग्य हैं। 6 महीना 8 समय से 608 जीव मोख जायेंगे इस व्यवस्था के अनुसार निकट भव्य संख्या में 608 का भाग देकर 6 महीना 8 समय का गुणा करने पार जो समय आएगा उतने समय में सभी भव्य जीव मोक्ष चले जायेंगे।

आगम के अनुसार भूतकाल के समय का माप है- सर्व सिद्धों की संख्या में 608 का भाग देकर 6 महीना 8 समय का गुणा करने पर भूतकाल का प्रमाण होता है। इसी क्रम से ऐसे भूतकाल के समय में अनन्त जीव सिद्ध हुए हैं। उसी क्रम से भविष्य काल में सर्व जीव सिद्ध हो सकते हैं।

जब सभी जव सिद्ध परमातमा हो जायेंगे तब मोक्ष और संसार व्यवस्था का नाश हो जाएगा।

जब सिद्ध पुनः संसार में वापस आयेंगे तभी यह व्यवस्था सुचारू रूप से चल सकती है।

समय सीमा सीमित होने के कारण इस विषय में कुछ कहने का प्रयास किया है।

आगम दर्शन

जिन दर्शन परिचायक ''दर्शन पाहुड़''

आचार्य कुंदकुंद देव ने वैसे तो चौरासी पाहुड़ की रचना है। किन्तु दर्शन पाहुड़ 36 गाथाओं का अनूठा ग्रंथ है। जिनमें वृषभ और वर्धमान को नमस्कार करके दर्शन मार्ग को कथन करने की प्रतिज्ञा की है। मंगलाचरण उपरांत दर्शन को मूलधर्म कहा है। तथा दर्शन से हीन की वंदना नहीं करना चाहिए ये उपदेश दिया है। दर्शन अर्थात् जिन लिंग से भिन्न हो मोक्ष की प्राप्ति नहीं है। एक बार चारित्र से भ्रष्ट मोक्ष को प्राप्त होता है किन्तु दर्शन से नहीं। जो सम्यकरत्न से भ्रष्ट है वह अनेक प्रकार के शास्त्रों को जानकर भी अराधना से रहित होकर भी संसार में भ्रमण करता है। सम्यक्त्व के बिना चारित्र और तप निश्फल होता है। सम्यक्त्व सहित जीव ही कर्मबंध को प्राप्त नहीं हो सकता है। जो सम्यक् दर्शन से भ्रष्ट है वह ज्ञान और चारित्र से भ्रष्ट तो होते हैं और दूसरों को भी कर देते है। तथा धर्मात्मा पुरुषों को दोष लगाकर उन्हें भ्रष्ट बताते हैं। जो दर्शन भ्रष्ट है वह मूल भ्रष्ट है।

जिन लिंग और जिन दर्शन को ही मूल मोक्षमार्ग कहा है। अर्थात् दिगम्बर अवस्था ही मोक्षमार्ग है। इससे भ्रष्ट जो दर्शनधारी से विनय कराते हैं वह दुरगति को प्राप्त होते हैं। जो दर्शन धारी दर्शन भ्रष्ट के पैर पड़ते है उनकी अनुगोदना करते हैं वे भी दुरगति को प्राप्त होते हैं। सम्यक् दर्शन से कल्याण व मिथ्यात्व से अकल्याण होता है। जिनेन्द्र का वचन औषधि के समान है।

दर्शन के भेद बताते हुए आचार्य कुंदकुंद देव ने पहला लिंग मुनि का दूसरा उत्कृष्ट श्रावक का और तीसरा आर्यिका का बताया है। तथा ये भी बताया है। चौथा कोई लिंग नहीं होता है। जिनेन्द्र भगवान के वचन में छः द्रव्य नौ पदार्थ ओर पंचास्तिकाय का वर्णन मिलता है। इनका श्रद्धान करके ही सम्यकदर्शन होता है। सम्यक् दर्शन व्यवहार और निश्चय दो प्रकार का होता है। सम्यक् दर्शन सब गुणों में सार है।

जो श्रद्धान करता है उसी का सम्यक्दर्शन होता है। शक्ति के अनुसार कार्य करना चाहिए। शक्ति नहीं होने पर सिर्फ श्रद्धा करना चाहिए।

जिनके सम्यक् ज्ञान चारित्र है वे ही वंदनीय है। तो यथाजात दिगम्बर रूप को देखकर वंदना नहीं करते हैं वे मिथ्या दृष्टि ही हैं। असंयमी वंदना के योग्य नहीं हैं। तप से युक्त वंदनीय होते हैं। तप से तीर्थंकर पद की प्राप्ति होती है। ज्ञान दर्शन तप और चारित्र से जिनशासन से मोक्ष होना कहा है। मनुष्य जीवन का सार ज्ञान है। सम्यक् दर्शन ही अमोलक ज्ञान है कर्म को नाश करके ही मोक्ष की प्राप्ति होती है।

प्रस्तुत ग्रंथ में सम्यक् दर्शन जिनलिंग और मोक्ष का उपाय बताने के लिए अनेक प्रकार के तर्क दिए हैं। इन तर्कों को पढ़कर हमारा श्रद्धान मजबूत होता है। तथा वंदनीय अवंदनीय का ज्ञान होता है। व भ्रष्ट होने से बचने के उपाय भी प्रस्तुत ग्रंथ में बतायें हैं। जिन्हें पढ़कर हम अपना मोक्षमार्ग दृढ़ कर सकते हैं।

कविता

वीरा तेरी शरण में

✻ सुभाषचंद्र सरल (अशोकनगर) ✻

हम कब से आये बैठे, वीरा तेरी शरण में
मस्तक झुकायें बैठे, वीरा तेरी शरण में
संसार को नशाने, परमात्म पद को पाने
वीरा तेरी शरण में, पारस तेरी शरण में
लाखों को तूने तारा, मुझको भी पार कर दे
आतम है मेरा खाली, अपनी दया से भर दे
नहीं चाहूँ सोना चाँदी, नहीं चाहूँ हीरे मोती
अपनी दया से मुझको, अपने समान कर दे
यही आस लेकर आया, बड़ी प्यास लेकर आया
वीरा तेरी शरण में.....
निर्वाण पाये गौतम, वीरा तेरी दया से
अंजन हुये निरंजन, वीरा तेरी दया से
तीनों लोक देखे, नहीं तेरा कोई सानी
सूली हुआ सिंहासन, वीरा तेरी दया से
निज कर्म को नशाने, निजात्म पद को पाने
वीरा तेरी शरण में.....
दुखियों के दुःख हर ले, सबको ही सुख से भर दे
नहीं होवे कोई भूखा, सबको ही तृप्त कर दे
सदियों से यह जमाना, तेरी दया का कायल
सब पर ही रहम दिखला, सबको ही माफ कर दे
अरदास लेकर आया, सत् प्यास लेकर आया
वीरा तेरी शरण में.....

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता
नवम्बर 2018

ये रंग बिरंगी दीवाली

प्रथम-

महावीर का मोक्ष महोत्सव, लेकर ये आया त्योहार।
सभी बाँटते आज बधाई, अपनों को देकर उपहार
पूजन कर निर्वाण कांड पद, लाडू अपर्ण भर थाली
नाचें गायें हर्ष मनायें, रंग बिरंगी दीवाली

श्रीमति रजनी जैन (राहतगढ़)

द्वितीय-

मिटा अंधेरा मिथ्या मन का, ज्ञान उजेला पूर्ण हुआ
अंतर दीप जला बोध का, जिन अनुभव अपूर्व हुआ
बाहर से भीतर जब आये, पर्व दीवाली सही मना ली
साफ सफाई अंतर की कर, रंग बिरंगी दीवाली

श्रीमति रूचि जैन (सागर)

तृतीय-

गौतम गणधर के वलज्ञानी, बने लक्ष्मी अंतर स्वामी
पूँजे अब हम सिद्ध प्रभू को, पाने शिव सुख रजधानी
भटकन मिटे अंधेरा मन का, छा जाये शाश्वत खशहाली
आये अनुभव निज सत्ता का, रंग बिरंगी दीवाली

श्रीमति निकिता जैन (ग्वालियर)

प्रोत्साहन

श्री वीर प्रभु के पावन, श्री निर्वाश पर्व पर।
श्री गणधर गौतम जी के, केवल्य ज्ञान पर्व पर॥
हम घर घर पूजन कर, जलाते दीपो से भी थाली।
हर कार्तिक अमावस्या को होती, ये रंग बिरंगी दीवाली॥

श्री कपूरचन्द्र जैन बसंल (टीकमगढ़ म.प्र.)

अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा
अक्टूबर 2018 के विजेता

प्रथम : श्रीमति कान्ता जैन (राजस्थान)
द्वितीय : श्रीमति रजनी विमलचंद्र जटाले (महाराष्ट्र)
तृतीय : श्रीमति सुगंधाबाई सुभाषचंद्र जैन (धुले)

वर्ग पहेली क्र. 225
अक्टूबर 2018 के विजेता

प्रथम : श्रीमति इन्द्रा जैन (इन्दौर)
द्वितीय : श्रीमति सुगम जैन (साबरमति)
तृतीय : खुशबु जैन (गंजबासोदा)

अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा : नवम्बर 2018 का हल

01.	झारखंड	18.	सतारा	35.	महाराष्ट्र
02.	राजस्थान	19.	महाराष्ट्र	36.	राजस्थान
03.	गुजरात	20.	छिंदवाड़ा	37.	दिल्ली
04.	कर्नाटक	21.	पन्ना	38.	कर्नाटक
05.	दिल्ली	22.	गाजियाबाद	39.	गुजरात
06.	राजस्थान	23.	दिल्ली	40.	पश्चिम बंगाल
07.	झारखंड	24.	सागर	41.	राजस्थान
08.	महाराष्ट्र	25.	तालबेहट	42.	टीकमगढ़
09.	महाराष्ट्र	26.	गुजरात	43.	उज्जैन
10.	महाराष्ट्र	27.	भिण्ड	44.	महाराष्ट्र
11.	कर्नाटक	28.	दिल्ली	45.	दतिया
12.	महाराष्ट्र	29.	कर्नाटक	46.	इन्दौर
13.	पांडुचेरी	30.	छतरपुर	47.	कर्नाटक
14.	दिल्ली	31.	महाराष्ट्र	48.	बुलंद शहर
15.	राजस्थान	32.	आगरा	49.	कर्नाटक
16.	महाराष्ट्र	33.	राजस्थान	50.	राजस्थान
17.	महाराष्ट्र	34.	राजस्थान		

पुराण प्रेरणा

आकुलता की विषय भोग जानी

विषयाननुभुञ्जानः स्त्रीप्रधानान् सवेपथुः।
किंचिदाश्वासजननं तथा विषयजं सुखम्॥

जो पुरुष स्त्री आदि विषयों का उपभोग करता है उसका सारा शरीर काँपने लगता है, श्वांस तीव्र हो जाती और सारा शरीर पसीने से तर हो जाता है। यदि संसार में ऐसा जीव भी सुखी माना जाये तो फिर दुखी कौन होगा?

आयासमात्रमत्राज्ञः सुखमित्यभिमन्यते।
विषयाशाविमूढ़ात्मा श्वेतास्थि दशनैर्दशन्॥

जिस प्रकार दांतों से हड्डी चबाता हुआ कुत्ता अपने को सुखी मानता है उसी प्रकार जिसकी आत्मा विषयों से मोहित हो रही है ऐसा मूर्ख प्राणी भी विषय सेवन करने से उत्पन्न हुए परिश्रम मात्र को ही सुख मानता है।

क्षारमम्बु यथा पीत्वा तृष्यत्यति तरां नरः।
तथा विषयसंभोगैः परं संतर्ष मृच्छति॥

जिस प्रकार मनुष्य खारा पानी पीकर और भी अधिक प्यासा हो जाता है उसी प्रकार यह जीव विषयों के संभोग से और भी अधिक तृष्णा को प्राप्त हो जाता है।

(आदि पुराण से)

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों कोक्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. अ ण् र् अ अ क् ण् ड् इ आ क् म
2. घ् आ अ व् अ आ ग् त् ई आ र् न् अ भ
3. अ र् आ अ ग् ई स् व् र् उ प् अ वि अ र् अ आ स् ग् व् द् य आ
4. च इ द् श् ध् इ अ व् इ न् अ य् सि
5. घ् ई स् त्र य् अ ल

परिणाम :
नवम्बर 2018: (1) तोता क्यो रोता (2) चेतना के गहराव में (3) डूबो मत डुबकी लगाओं (4) दिव्योपदेश (5) अनाशक्त महायोगी

पैकेजिंग में रोजगार

केरियर

पैकेजिंग- पैकेजिंग किसी उत्पाद की मार्केटिंग का अनिवार्य हिस्सा है पैकेजिंग किसी उत्पाद में ग्लैमर बढ़ाती है जो उसकी तीव्र बिक्री में सहायक होता है अच्छी गुणवत्ता वाली पैकेजिंग की बढ़ती मांग के परिणाम स्वरूप इस उद्योग में उछाल आ गया है घरेलू कार्पोरेट भी बहु-उद्देशीय कंपनियों के रास्ते पर चलकर पैकेजिंग के अंतराष्ट्रीय मानकों को अपनाने पर बल दे रहे हैं ।

पैकेजिंग में प्रयुक्त होने वाली सामग्री में परंपरागत लकड़ी, टिन, प्लेट एवं शीशे के साथ सभी तरह के पेपर बोर्ड, प्लास्टिक एवं लचीले पैकेजिंग पदार्थ शामिल है, पर्यावरण सुरक्षा के प्रति बढ़ती जागरूकता से पैकेजिंग में भी जैविक रूप से नष्ट होने वाली सामग्री का प्रयोग भी व्यापक रूप से होने लगा है।

पैकेजिंग सामग्री- पैकेजिंग सामग्री, मुख्यतया पॉलीथीलीन एवं पोलिस्टर से बनी होती है, शीशे के कंटेनरों का प्रयोग कॉस्मेटिक (सौंदर्य प्रसाधन) शीतल पेय तथा शराब उद्योग द्वारा किया जाता है, शीशे का स्थान अब प्लास्टिक लेता जा रहा है।

धातु के बने कंटेनर विशेष टिन तथा एल्युमीनियम निर्मित कंटेनरों को परंपरागत पैकेजिंग सामग्री माना जाता है, बहुमित्ति वाले कागज के बोरे का प्रयोग पाउडर तथा कणिक उत्पादों की पैकेजिंग में महत्वपूर्ण होता है जबकि अब पोलिथीलीन तथा पोलीप्रोपलीन से बने बोरों का भी व्यापक प्रयोग प्रारंभ हो गया है।

रोजगार संभावनाएं - पैकेजिंग में विज्ञान एवं इंजीनियरिंग से लेकर मार्केटिंग तथा ग्राफिक आर्ट के अनेकों विषय (क्षेत्र) शामिल हैं, इसलिए यह विविध क्षेत्रों के लोगों को व्यवसायिक अवसर प्रदान करती है।

व्यापक रूप से क्षेत्र में विभिन्न कार्यों में डिजाईन, निर्माण तथा मार्केटिंग शामिल है । जबकि प्रत्येक में विशेषज्ञता का अलग क्षेत्र है, परंतु एक दूसरे से यह इतने अधिक संबद्ध है कि एक क्षेत्र के व्यवसायिक को अन्य दो क्षेत्रों की जानकारी होना आवश्यक होता है।

पैकेजिंग प्रोद्योगिकी पैकेज का डिजाईन तैयार करती है, पैकेजिंग शिल्प वैज्ञानिक जो निर्माण के क्षेत्र में कार्य करते हैं, वे इंजीनियर होते हैं, जो उत्पादन का निरीक्षण करते हैं तथा गुणवत्ता नियंत्रण संभालते हैं।

तथा टिकाउपन तथा अन्य विभिन्न कारकों पर नजर रखते हैं, पैकेजिंग प्रक्रिया तथा उसे भरने की प्रक्रिया में उचित तकनीक का इस्तेमाल तथा पैकेजिंग में प्रयुक्त होने वाली सामग्री प्रभावी रूप से कार्य करें यह सुनिश्चित करना भी पैकेजिंग शिल्प का कार्य है।

पाठ्यक्रम- पैकेजिंग के पाठ्यक्रम में पर्यावरण सुरक्षा, पैकेजिंग अपशिष्ट के निपटान से संबद्ध आर्थिक एवं कानूनी पहलू तथा जैविक क्षय युक्त सामग्री भी शामिल है। प्रभावी प्रबंधन, पैकेजिंग के लिए मार्केटिंग, गुणवत्ता नियंत्रण तथा उत्पाद पैकेजिंग भी पाठ्यक्रम का एक भाग है।

पैकेजिंग संस्थान से दो वर्षीय डिप्लोमा करने वाले छात्र उच्च पैकेजिंग उद्योग में रोजगार के अवसरों की सुविधा प्राप्त कर लेते हैं। तथा भविष्य में अनुभव के आधार पर उद्यमी के रूप में अपना भविष्य बना सकते हैं।

पारिश्रमिक- पैकेजिंग उद्योग में विभिन्न क्षेत्रों में दक्षता प्राप्त करके आर्कषण वेतनमान प्राप्त किया जा सकता है।

संस्थान- 1. इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ पैकेजिंग टेक्नोलॉजी अंधेरी ईस्ट, मुबंई । 2. इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ पैकेजिंग टेक्नोलॉजी बी/29 फ्लैटेड, फैक्ट्री कॉम्पलेक्स झंडेवाला नई दिल्ली । 3. इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ पैकेजिंग टेक्नोलॉजी प्लॉट 169, इंडस्ट्रीयल इस्टेट पेरूगुंदी चेन्नई तमिलनाडु

■1 अक्टूबर

- भीषण भूकम्प से तवाह इंडोनेशिया के सुलावेसी द्वीप के जेलों से 1200 कैदी भगे।

- अभिनेता स्वर्गीय राजकपूर की पत्नी कृष्णा कपूर का निधन हुआ वह 87 वर्ष की थी।

- पी एन बी बैंक को 1400 करोड़ का चूना लगाने वाले नीरव मोदी की 637 करोड़ सम्पत्ति प्रवर्तन निदेशालय ने ली।

■ 2 अक्टूबर

- राजस्थान समेत 5 राज्यों के 30 हजार किसान दिल्ली सीमा पर पहुँचे

- केरल के संगीतकार वाला भास्कर का निधन हुआ।

-कोलकाता के दम दम इलाके में बम फटने से एक 7 वर्षीय बच्चे की मौत हुई 9 लोग घायल हुए।

■ 3 अक्टूबर

- ए यू एन महासचिव एंतोनियो गुतेरस ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पालसी लीडरशिप के चैम्पियन ऑफ अर्थ अवर्ड दिया।

- 46वें चीफ जस्टिस के रूप में रंजन गोगई ने पद की शपथ ली।

- असम के 7 रोहिंग्याओं को म्यांमार भेजने का निर्णय हुआ।

■ 4 अक्टूबर

- भारत ने म्यांमार को 7 रोहिंग्याओं को सौंपा म्यांमार ने उन्हें अपना नागरिक माना।

- चंदा कोचर ने आई सी आइ सी बैंक के सी.ई.ओ. पद से इस्तीफा दिया।

- भारत वेस्ट इंडीज किक्रेट टेस्ट मैच में पृथ्वी शॉ ने 18 साल 329 दिन की उम्र में 134 रन बनाये।

■ 5 अक्टूबर

- रूस से एस 400 एय डिफेंस डील 37 हजार करोड़ में सौदा भारत ने किया। यह समझौता प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी एवं रूस के राष्ट्रपति पुतिन के बीच हुआ।

- असिस्टेंट कमांडेंट विपुल पांडे का निधन स्वाइनफ्लू से हुआ।

- श्रीनगर- आतंकियों ने हब्बाकदल क्षेत्र में नेशनल कॉन्फ्रेंस के 2 कार्यकर्ताओं की हत्या कर दी।

■ 6 अक्टूबर

- भारत ने वेस्टइंडीज को टेस्ट मैच की पारी 272 रन से हराकर इतिहास रचा।

- श्रीनगर - जम्मू के रामवन जिले में एक मेटोडोर खाई में गिरी 20 लोग मरे।

- चुनाव आयोग ने मध्यप्रदेश राजस्थान छत्तीसगढ़ मिजोरम के साथ तेलांगना में विधानसभा चुनाव की घोषणा की।

■ 7 अक्टूबर

- पटना बिहार के सुपौल जिले में आवासीय विद्यालय में मनचलों का दुस्साहस सामने आया। छात्राओं को स्कूल घुसकर पीटा 34 भर्ती छेडछाड का विरोध करने पर छात्रा को बुरी तरह पीटा।

- अमेरिका सुप्रीम कोर्ट जज ब्रेट कैपनाग विरोध के बाद बने आपको राष्ट्रपति ट्रंप ने नामित किया था।

- लखनऊ- दुत कार्यबल का 26 वाँ स्थापना दिवस मनाया गया।

■ 8 अक्टूबर

- नागपुर : सुरक्षा एजेंसियों ने ब्रह्मोस मिसाइल यूनिट के इंजीनियर का निशांत अग्रवाल को पाक अमेरिका के जासूसी के आरोप में गिरफ्तार किया।

- अहमदाबाद- 50 हजार हिन्दी भाषियों की रोजी छिनी हमला करने वाले 450 लोग

गिरफ्तार हुए।

- टीकमगढ़- जतारा थाना क्षेत्र के ताल लिधोरा में रेत से भरा ट्रक बैलगाड़ी पर गिरने से 4 लोगों की मौत हुई।

■ 9 अक्टूबर

- भिलाई- सबसे बड़े इस्पात संयत्र भिलाई स्टील प्लांट में गैस पाइप लाइन फटने से लगी भीषण आग से 13 श्रमिकों की मौत हो गई।

- पन्ना : गरीब मजदूर को उथली खदान से 42 कैरेट 59 सेंट का बेशकीमती जैम क्वालिटी का हीरा मिला।

- वरिष्ठ पत्रकार और तमिल साप्ताहिक पत्रिका नक्कीरन के संपादक आर आर गोपाल को गिरफ्तार कर लिया गया।

■ 10 अक्टूबर

- नई दिल्ली- केन्द्र के अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता को नया सॉलिसिटर जनरल बनाया।

-रायबरेली के हरचंदपुरी रेल्वे स्टेशन के पास मालदा टाउन से नई दिल्ली आ रही न्यू फरक्का एक्सप्रेस की नौ बोगियां पटरी से उतर गई।

- पुणे : देश में पहली बार खोपड़ी का सफल प्रत्यारोपण किया गया है।

■ 11 अक्टूबर

- हिसार जिले में स्थित सतलोक आश्रम के स्वघोषित संत रामपाल को स्थानीय सत्र अदालत ने हत्या के दो मामलो में उसके 26 अन्य अनुयायियों के साथ दोषी करार दिया।

-जम्मू कश्मीर के कुपवाड़ा जिले में हुई एक मुठभेड़ में सुरक्षाबलों ने एक पी.एच.डी स्कॉलर समेत हिजबुल मुजाहिदीन के दो कश्मीरी आतंकियो को मार दिया गया।

- प्रवर्तन निर्देशालय (ईडी) ने गुरुवार को पूर्व वित्तमंत्री पी. चिदंबरम के बेटे कीर्ति देश-विदेश में स्थित 54 करोड़ रूपये की संपत्ति जब्त कर ली।

■ 12 अक्टूबर

- क्वालालुंपुरः घरेलु स्तर पर भारी विरोध के बीच मलेशियाई सरकार ने मौत की सजा खत्म करने का फैसला किया।

- नई दिल्ली : सुप्रीम कोर्ट ने मध्यप्रदेश व राजस्थान में मतदाता सूची में गड़बड़ी के मामले पर कांग्रेस द्वारा दाय याचिका खारिज कर दी।

- मुंबई- स्टेट बैंक ऑफ मॉरिशस की मुंबई स्थित नरीमन पॉइट शाखा से हैकरों ने 143 करोड़ रूपये चुरा लिये।

■ 13 अक्टूबर

- उस्ताद अलाउद्दीन खां की बेटी ख्यात सितार वादक पद्म भूषण अन्नपूर्णा देवी का शनिवार को मुंबई के बीच कैंडी अस्पताल में 91 वर्ष की उम्र में निधन हो गया।

- अमेरिका में हिन्दी और संस्कृत भाषाओं को बढ़ावा देने के मकसद से वॉशिंगटन में भारतीय दूतावास जल्द ही दोनों भाषाओं के लिए साप्ताहिक क्लास शुरू करेगा।

- पश्चिम नेपाल स्थित माउंट गुर्जा पहाड़ पर हुए हिमस्खलन में करीब नौ पर्वतारोहियों की मौत हो गई है।

■ 14 अक्टूबर

- विदेश राज्यमंत्री एम जे अकबर ने स्वदेश लौटते ही सफाई दी। 12 महिला पत्रकारों के आरोपों को बेबुनियाद व मनगढ़त बताया।

-दिल्ली के एम्स में लंबे समय से भर्ती गोवा के मुख्यमंत्री मनोहर परिंकर को हालत बिगड़ने के बाद निवास पर लाया गया।

- छत्तीसगढ़ में राजनांद गांव के ग्राम सोमनी में कार और ट्रक में भीषण टक्कर हो गई। इसमें एक ही परिवार के 10 लोगों की मौत हो गई।

■ 15 अक्टूबर

- हरियाणा के पलवल जिले के उटावड़ गांव में बनाई जा रही मस्जिद में ए तैयबा द्वारा भेजा गया पैसा लगाया जा रहा है।

- अमरीका में भारत वंशी प्रो. अभय अश्तेकर को प्रतिष्ठित आंइस्टीन पुरस्कार 2018 से नवाजा जाएगा।

- नई दिल्ली : पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह और कई वरिष्ठ कांग्रेसी नेताओं के विरोध के

बावजूद केन्द्र सरकार ने विरोध के बावजूद केन्द्र सरकार ने पूर्व प्रधानमंत्रियों के संग्रहालय का शिलान्यास किया।

■ 16 अक्टूबर

- सतलोक आश्रम के प्रमुख स्वयं भू बाबा रामपाल को हिसार को विशेष अदालत ने हत्या दो मामलों में उम्रकैद की सजा सुनाई।

- लखनऊ : उ.प्र. मंत्रिमंडल ने ऐतिहासिक शहर इलाहाबाद का नाम प्रयाग राज करने की मंजूरी दे दी।

-गोवा में कांग्रेस को बड़ा झटका लगा हैं। उसके दो विधायक ने विधानसभा से इस्तीफा दे दिया।

■ 17 अक्टूबर

- मी. टू. मुहिम के तहत आरोप लगाने वाली 20 से ज्यादा महिलाओं के कोर्ट का रूख करने के बाद केन्द्रीय विदेश राज्यमंत्री एम जे अकबर को अपने पद से इस्तीफा देना ही पड़ा।

- जम्मू कश्मीर के फतेह कदाल इलाके में सुरक्षाबलों ने मुठभेड़ में लश्करे तैयबा के खूंखार आतंकी कमाण्डर मेहराज बांगरू समेत तीन आंतकी मार गिराये।

- म.प्र. शासन ने पुलिस हाऊसिंग कॉरपोरेशन के महानिदेशक विजयकुमार सिंह को प्रदेश के डी जी पी का अतिरिक्त प्रभार सौंप दिया है।

■ 18 अक्टूबर

- उ.प्र. के पूर्व प्रधानमंत्री एन डी तिवारी का निधन हो गया 93 वर्षीय तिवारी लंबे समय से बीमार थे।

- दिल्ली की एक कोर्ट ने गुरुवार को पत्रकार प्रिया रमानी के खिलाफ पूर्व केन्द्रीय मंत्री एम जे अकबर की अपराधिक मानहानि अर्जी पर संज्ञान ले लिया।

-पाकिस्तान के सुप्रीम कोर्ट ने प्रधानमंत्री इमरान खान को अयोग्य घोषित करने की मांग वाली पुनर्विचार याचिका खारिज कर दी।

■19 अक्टूबर

- अमृतसर रेल्वे ट्रैक पर करीब 700-800 लोग खड़े होकर रावण दहन देख रहे थे उसी दौरान पठानकोट अमृतसर डी एम यू ट्रैन ने उन्हें कुचल दिया अमृतसर के एस डी एम ने 50 लोगों की मौत की पुष्टि की है। 100 से ज्यादा घायल हैं।

-ह्यूस्टनः भारतीय मूल की महिला मीनल पटेल डेविस को अमेरिका में राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

-तेलांगना में हैदराबाद के कोंडापुर में देश का पहला डॉग पार्क बना।

■ 20 अक्टूबर

- देश के पहले गृहमंत्री सरदार पटेल की प्रतिमा स्टैच्यू ऑफ यूनिटी के नजदीक रहने वाले 75 हजार आदिवासी अनावरण के विरोध में उत्तर आयें हैं।

- लंदन ब्रिटेन में बलात्कार करने वाले कोर्ट ने 16 लोगों को करीब 221 साल की सजा सुनाई गई है।

- मुंबई : देश की पहली क्रू ज सेवा आम लोगों के लिए शुरु कर दी गई।

■ 21 अक्टूबर

- नेता जी सुभाषचन्द्र बोस द्वारा स्थापित आजाद हिन्द फौज की 75वीं वर्षगांठ के मौके पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने लाल किला पर नेहरू गांधी परिवार पर परोक्ष रूप से जोरदार हमला बोला।

-जम्मू कश्मीर में कुलगाम जिले में हुई भीषण मुठभेड़ में तीन आंतकी ढेर कर दिए गये।

- मालदीव के आम चुनावों में राष्ट्रपति अब्दुल्ला यामीन की पराजय पर सुप्रीम कोर्ट मुहर लगा दी है।

■ 22 अक्टूबर

- केन्द्रीय जांच एजेन्सी (सीबीआई) ने रिश्वत खोरी मामले में अपने ही एक पुलिस उपाधीक्षक (डीएसपी) देवेन्द्र कुमार को गिरफ्तार किया है।

महिलाओं की तरह पुरुषों की भी विवाह उम्र 21 साल से घटाकर 18 साल करने की मांग संबंधी एक जनहित याचिका सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को खारिज कर दी।

- उपराष्ट्रपति ने कहा कि मातृभाषा को कभी न भूलें। पारिवारिक सदस्यों के साथ मातृभाषा में

ही बात करनी चाहिए।

■ **23 अक्टूबर**

- सुप्रीम कोर्ट ने बढ़ते प्रदुषण को नियंत्रित करने के लिए बहुत अहम आदेश जारी किया ग्रीन पटाखों के उत्पादन व बिक्री पर बैन तो नहीं लगाया

- मुंबई : बॉलीवुड एजाजखान को पुलिस की एंटी नारकोटिक्स सेल ने प्रतिबंधित ड्रग्स रखने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया।

- चीन हांगकांग के बीच बना दुनिया का सबसे लंबा समुद्री पुल जनता के लिए खोल दिया है।

■ **24 अक्टूबर**

- जयपुर पुलिस ने शहर में करीब 1 करोड़ की कीमत के हाथी दांत को पकड़ा पुलिस ने 6 किलो 165 ग्राम हाथी दांत बरामद किए हैं।

-श्रीनगर शहर के सुतु कोठर बाग (नौगाम) में सुरक्षा बलों ने मकान में छिपे हिजबुल मुजाहिदीन के दो स्थानीय आतंकियों सब्जार अहमद और आसिफ अहमद गोजरी को मार गिराया।

- पेरिस में एक अपार्टमेंट से शेर का शावक बरामद किया गया है इस मामले में 30 साल के एक युवक को गिरफ्तार किया गया है।

■ **25 अक्टूबर**

- हांगकांग में नीरव मोदी की 255 करोड़ रूपये की सम्पत्ति जब्त की।

- भारतीय मूल के नील चटर्जी को अमेरिकी राष्ट्रपति ने संघीय उर्जा नियामक आयोग का प्रमुख बनाया।

श्रीनगर : कश्मीर में बारामूला जिले में करीरी में मुठभेड़ सहित अन्य मुठभेड़ों में 6 आतंकी ढेर हुए।

■ **26 अक्टूबर**

- पाकिस्तान की इमरान सरकार ने आंतकी मुफ्ती सईद के संगठन जमाद-उद-दावा और फलाह ए इंसानियत से प्रतिबंध हटाया।

-सुप्रीम कोर्ट ने सीबीआई प्रमुख आलोक वर्मा कोई राहत नहीं दी सी बी सी को जाँच के आदेश दिये।

- बंदायू: जिले के रसूलपुर में स्थित पटाखा फैक्ट्री में आग लगने से 8 की मौत हुई।

■ **27 अक्टूबर**

- श्रीलंका के राष्ट्रपति मैत्री पाला सिरी सेना ने 16 नवम्बर तक संसद को निलम्बित किया।

-एस के मिश्रा ई डी के नये प्रमुख बने।

- 19 साल राकांपा में रहे तारिक अनवर कॉंग्रेस में वापिस लौटे।

■ **28 अक्टूबर**

- इसरो के पूर्व प्रमुख माधवन नायर भाजना में शामिल हुए।

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जापान यात्रा पर गये जापान के प्रधानमंत्री शिंजो आबे का साथ 8 घंटे रहे।

- इन्दौर द्वारकापुरी थाना क्षेत्र से 5 वर्षीय बच्ची के साथ दुष्कर्म हत्या करने वाला हनी गिरफ्तार हुआ।

■ **29 अक्टूबर**

- इंडोनेशिया लाईन एयर का विमान जे टी 610 समुद्र गिरा 189 लोग सवार थे 8 विमानकर्मी

-म.प्र. हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस हेमंत गुप्ता सुप्रीम कोर्ट के जज बने।

- श्रीलंका के नये प्रधानमंत्री महेन्द्र राजपक्षे बने।

■ **30 अक्टूबर**

- दांतेवाड़ा (छ.ग.) चुनावी हाल लेने पहुँचे पत्रकारों पर नक्सली हुआ कैमरा मेन सहित 3 की मौत हुई।

- जे.यू ने 123 कश्मीरी छात्रों के रिकार्ड सी.आई. डी. को सौंपी।

-मुरैना बाल सुधार गृह की दीवार तोड़कर 5 अपचारी भागे।

■ **31 अक्टूबर**

- आई टी बीपी (भारतीय तिब्बत सीमा पुलिस के महानिदेशक एस.एस. देशबाल बने)

- सरदार बल्लभ भाई पटेल की स्टैच्यू ऑफ यूनिटी का लोकार्पण प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने केबडिया (गुजरात) में किया।

- मद्रास हाईकोर्ट ने ऑनलाईन दवा बिक्री पर रोक लगाई।

इसे भी जानिये

विश्व के प्रसिद्ध जलप्रपात

क्र.	जलप्रताप	देश	ऊँ (मी.)
1.	एंजिल	वेनेजुएला	979
2.	योसेमारट	कैलिफोर्निया	739
3.	द. मर्डाल्फोसेन	नार्वे	655
4.	तुगेला	द. अफ्रीका	614
5.	कुकवेनन	वेनेजुएला	610
6.	सूयरलैण्ड	न्यूजीलैण्ड	580
7.	रिब्बोन	कैलिफोर्निया	491
8.	गेट कामारना	गुयाना	488
9.	डेल्ला	कनाडा	440
10.	गवर्नी	फ्रांस	422
11.	जोग (गरसोप्पा)	भारत	255
12.	नियाग्रा	कनाडा एवं अमेरिका की सीमा पर	120

कविता

जलती रही जिन्दगी

❊ ऐलक सम्यक्त्व सागर (समाधिस्थ) ❊

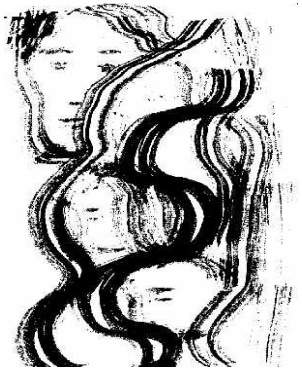

चिराग की तरह जलती है जिन्दगी ।
उम्र के ढलान पर ढलती है जिन्दगी ॥
मुझसे क्यों पूँछते हो इबारत इस जीवन की ।
साँसों के प्याले में उफनती है जिन्दगी ॥
सुख दुख की बगिया में काँटे गुलाब है ।
दोनों में एक सी महकती है जिन्दगी ॥
कभी हुई मुफलिस तो कभी हुई तवंगर ये ।
मरघट में राख सी उड़ती है जिन्दगी ॥
गीत मेरे अधबुने अंधरों से लौटते ।
ढलती हुई सांझ में गजल पढ़ती है जिन्दगी ॥

दिशा बोध

योग्य पुरुषों की मित्रता

1. जो लोग धर्म-करते वृद्ध हो गयेहैं, उनकी तुम भक्ति करो तथा उनकी मित्रता प्राप्त करने का यत्न करो।
2. तुम जिन कठिनाईयों में फँसे हुए हो, उनको जो लोग दूर कर सकते हैं और आने वाली बुराईयों से जो लोग तुम्हें बचा सकतेहैं, तुम उत्साह पूर्वक उनके साथ मित्रता करने की चेष्टा करो।
3. यदि किसी को योग्य पुरुषों की प्रीति, (वात्सल्य) और सेवा भक्ति मिल जाये, तो यह महान् सौभाग्य की बात है।
4. जो लोग तुमसे अधिक योग्यता वाले हैं, वे यदि तुम्हारे मित्र बन गये हैं, तो समझो तुमने ऐसी शक्ति प्राप्त कर ली है, जिसके सामने अन्य सब शक्तियाँ तुच्छ हैं ।
5. मंत्री ही राजा की आंखे हैं, इसलिए उनके चुनने में बहुत ही समझदारी और चतुराई से काम लेना चाहिए।
6. जो लोग सुयोग्य पुरुष के साथ मित्रता का व्यवहार रख सकते हैं, उनके बैरी उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकेंगे।
7. जिस आदमी को ऐसे लोगों की मित्रता का गौरव प्राप्त है, जो उसे डाँट-फटकार सकते हैं, उसे हानि पहुँचाने वाला कौन है ?
8. जो राजा ऐसे पुरुषों की सहायता पर निर्भर नहीं रहता, जो समय पर उसको झिड़क सकें, शत्रुओं के न रहने पर भी उसका नाश होना अवश्यम्भावी है।
9. जिनके पास मूलधन नहीं है, उनको लाभ नहीं मिल सकता। ठीक इसी तरह प्रामाणिकता उन लोगों के भाग्य में नहीं होती, जो बुद्धिमानों की अविचल सहायता पर निर्भर नहीं रहते।
10. बहुत से लोगों को शत्रु बना लेना मूर्खता है, किन्तु सज्जन पुरुषों की मित्रता को छोड़ना उससे भी कहीं अधिक (मूर्खता) बुरा है।

प्रतिष्ठा पितामाह पं. गुलाबचन्द्र जी पुष्प की जीवन कृति नवागढ़

❊ प्रो. डॉ. भागचन्द्र जैन भागेन्दु ❊

संस्कृति के प्राणतत्व **तीर्थ संरक्षण** को भारतीय संस्कृति का आधार स्तम्भ मानकर इस व्रत के -सर्वतो भावेन सम्यक् परिपालनार्थ अहर्निश दत्तावधान प्रतिष्ठारत्नाकर, प्रतिष्ठा पितामह महान् मनीषी श्रद्धेय पं. गुलाबचन्द्र जी जैन पुष्प टीकमगढ़ (म.प्र.) अब हमारे बीच सशरीर नही हैं , किन्तु उनकी एक महनीय जीवन्त कृति विद्यमान है - **श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र नवागढ़ (नन्दपुर) नावई, जिला ललितपुर (उ.प्र.)।**

प्रकृति के झञ्झावतों , प्राकृतिक और राजनैतिक प्रकोपों -सांस्कृतिक परिवर्तनों आदि से घोर उपेक्षित/अपरिचित इस स्थल की सबसे पहले सुध लेने वालों में अग्रगण्य हैं। प्रतिष्ठाचार्य पं. गुलाबचन्द्र जी पुष्प। वस्तुतः यह स्थल सन्तों की पुरातन साधना स्थली है।

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र **नवागढ़** जैन धर्म के 18वें तीर्थंकर भगवान अरनाथ स्वामी के अतिशय सम्पन्न होने के साथ सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसका इतिहास शास्त्रों , पुराणों एवं किवंदतियों में परे है। इस क्षेत्र में उपलब्ध शिलालेख एवं प्रशस्तियों में इसकी प्राचीनता जहाँ संवत् 1180 (सन् 1123 ई.) है, वहीं शिल्प एवं पुरासम्पदा की कलाकृतियाँ इसके 9वीं सदी से पूर्व की साक्षी है। इस परिक्षेत्र के शैलाश्रय और शैल चित्र प्रागैतिहासिक हैं।

आदरणीय ब्रह्मचारी पं. जयकुमार जी निशांत जिन ने स्वेच्छा से शासकीय सेवा से सेवानिवृत्ति लेकर आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज से ब्रह्मचर्य व्रत लिया, अपने पिता प्रतिष्ठा पितामह पं. गुलाबचन्द्र जी पुष्प की प्रतिष्ठा अनुष्ठान की धरोहर को सहेजकर 200 पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव सम्पन्न कराने का गौरव प्राप्त किया है। आपने 900 वर्ष प्राचीन नवागढ़ क्षेत्र के संवर्धन का संकल्प लेकर इसकी मौलिकता एवं शिल्पकला को संरक्षित रखते हुए विकास कार्य सम्पन्न कराया है।

आदरणीय ब्र. पं. निशांत जी ने नवागढ़ के सरपंच श्री रामनारायण यादव के साथ अनेक माह दिन-दिनभर क्षेत्रीय बीहड़ एवं पर्वतों पर भ्रमण करके कई ऐतिहासिक साक्ष्य प्राप्त किये हैं । आपने एक **शैलाश्रय में** अतिप्राचीन **प्राग् ऐतिहासिक शैलचित्र** खोजे हैं, इनमें से अधिकांश काल कवलित होकर केवल रंग के धब्बे एवं लकीरें मात्र शेष रह गये हैं, शेष बचे चित्र प्राकृति क परिवेश, धार्मिक प्रभावना एवं साधना स्थलों का संकेत कर रहे हैं।

आदरणीय ब्र. पं. निशांत जी इतिहास की कड़ियों को जुटाने में स्थानीय वरिष्ठजनों शिल्पविद्, कलाविद्, इतिहासविदों को सतत् इस क्षेत्र पर लाने का सम्यक् पुरुषार्थ कर रहें है। इनमें पुराविद्या विशेषज्ञ पं. नीरज जी सतना, प्रसिद्ध प्रतिमाविज्ञानी डॉ. कस्तूरचंद जी सुमन, प्रशस्तिवाचक **डॉ. भागचन्द्र जी भागेन्द्रु इतिहास एवं कलाविद्** डॉ. ए.पी.गौड-पुरातत्व अधिकारी लखनऊ, डॉ. एस. के. दुबे पुरातत्त्व अधिकारी झाँसी, डॉ. के.पी. त्रिपाठी एवं श्री हरिविष्णु अवस्थी, इतिहासविद्, डॉ. स्नेहरानी जैन, एवं डॉ. मसकूर अहमद

शिल्पकला एवं शैलचित्र विशेषज्ञ डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर, क्योंकि बायीं ओर से दायी ओर क्रमशः साधना के वृद्धिगंत आयामों को दर्शाया गया है जहाँ साधक वसतिका में सल्लेखना धारण करके आत्मशक्ति का विकास करते हुए पंच महाव्रतों को धारण करके चारों आराधनाओं से कषाय को कृष करके अहिंसा धर्म की चतुर्दिक प्रभावना करके सप्त परम स्थान के श्रेष्ठवाद मोक्ष अर्थात् निर्वाण को प्राप्त करता है।

आदरणीय ब्र. पं. जयकुमार निशांत द्वारा खोजे गये शैलाश्रय प्रागैतिहासिक शैलचित्र-जैन धर्म की प्राचीनता, जैन जीवन पद्धति, साधना एवं मृत्यु महोत्सव की पुरातन परम्परा के साथ नवागढ़ की समृद्धिशाली जैन संस्कृति के संस्थापक जैन शासक की प्रतिमा इसे विशेष साधना निर्वाण भूमि के रहस्यों को उद्घाटित करने वाले हैं।

वस्तुतः आदरणीय ब्र. पं. निशान्त जी का सतत् जागरूक पुरुषार्थ नवागढ़ क्षेत्र को भारतीय संस्कृति, कलाशिल्प एवं पर्यटन का विशेष रूप प्रदान करेगा, जिससे सम्पूर्ण विश्व इस क्षेत्र पर आकर रहस्यमय सूत्रों को उद्घाटित कर आत्मशांति प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त कर सकेगा ।

इस परिक्षेत्र के शैलचित्रों एवं शैलाश्रयों की प्राचीनता और कलावशेषों का सम्यक् अध्ययन इस क्षेत्र के सांस्कृतिक इतिहास को किस शताब्दी तक ले जाता है ? प्रतीक्षित है। शासन एवं प्रशासन का ध्यान इन शैलाश्रयों तथा शैल चित्रों के संरक्षण और कला प्रेमियों - मर्मज्ञों-मनीषियों का ध्यान इनके अध्ययन-अनुशीलन की ओर प्रार्थित है। कहीं ऐसा न हो कि यहाँ के शैल-चित्र भी अतीत की स्मृतियों को समेटे काल के क्रूर थपेड़ों में विलीन हो जायें। या आधुनिक संसाधनों द्वारा भवन, सेतु, मार्ग आदि के निर्माण हेतु बोल्डर, गिट्टी बनकर हमेशा के लिए विनष्ट हो जाँय।

प्रकृति की गोद में समाये, इतिहास, संस्कृति, कला और पुराविद्याओं के महत्वपूर्ण इस विस्मृत, अध्याय को प्राण-पण से पुनरूज्जीवित करने वाले उन महामनीषी (स्व.) प्रतिष्ठाचार्य पं. गुलाबचन्द्र जी पुष्प को कोटि कोटि नमन। और उनके दायाद को न केवल सुरक्षित प्रत्युत कोटि-गुणित अधिक सम्वर्द्धित कर विश्वस्तर पर सुप्रतिष्ठित करने वाले नवागढ़ क्षेत्र के सभी कार्यकत्ताओं का सम्यक् पुरुषार्थ एवं आदरणीय बाल ब्रह्मचारी प्रतिष्ठाचार्य पं. जय निशान्त जी का सतत् जागृत सार्थक समर्पण शतशः अभिनन्दनीय है। उनकी लक्ष्य-भेदी साधना श्रमण संस्कृति के गौरवपूर्ण अतीत के साथ मध्यकालीन साधना के अनुद्घाटित अध्यायों को सम्पुष्ट करके **चेदि जनपद** के इस सम्पूर्ण परिक्षेत्र की समृद्धि को रूपायित कर सकेगी।

इस तीर्थ के प्रणेता श्रद्धेय पं. (स्व.) गुलाबचन्द्र जी पुष्प की सहजता, सरलता, सर्व सुलभता, सतत् जागरूकता आर्षमार्गीय सिद्धांतों में सुदृढ़ निष्ठा निर्भीक, जीवन शैली, और प्रातिभ व्यक्तित्व को प्रागैतिहासिक निधियों को अपनी क्रोड में संजोये यह नवागढ़ अतिशय क्षेत्र युग-युगों तक स्मरण कराता रहेगा।

ऐसे मन्सवी व्रती, मनीषी, प्रतिष्ठा पितामह श्रद्धेय पं. पुष्प जी का चिरवियोग श्रमण संस्कृति और समाज की अपूरणीय क्षति है। उनकी पावन स्मृति को कोटि कोटि नमन।

आओ सीखे : जैन न्याय

भारतीय दर्शन: विपर्यय ज्ञान की विभिन्न अवधारणायें

दर्शनों की दृष्टि में जहाँ प्रमाण प्रासांगिक होता हैं वही मिथ्या ज्ञान भी विचारणीय हैं मिथ्याज्ञान को तीन रुप में देखा जाता है 1. संशय/संदेह,2.विपर्यय/विपरीतता 3. अनिश्चितता/अनध्यवसाय इनमें विपर्यय को लेकर कई दर्शनों ने अपनी–अपनी अवधारणायें अलग–अलग नाम से प्रस्तुत उनमें कुछ अवधारणाये निम्न हैं –

1. विवेकख्याति– प्रभाकर मीमांसक विपर्यय ज्ञान में विवेकख्याति को स्वीकार करते हैं उनकी अवधारणा है कि सीप में यह चाँदी है यह एक ज्ञान नहीं है किन्तु दो ज्ञान है एक प्रत्यक्ष दूसरा स्मरण ज्ञान। इसे ही स्मृति प्रमाण कहते हैं।

2.अख्यातिवाद – चार्वाक मत वाले विपर्यय ज्ञान को अख्याति के रुप मानते हैं, उनका कहना है सीप में यह चाँदी है, इस ज्ञान का विषय चाँदी तो नहीं है। इस ज्ञान में कुछ भी प्रतिभासित नहीं होता इसलिये इसे अख्याति कहते हैं।

3. असत्–ख्यातिवाद– बौद्धदर्शन की सौत्रान्तिक माध्यमिक शाखा के अनुयायी विपर्ययज्ञान को असत्ख्याति बाद मानते हैं। उनके अनुसार ज्ञान में असत् का ही प्रतिभास होता है।

4. आत्मख्यातिवाद– बौद्ध दर्शन की योगाचार शाखा के अनुयायी विपरीत ज्ञान को आत्मख्याति कहते हैं। जो अविद्या वासना के बल से बाहर में प्रतिभासित होता है वह ज्ञान का ही आकार है। इसे ही आत्मख्याति कहते हैं ।

5. प्रसिद्धार्थ ख्यातिवाद– सांख्यदर्शन विपर्ययज्ञान प्रसिद्धार्थ ख्याति को मानता है। उनका कहना है कि विपर्यय ज्ञान में प्रसिद्धार्थ का ही प्रतिभास होता है। इसलिये यह प्रसिद्धार्थ ख्याति है।

6.अनिर्वचनीय ख्यातिवाद – ब्रह्म अद्वैतवाद विपर्यय ज्ञान में अनिर्वचनीयार्थ ख्याति मानते है। यह सीप में चाँदी है इसे वचनों से कहना शक्य नहीं है।

7. आलौकिक ख्यातिवाद – कुछ दार्शनिक विपर्यय ज्ञान में आलौकिकार्थ ख्याति के रुप में मानते हैं अन्य ख्यातियों ठीक नहीं लगती इसलिये आलौकिक ख्याति अर्थ मानना चाहिये।

8.विपरीतार्थ ख्यातिवाद – विपरीत ख्याति न मानने वाले दार्शनिकों का कहना है कि इस तरह कैसे विचार करने पर तो विपरीत ख्याति भी नहीं टिकती।

कहानी

ऐसा क्या होता है

आसमान में तारे टिमटिमा रहे थे चन्द्रमा धीरे धीरे आसमान में ऊपर उठता जा रहा था ठण्डी ठण्डी हवायें वातावरण को शीतल बनाये हुई थी हवा के झोकों से पेड़ और लतायें हो ले-हो ले हिल रही थी नदी का पानी धीरे-धीरे सरक रहा था चन्द्रमा की परछाई नदी के पानी पर ऐसे लग रही थी जैसे कोई सुन्दर पुरुष नदी में स्नान करने उतर गया हो खेतों से लड़ईयों की आवाज आ रही थी तो कभी बीच-बीच में चकवा चकवी आबाज (ध्वनि) निस्तब्धता को चीर रही थी छोटे से कसबे गोरा में चारों तरफ सन्नाटा छाया था लोग ठण्ड के कारण पहले पहर में ही राजाईयों में दुपक कर सो गये थे अंधेरे में चन्द्रमा का प्रकाश कसबे के मकानों पर अपना साम्राज्य धीरे धीरे जमा रहा था ऐसे लग रहा था मनो कोई वीर पुरुष चारों तरफ से जिस तरह से किसी युद्ध के द्वारा अपने साम्राज्य का विस्तार करता है इसी तरह चन्द्रमा भी अपने अधिकार का विस्तार कर रहा था।

अशोक नगर जिले के गोरा गांव कस्बे में एक राजेन्द्र शर्मा नाम का संभ्रात किसान रहता था जिसकी कस्बे में बहुत प्रतिष्ठा थी । राजेन्द्र अपने उसूलों का बहुत पक्का था । हट्टा खट्टा गोरा राजेन्द्र जिसके होठो पर काली छल्लेदार मूछें सदैव शोभायमान होती थी । राजेन्द्र का स्वभाव बहुत मिलनसार था । उसका कोई भी दुश्मन नहीं था। राजेन्द्र की संध्या नाम की सुन्दर धर्म पत्नी थी। राजेन्द्र जितना सीधा साधा और संतोषी था संध्या उतनी ही तृष्णालु और खर्चीली थी राजेन्द्र सदैव अपनी तुलना गरीब लोगों से करता था और संतोष करता था कि मैं इनसे तो अच्छा हूँ। क्योंकि ये बेचारे हमारे खेत में काम करते हैं इनके पास गुजारा करने के लिए ही पैसा आता है। मेरे पास अपना खुद का मकान है लगभग (90) नब्बे एकड़ खेती है साथ ही आधुनिक खेती के लिए सभी उपकरण और ट्रेक्टर भी है और इसके आगे क्या चाहिए लेकिन संध्या को इन सब बातों मे संतोष नहीं होता था। वह राजेन्द्र से सदैव गोरा गांव छोड़कर किसी शहर में बसने की बात कहती थी। लेकिन राजेन्द्र एक ही बात कहता था जो सुख शांति और आनन्द मुझे गोरा गांव में मिलता है वह सुख शांति और कही नहीं मिल सकता है।

रात के 12 बारह बज चुके थे संध्या एक नींद पूरी कर चुकी थी लेकिन राजेन्द्र को नींद नही आ रही थी वह सिर्फ करवट बदल रहा था। राजेन्द्र ने प्यास लगने पर घड़े में से पानी निकाला खटपट की आवाज सुनकर संध्या ने पूछा आप अभी तक क्यों नहीं सोये ?क्या बात है ? राजेन्द्र ने कहा कि आज मुझे ना जाने नींद क्यों नही आ रही है तब संध्या ने कहा हूं हूं समझ गई किसी की याद में तुम्हें नींद नहीं आ रही होगी तब राजेन्द्र ने कहा अरी पगली तू भी क्या क्या सोचती है।

मुझे तेरे रहते किसी की याद क्या आयेगी ? मैं तो संतोषी प्राणी हूँ। आज मैं जीता हूँ खाता हूँ पीता हूँ मस्त रहता हूँ। और भगवान का जाप करता हूँ। संध्या ने इस पर बक्र हँसी तैराते हुए राजेन्द्र से कहा तो फिर ये बताओं आखिर आपको नींद क्यू नहीं आ रही है ? जिस तरह से तुम सोचती हो उस तरह मैं नहीं सोचता हूँ। संध्या ये जिंदगी कुछ और ही होती है। क्योंकि मैं दूसरे की स्त्री को अपनी मां के बहन व बेटी के समान समझता हूँ । क्योंकि जिन्दगी सिर्फ भोग और विलासता के लिये नहीं होती है कुछ कर्त्तव्य निर्वाह के लिए होती है। हर आदमी के समाने चार कर्त्तव्य होते है सबसे पहले राष्ट्रीय कर्त्तव्य होता है। इसके बाद सामाजिक कर्त्तव्य होता है । व पारिवारिक कर्त्तव्य होता है और इसके बाद व्यक्तिगत आध्यात्मिक कर्त्तव्य होता है जो इन कर्त्तव्यों का पालन करने की बात सोचने लगता है। उसकी नींद कभी भी खो सकती है सर्वप्रथम व्यक्ति के लिए अपने इस जीवन से हटकर दूसरे जीवन के बारे में भी सोचना चाहिए। बहुत सारे लोग सोचते हैं खाओ पीओ व एस करो कर्ज लेकर के भी माल मसाला खाओ मर जायेंगे सब कुछ यहीं रह जायेगा परन्तु संध्या मैं दूसरी बाता सोचता हूँ तुमने कभी सोचा हो या न सोचा हो पर मैं तो जरूर सोचता हूँ और मेरा अनुभव कहता कि जितने लोगों के पास भी विरासत की सम्पत्ति रहती है उनकी सारी सम्पत्ति उन्हें भोग विलासता व व्यसन की ओर ले जाती है और वे अपने जीवन का निर्वाह करने में ही अपनी पूरी बुद्धि लगा देते हैं पर जीवन निर्माण नहीं कर पाते हैं।

संध्या राजेन्द्र की पूरी बात सुनाती रही फिर बोली कि आपने दुनिया भर का प्रवचन तो दे दिया पर ये नहीं बताया कि आपको नींद क्यों नही आयी । संध्या कि बात सुनकर राजेन्द्र कुछ देर चुप रहा परन्तु संध्या के आग्रह के सामने उसे कुछ न कुछ तो बोलना बहुत जरूरी था। उसे यह बताना भी जरूरी था कि उसे नींद क्यों नही आ रही है परन्तु राजेन्द्र यह नहीं समझ पा रहा था कि अपनी बात संध्या के सामने कैसे रखे एक ओर लालची संध्या और दूसरी ओर मैं समस्या छोटी नहीं थी राजेन्द्र शर्मा के बैंक खाते में सैतीस हजार रूपये आ चुके थे और बैंक मैनेजर व कैशियर से भी समझने का प्रयास किया था परन्तु सबने एक ही बात कही कि शर्मा जी आप इतने तनाव में क्यों आ रहें है अरे आपके पास तो कुछ लक्ष्मी आई ही है। आपकी गई तो नहीं है इसमें इतना क्या सोचना आना कल फिर हम बता देंगे आजकल नौकर शाही का जमाना है। कहीं कोई गलती हो गई होगी

और आपके खाते में रकम आ गई आप क्यों इतना बोझ ले रहे हो ? मैनेजर ने सब कुछ समझाया भले ही किन्तु मेरे गले के नीचे यह बात उतरना चाहिए यही बात सोचकर जब राजेन्द्र चुप रहा तो संध्या ने फिर धीरे से हाथ का धक्का देते हुए कहा क्यों क्या हो गया आप मुझे क्यों नही बता रहे हैं अपने मन की बात अपनी पत्नी से छुपाना कोई अच्छी बात नहीं है एक अच्छी पत्नी के लिए अपने पति के पूरे दुख सुख की चिंता होती है और जब पति किसी भी चक्रव्यु में कभी भी उलझ जायें तो पत्नी का कर्त्तव्य होता है कि वो अपने पति को चक्रव्युह से बाहर निकालकर अपनी सूझ-बूझ का परिचय दे संध्या की तरफ राजेन्द्र ने मुस्कुरा कर कहा लगता है तुम्हारे ऊपर कल की सुनी रामकथा का प्रभाव पड़ गया है व तुमने मुझे दशरथ व खुको कैकई समझ लिया है मैं अभी इतनी बड़ी समस्या में तो नहीं उलझा हूँ कि जो आपके सूझ-बूझ की जरूरत पड़े हां लेकिन इनता अवश्य है कि मेरे सामने सिर्फ सत्यमेव जयते का सूत्र वाक्य राक्षस प्रश्न उत्पन्न कर रहा है वह कह रहा है झूठ व चोरी से हर आदमी को सम्पन्नता सुविधा मिल सकती है किन्तु झूठ चोरी से मेरा वैभव विलासता तो मिल सकती है परन्तु एक पल के लिए भी वह सुख शांति नहीं दे सकती है। झूठ चोरी के सहारे मिला हुआ वैभव स्थायी नहीं रहता है बल्कि कई पीढ़ियों तक की नीति व नियत को सही रास्ते से भटका देने के कारण बरबादी का ही साम्राज्य प्राप्त होता है।

संध्या ने कहा आप मुझे सिर्फ इतना बता दो कि आप किस समस्या में उलझे हो यदि मैं आपका सहयोग कर पाऊँगी तो मैं अपने आपको धन्य मानूंगी और यदि आपकी आंखों में नींद आ गयी तो मैं अपने आप को सफल मानूंगी राजेन्द्र ने विवश होकर अपनी अर्द्धांगिनी संध्या को नींद नहीं आने का असली कारण बताना प्रारंभ किया कि स्टेट बैंक के खाते में सैतीस हजार रूपया भावत्तर योजना के आ गये हैं जब मैने उड़द बेचे ही नहीं तो फिर मुझे सैतीस हजार रूपये किस बात के मिल गये ? इस बात का सहीं जबाब न तो कोई बैंक का कर्मचारी दे रहा है न कोई मण्डी का अधिकारी इसी समस्या ने मेरी नींद छीन ली है। संध्या ने जोर से ठहाका लगाकर कहा वाह आप भी कौन सी दुनिया में जी रहे हैं अरे भाई आपको तो फायदा ही हुआ है नुकसान तो नहीं हुआ है आप रखो अपना कोई काम निकाल लेना।

राजेन्द्र ने कहा बस मुझे तुमसे यही खतरा था कि तुम यही कहोगी कि आयी लक्ष्मी ठुकराओ मत। परन्तु संध्या तुम यह भूल जाती हो कि जुआ में हारना जितना बुरा नहीं होता है उससे बहुत अधिक यह सैतीस हजार की रकम मेरी बर्बादी का कारण बनेगी मैं इसे स्वीकार नहीं कर सकता हूँ और में कल इसे मंडी में जमा करू दूंगा दूसरे दिन राजेन्द्र शर्मा ने सैतीस हजार रूपये मण्डी में जमा कर दिये राजेन्द्र शर्मा की कहानी सभी समाचार पत्रों में छपी और लिखा ऐसा क्या हुआ।

आचार्य नेमीचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती का व्यक्तित्व और कृतित्व

❊ डॉ. मधु जैन ❊

व्यक्तित्व- आचार्य नेमीचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती षट्खण्डागम के परगामी विद्वान थे। कर्मकाण्ड की गाथा से विदित होता है कि नेमीचन्द्राचार्य ने षट्खण्डागम की पूर्ण साधना की थी।

जह चक्केण य चक्की छकखंड साहित्यं अविग्घेण।
तह मइ-चक्केण मया छक्खंडं साहित्यं सम्मं।।1।।

जिस प्रकार चक्रवर्ती अपने चक्ररत्न के द्वारा षट्खण्ड भरत क्षेत्र को किसी विघ्न-बाधा के बिना ही साधित करता है, उसी प्रकार मैंने भी अपनी बुद्धिरूपी चक्र के द्वारा जीवट्ठाण, खुद्दाबन्ध बन्ध स्वामित्व विचय, वेदना, वर्गणा और महाबन्ध इन छः खण्डों से युक्त परमागम को अच्छी तरह साधित किया है। उसका अध्ययन किया है।

अतः आचार्य नेमीचन्द्र सिद्धांत चक्रवर्ती पद से विभूषित थे।

जीवन परिचयः आचार्य नेमिचन्द्र देशीय गण के थे । उन्होंने कर्मकाण्ड में अभयनन्दि, वीरनन्दि, और इन्द्रनन्दि को अपना गुर बतलाया है।

जस्वे य पाय पसायेण णंतसार जल हिमुत्तिण्णो।
वीरिदंनंदि वच्छो णमामि तं अभयणंदि दि गुरुं।।2।।
णमिरूण अभयणंदिसुदसायरपारगिंदणंदिगुरुं।
वर वीरणंदिणाहं पयडीणं पच्चयं बोच्छं।।3।।

उक्त गाथाओं में स्पष्ट है कि आचार्य नेमिचन्द्र के अभयनन्दि दीक्षा गुरु थे और वीरनंदि तथा इन्द्रनंदि विद्या गुरु थे। अभयनंदि गुरु के पादप्रसाद से इन्होंने अपने आपको अनन्त संसार समुद्र से उत्तीर्ण हुआ प्रकट किया है और इन्द्रनंदि तथा वीरनंदि को श्रुतसागर के पारगामी बताते हुए अपने आपको उनका वत्स बतलाया है।

कर्मकाण्ड के सत्त्वस्थान प्रकरण में इन्होंने

वर इंदणंदि गुरुणों पासे सोऊण सयल सिद्धंतं।
सिरिकणयणंदि गुरुणा सन्तट्ठाणं समुद्दिदट्ठं।।4।।

इस गाथा के द्वारा भी कनकनंदी का भी उल्लेख किया और उसमें बताया है कि इन्द्रनंदी गुरु के पास सकल सिद्धान्त को सुनकर श्री कनकनंदी गुरु ने सत्त्वस्थान का निरूपण किया है । इससे सिद्ध होता है कि कनकनंदी इनके सधर्मा अग्रज गुरु भाई थे । आरा के जैन सिद्धांत भवन में कनकनंदी आचार्य विरचित विस्तर सत्व त्रिभंङ्गी नामक ग्रंथ विद्यमान है । इसकी दो प्रतियां हैं-एक में 48 और दूसरी में 51 गाथाएं हैं । आचार्य नेमिचन्द्र ने कर्मकाण्ड में इस प्रकरण की 358 से 397 तक 40 गाथाएं बिना किसी परिवर्तन के इसी ग्रन्थ से ली है । और गाथा 396 में कनकनंदी का उल्लेख भी किया है । त्रिलोकसार के अन्त में भी इन्होंने-

इदि णेमीचन्दं मुणिणा अप्पसुदेणभयणंदि वच्छेण।
रइयोतिलोयसारोखमंतुतंबहुसुधाइरिया।।5।।

इस गाथा के द्वारा आचार्य नेमिचन्द्र ने

अपने आपको अभयनंदी का शिष्य घोषित किया है। इन्हीं अभयनंदी को चन्द्रप्रभ चरित्र के रचियता वीरनंदी ने भी अपना गुरु घोषित किया है । गंगनरेश राचमल्लदेव का प्रधान सचिव और सेनापति चामुण्डराव नेमिचन्द्राचार्य का भक्त शिष्य था। वह गोम्मट उपनाम से युक्त था । उसी की प्रार्थना पर नेमिचन्द्राचार्य ने षट्खण्डागम की विस्तृत चर्चाओं को जीवकाण्ड तथा कर्मकाण्ड के नाम से संकलित किया था । चामुण्डराय ने श्रवणबेलगोला की जगतप्रसिद्ध 57 फुट ऊँची बाहुबली की प्रतिमा का निर्माण कराया था। वह प्रतिमा चामुण्डराय के गोम्मट उपनाम के कारण गोम्मटेश्वर नाम से प्रख्यात हुई।

चामुण्डराय न केवल मंत्री या सेनापति थे, अपितु भवभ्रमण भीरू महान विद्वान भी थे। उनकी प्रशंसा में नेमिचन्द्राचार्य ने कर्मकाण्ड की प्रशस्ति स्वरूप बहुत लिखा है । चामुण्डराय ने अजितसेन गुरु के पास दीक्षा ली थी और जीवकाण्ड पर कर्नाटक भाषा में वृत्ति भी लिखी थी। इन्होंने चामुण्ड पुराण की रचना भी की थी। समाप्ति शक सम्मत् 900 विक्रम संवत् 1035 में हुई थी।

समय- चामुण्डराय ने अपना चमुण्डपुराण वि. सं. 1035 में पूर्ण किया। अतः उनके लिए निर्मित गोम्मटसार का सुनिश्चित समय विक्रम की 11वीं शताब्दी है । श्री मुख्यतार साहब और प्रेमी जी भी इसी समय को स्वीकार करते हैं।

गोम्मटसार कर्मकाण्ड में चामुण्डराय के द्वारा निर्मित गोम्मट जिन की मूर्ति का निर्देश है अतः यह निश्चित है कि गोम्मटसार की समाप्ति गोम्मट के अनुसार मूर्ति की स्थापना के पश्चात ही हुई है । बाहुबली चरित्र में गोम्मटेश्वर की प्रतिष्ठा का समय 13 मार्च सन् 1811 (विक्रम संवत् 1038) घटित होता है।

चामुण्डपुराण में चामुण्डराय ने मूर्ति स्थापना की कोई चर्चा नहीं की है, किन्तु गोम्मटसार कर्मकाण्ड में इसकी चर्चा की गई है।

अतः चामुण्ड पुराण की रचना के पश्चात् और गोम्मटसार की रचना के पूर्व मूर्ति प्रतिष्ठा हुई है, ऐसा जान पड़ता है।

इतिहास में गंङ्ग-नरेश राचमल्ल का समय विक्रम संवत् 1031 से 1041 तक माना गया है। इनके सचिव या सेनापति होने से चामुण्डराय का भी यही समय सिद्ध है और इन्हीं के समय आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रतर्वी हुए हैं। इसलिए इनका समय विक्रम की 11वीं शताब्दी का पूर्वाद्ध है।

कृतित्व- आचार्य नेमिचन्द्र आगम शास्त्र के विशेषज्ञ थे,इनकी निम्नलिखित रचनाएं उपलब्ध है-

1. गोम्मटसार-जीवकाण्ड, कर्मकाण्ड
2. त्रिलोकसार
3. लब्धिसार
4. क्षपणासार

1. गोम्मटसार- यह ग्रंथ दो भागों में विभक्त है- जीवकाण्ड और कर्मकाण्ड । जीवकाण्ड में 934 गाथाएं हैं और कर्मकाण्ड में 962 गाथाएं है । इस ग्रंथ पर दो संस्कृत टीकाएं भी लिखी गई है । 1. नेमिचन्द्र द्वारा जीव प्रदीपिका और 2. अभयचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती द्वारा मंदप्रबोधिनी । गोम्मटसार पर केशववर्णी द्वारा एक कन्नड़वृत्ति भी लिखि गई है । टोडरमल जी ने सम्यकज्ञान चन्द्रिका नाम की वचनिका लिखी है । वर्तमान में पं. खूबचन्द्र जी कृत लघु हिन्दी अनुवाद एवं जीवकाण्ड पर पं. रतनचन्द्र मुख्यतार कृत विस्तृत हिन्दी व्याख्या तथा कर्मकाण्ड पर

आदिमति माताजी द्वारा लिखित विस्तृत हिन्दी टीका भी उपलब्ध है । गोम्मटसार, षटखण्डागम की परम्परा का ग्रन्थ है।

जीवकाण्ड महाकर्म प्राभृत सिद्धान्त सम्बन्धी इसमें जीवस्थान, क्षुद्धाबन्ध, बन्धस्वामित्व, वेदनाखण्ड, और वर्गणाखण्ड इन पाँच विषयों का वर्णन है । गुणस्थान, जीवसमान, पर्याप्ति, प्राण, संज्ञा चौदह मार्गणा और उपयोग एवं 20 प्ररूपणाओं में जीव की अनेक अवस्थाओं का प्रतिपादन किया गया है।

जीवकाण्ड में जीवों का कथन किया गया है । 20 प्ररूपणाओं का कथन पंचसंग्रह के समान ही किया गया है। गोम्मटसार संग्रह ग्रंथ हे, इसमें सन्देह नहीं। जीवकाण्ड का संकलन मुख्यरूप से पंञ्चसंग्रह के जीवसमास अधिकार तथा षट्खण्डागम प्रथम खण्ड जीवट्ठाण के सत्यरूपणा नामक अधिकारों से किया गया है।

धवला ग्रन्थ में पंचसंग्रह की अनेक गाथाएँ शाब्दिक अन्तर के साथ मिलती हैं। अतः जीवकाण्ड की अधिकांश गाथाएं धवला टीका में मिलती हैं।

पंचसंग्रह की अपेक्षा जीवकाण्ड को गाथाओं में विशेषता भी प्राप्त होती है । पंचसंग्रह में 30 गाथाओं में गुणस्थानों का वर्णन है,जबकि जीवकाण्ड में 68 गाथाओं में गुणस्थानों का स्वरूप वर्णित है।

जीवकाण्ड- इस ग्रन्थ में 20 प्ररूपणाओं का परस्पर में अन्तर भाव सम्बन्धी कथन और प्रमादों के भंगों का निरूपण भी पंचसंग्रह की अपेक्षा विशिष्ट है। पंचसंग्रह में जीवसमास का कथन मात्र 11 गाथाओं में पर जीवकाण्ड में यह विषय 48 गाथाओं में निरूपित है । जीवकाण्ड में स्थान, योनि, शरीर की अवगाहना और कुलों के द्वारा जीवसमास का कथन भी विस्तारपूर्वक आया है। इस प्रकार का विस्तार पंचसंग्रह में नहीं मिलता। इसी प्रकार जीवकाण्ड में पंचसंग्रह की अपेक्षा प्रर्याप्ति, प्राण, संज्ञा आदि के स्वामियों आदि में विशेषताएं विद्यमान हैं।

कर्मकाण्ड- इस ग्रंथ में 9 अधिकारों में 972 गाथाएं है।

1. प्रकृति समुत्कीर्तन
2. बन्धोदय सत्व
3. सत्वस्थान भंग
4. त्रिचूलिका
5. स्थान समत्कीर्तन
6. प्रत्यम
7. भाव चूलिका
8. त्रिकरण चूलिका
9. कर्म स्थिति रचना

1. प्रकृति समुत्कीर्तन- इसमें प्रकृति का अर्थ आठों कर्म और उनकी उत्तर प्रकृति, घाति-अघाति कर्म, पुण्य-पाप प्रकृतियाँ पुद्गल विपाकी, जीव विपाकी, क्षेत्र विपाकी और भव विपाकी प्रकृतियाँ कर्म के निक्षेप योजना, कर्मों के नो कर्म आदि का कथन 56 गाथाओं में किया गया है।

2. बन्धोदय सत्वाधिकार- इसमें कर्मों के बन्ध, उदय सत्व के अन्तगर्त, गुणस्थानों एवं मार्गणा स्थानों में बन्ध, उदय सत्व योग्य प्रकृति यां अबंध अनुदय, असत्व योग्य प्रकृतियां तथा व्युच्छिति योग्य प्रकृतियों का निरूपण किया गया है। बंध के प्रकरण में प्रकृति बन्ध, स्थिति बन्ध, अनुभाग बन्ध और प्रदेश बन्ध का विस्तार से निरूपण है। उदय प्रकरण में उदीरणा का विवेचन भी गुणस्थानों एवं मार्गणाओं में किया गया है।

3. सत्वस्थान भंग- इस अधिकार में सत्वस्थान का भंगों के साथ कथन किया है। प्रत्येक गुणस्थान में प्रकृतियों के सत्वस्थान के कितने प्रकार संभव है, और उनके साथ जीव किस आयु को भोगता है, और परभव की किस आयु केा बाँधता है, यह सब विस्तार पूर्वक आया है।

4. त्रिकरण चूलिका- त्रिचूलिका अधिकार में तीन चूलिकाएं है- 1. नवप्रश्न चूलिका 2. पंचभागदार चूलिका 3. दशकरण चूलिका।

नवप्रश्न चूलिका में 9 प्रश्नों का समाधान है। पंचभागदार चूलिका में उद्वेलन विध्यात, अधा प्रवृत्त, गुणसंक्रम और सर्व संक्रम इन पाँच भागहारों का कथन आया है। दशकरण चूलिका में बन्धोदय आदि दश करणों का निरूपण किया गया है।

5. स्थान समुत्कीर्तन- इसमें एक जीव के एक समय में कितनी मूल एवं उत्तर प्रकृतियों का बन्ध, उदय अथवा सत्व संभव है, का कथन किया गया है। अर्थात् प्रत्येक मूल एवं उत्तर प्रकृतियों के बन्ध, स्थानों उदय स्थानों एवं सत्व स्थानों का कथन किया गया है।

6. प्रत्यय- इसमें बन्ध को मिथ्यात्व, अविरति, कषाय और योग, इन चार कारणों मूल और उत्तर प्रकृति यों में गुणस्थानों के अनुसार किया है।

7. भावचूलिका- इसमें औपशमिक, क्षायिक, क्षयोपशमिक औदयिक ओर पारिणामिक इन पाँच भावों तथा उनके और पर-संयोगी भंगो का गुणस्थानों में कथन किया गया है।

8. त्रिकरण चूलिका- इसमें अद्यः करणः अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण इन तीन करणों का स्वरूप कहा गया है।

9. कर्मस्थिति रचनाधिकार - इसमें प्रति समय बँधने वाले कर्म परमाणुओं का आठों में विभाजन होने के पश्चात प्रत्येक कर्म प्रकृति को प्राप्त कर्म निषेकों की रचना आदि का निरूपण किया गया है।

त्रिलोकरसार- इस महत्वपूर्ण ग्रंथ में 1018 गाथाएं हैं। यह करणानुयोग का प्रसिद्ध ग्रंथ है। इसका आधार तिलोयपण्णत्ती और तत्त्वार्थ वार्तिक है । ग्रंथ निम्नलिखित अधिकारों में विभक्त है।

1. लोक सामान्याधिकार
2. भवनाधिकार
3. व्यन्तरलोकाधिकार
4. ज्योतिर्लोकाधिकार
5. वैमानिकलोकाधिकार
6. नरतिर्यग्लोकाधिकार

1. लोक सामान्यधिकार- लोक सामान्य और नरक, सर्वधारा आदि 14 धाराओं का विवेचन, संख्यामान के संख्यात आदि 31 भेदों का विवेचन उपमामान के पल्य,सागर, सुच्चयंगुल, प्रतरांगुल जगच्छेणी धनांगुल, जगत्प्रतर लोक का स्वरूप, लोक का विस्तार आदि का निरूपण। नरक वर्णन के अन्तर्गत 63 गाथाओं में सात पृथ्वियों में उत्पन्न नारकी जीवों की आयु अवगाहन कष्ट तथा नरक गति में उत्पत्ति के कारणों आदि का विवेचन किया गया है।

शेष भवनाधिकार आदि अधिकारों में स्वनामानुसार विषय का प्रतिपादन किया है। त्रिलोकसार में प्रतिपादित ज्योतिर्लोक ज्योतिष की दृष्टि से बहुत उपयोगी है। इसके लगभग सभी प्रसंग वर्तमान में भी प्रासंगिक है।

जैन ज्योतिष का वैशिष्ट प्रतिपादित करता है। इसकी विषय वस्तु जन मानस तक

पहुंचने की अपेक्षा रखती है। त्रिलोकसार में आगत गणतीय सूत्रों का भी बहुत महत्व है। इस ग्रंथ की विस्तृत हिन्दी टीका परम विदुषी आर्यिका विशुद्धमति माताजी कृत उपलब्ध है। इसमें माधवचन्द्र त्रेविध देव संस्कृत टीका भी है।

लब्धिसार- इस ग्रंथ में 391 गाथाएं है। प्रथमोपशम सम्यक्तव उत्पन्न होने से पूर्ण पाँच लब्धियाँ होती है। तथा अनन्तानुलब्धि की विसंयोजना द्वितीयोपशम सम्यक्त्व, क्षायिक सम्यक्त्व, उपशम चारित्र व क्षायिक चारित्र से पूर्व तीनों करणलब्धि होती हैं। और सकलसंयम से पूर्व अघः करण और अपूर्व करण ये दो करण लब्धियां होता है । इन लब्धियों का कथन प्रस्तुत ग्रन्थ में विस्तार पूर्वक होने से इस ग्रन्थ का लब्धिसार नाम हैं।

लब्धिसार में क्षयोपशम विशुद्धि देशना प्रयोग्य एवं करण रूप पाँच लब्धियों का सविस्तार वर्णन करते हुए प्रथम तीन लब्धियों का स्वरूप मात्र एक-एक गाथा में ही किया है। प्रायोग्य लब्धि के अन्तर्गत 34 बन्धायसरण और उन अपसरणों में बन्ध से व्युटिछन्न होने वाली प्रकृतियों का कथन 15 गाथाओं में किया गया है। इसके पश्चात् सात गाथाओं द्वारा प्रायोग्लब्धि में उदय व सत्व योग्य प्रकृतियों का कथन किया है । तदनंतर करणलब्धि का विवेचन प्रारंभ करते हुए अघः करण अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण लब्धियों का कथन किया है। इसके पश्चात् उपशम सम्यक्त्व आदि के प्रकरण में होने वाले अनुभाग काण्डादि कालों का अल्पबहुत्व तथा प्रथमोपशम सम्यक्त्व से गिरने आदि का कथन है । पश्चात् दर्शनमोहनइीय कर्म की क्षपणा का कथन प्रारंभ करते हुए अनन्तानुबन्धी कषाय चतुष्य की विसंयोजना, मिथ्यात्व, सम्यगमिथ्यात्व और सम्यक प्रकृति के क्षय का विवेचन है तदनंतर देश संयम लब्धि, सकल संयम लब्धि, चारित्र मोहोपशम द्वितियोपशम सम्यक्त्व और श्रेणी आरोहण आदि का विस्तार से कथन किया गया है। लब्धिसार ग्रंथ पर एक संस्कृत टीका भी उपलब्ध होती है। जो आगास से प्रकाशित लब्धिसार में हिन्दी टीका उपलब्ध है।

क्षपणासार- इस ग्रंथ में 262 गाथाएं है। इन गाथायें में चारित्रमोह की क्षपणा का कथन होने अथवा आठों कर्मों की क्षपणा का कथन होने से इसका क्षपणासार सार्थक नाम है । क्षपणासार में चारित्र मोहनीय कर्म का क्षपणा का सविस्तार पूर्वक कथन करने के अनन्तर ज्ञानावरण, दर्शनावरण और अन्तराय इन घातिया कर्मों के क्षय का विधान बताते हुए नाम गोत्र ओर वेदनीय इन तीन अघातिया कर्मों के क्षय का विधान निरूपित किया गया है । इसके साथ ही केवली समुद्रघात, योगनिरोध अर्हन्त व सिद्ध भगवान के सुख का भी विवेचन किया गया है।

वर्तमान में इस ग्रंथ पर पंडित श्री टोडरमल कृत सम्यग्ज्ञान चंद्रिका नामक भाषा टीका, पं रतनचन्द्र मुख्तार द्वारा सम्पादित हिन्दी टीका तथा आर्यिका विशुद्धमति माताजी द्वारा लिखित हिन्दी टीका उपलब्ध है।

सन्दर्भ-

1. गोम्मटसार कर्मकाण्ड गाथा 397
2. वही गाथा 436
3. वही गाथा 785
4. वही गाथा 396
5. त्रिलोकसार गाथा 1018
6. गोम्मटसार कर्मकाण्ड गाथा 966-972
7. त्रिलोकसार प्रस्तावना पृ. 23

जैन धर्म के सम्बन्ध में प्रचलित भ्रान्तियाँ आगम के परिपक्ष्य में

❊ पं. सुखदेव जैन (सागर म.प्र.) ❊

जैन धर्म अनादि से है और अनन्त काल तक रहेगा द्रव्य क्षेत्र काल भाव से कुछ परिवर्तन नहीं । सूरज चाँद जैसे पहिले थे वैसे आज दिखते हैं सूरज पूर्व से उगता था और पश्चिम में डूबता है सो आज भी वही क्रिया है । यह संसार दो कालों में विभक्त है एक अवसर्षिणी और दूसरा उत्सर्पिणी एक में आयु बल बुद्धि शरीर की ऊँचाई ह्रास की ओर होती है तो उत्सर्पिणी में वृद्धि होती है । इन सबके चलते कुछ मत मतान्तरों में भेद देखने मिलता है परन्तु आगम के परिपेक्ष में कोई भ्रांन्तियाँ नहीं हैं कुछ स्वार्थी पद-लोलुप व्यक्ति की बनाई भ्रातियाँ हैं।

आज बाहुबली के बारे में ही भ्रांति प्रचलित है कि उनको शल्य थी कि मैं भरत की भूमि मैं खड़ा हूँ । यह भ्रांति आगम के परिपेक्ष में ठीक नहीं है क्योंकि तत्वार्थ सूत्र में उमा स्वामी ने निःशल्यो व्रती बोला है व्रती निशल्य होता है पं. रतन लाल मुख्तार व्यक्तित्व पृ 90 में शंका समाधान में एक प्रश्न आता।

प्रश्न- सुनते है कि बाहुबली मुनिराज के मन में यह शल्य थी कि भरत की भूमि पर खड़ा हूँ। इसी कारण एक वर्ष तक महान तपश्चरण करने पर भी केवल ज्ञान नहीं हुआ ?

उत्तर- श्री महापुराण के अनुसार तो बाहुबली मुनि के हृदय में यह रहता था कि भरतेश्वर अर्थात महाराज भरत मेरे द्वारा संक्लेश को प्राप्त हुए है अर्थात मैंने उनको कष्ट क्यों दिया ? और इसी कारण महाराज भरत के पूजा करते ही उनको केवल ज्ञान उत्पन्न हो गया।

भरत महाराज छह खण्ड जीतकर अपनी विजय प्रशस्ति ब्टषमा चल पर्वत पर लिखते हैं फिर घर की ओर बढ़ते हैं । घर में प्रवेश करते हैं पर चक्र-रत्न उनके महल में नहीं घुसता वह बाहर ही रह जाता है । चक्ररत्न क्यों महल में नहीं घुसा इस पर मंत्रियों ने बतलाया कि आपकी आधीनता आपके अनुज भाई बाहुबली ने स्वीकार नहीं की । बाहुबली झुकने को तैयार नहीं थे एक क्षत्रिय बिना युद्ध के कैसे आधीनता स्वीकार करे । अन्त में मंत्रियों ने सोचा कि युद्ध से नर संहार होगा अतः रास्ता निकाला गया कि ये दोनों ही के बीच दृष्टि युद्ध, जल युद्ध, और मल्ल युद्ध, हो जाए तो निकर्ष निकल सकता है । युद्ध होता है और तीनों युद्धों में बाहुबली ही विजयी होते हैं। युद्ध होकर भरत ने चक्ररत्न बाहुबली के उपर चला देते हैं आश्चर्य वह चक्ररत्न बाहुबली की तीन प्रदक्षिणा देकर उन्हीं के पास रूक जाता है । इस दृश्य को देखकर सभी राजा लोग भरत का धिकार देते हैं और बाहुबली की जयकारों से आकाश गुंजा देते हैं।

उसी क्षण बाहुबली इस नश्वर राज्य लक्ष्मी से विरक्त हो जाते हैं । बाहुबली क्षमा याचना कर भरत से अपना राज्य पुत्र महावली को सौंप कर स्वयं भगवान ऋषभदेव के चरणें की आराधना करते हुए जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण कर लेते हैं । वे उसी क्षण ध्यान में खड़े होकर एक वर्ष का प्रतिमा योग धारण कर लेते हैं। बाहुबली महायोगी राज ध्यान में खड़े हैं । उन्हें मनःपर्यय ज्ञान प्रगट हो गया है और उनके ऋद्वियां प्रगट हो चुकी हैं। अनेक विद्याधर आकर उनके चरणों की पूजा कर रहे थे । सर्पो ने उनके चरणों में वामी बना ली थी और चिडिया ने घोसले बना लिये थे । माधवी लतायें

उनकी भुजाओं तक पहुँच चुकी थी । दीक्षा लेते ही बाहुबली भगवान ने एक वर्ष का उपवास लेकर प्रतिमा योग धारण किया था वह उनका योग पूर्ण होने वाला था कि भरतचक्रवती आकर उनके चरणों में नमस्कार करके उनकी पूजा की थी। ततक्षण ही बाहुबली को केवलज्ञान प्रगट हो जाता है।

इसके पूर्व भरत से मुझसे क्लेश हो गया यह विकल्प उनके मन में हो जाया करता था अतः पूजा करते ही बाहुबली का मन निर्विकल्प हो गया और क्षपक श्रेणी पर आरोहण करके उन्होंने केवलज्ञान प्राप्त कर लिया था।

उसी क्षण देवों के द्वारा गंधकुटी की रचना हो जाती है और भगवान बाहुबली आकाश में 5000 धनुष जाकर कमलासन पर अधर में विराजमान हो जाते हैं। चक्रवती भरत का हर्ष का पार नहीं था। वे गंधकुटी में पहुंच कर भगवान बाहुबली की अतिशय पूर्ण सामग्री से महान आश्चर्य अतिशायों पूजा करते हैं । भगवान बाहुबली कुछ वर्षो तक पृथ्वी तल पर विहार कर अनंतर भगवान ऋषभदेव के समवशरण में पहुंच जाते हैं।

इससे सिद्ध होता है कि भगवान बाहुबली को शल्य नहीं थी पर विकल्प था कि भाई को क्लेश दिया है यह आगम के अनुसार सही है बाकी सब मिथ्या है।

क्षणिकायें

कमाते कमाते

❊ इन्द्रकुमार जैन शशीन्द्र (इन्दौर) ❊

कमाते कमाते,
खिलाते खिलाते,
सारा जीवन बिताया
अपने लिए कुछ करेगा ?
या जीते जी..... ?
छोटे थे बड़े हो गए
गिरे थे खड़े हो गए
दुनियाँ दारी देख ली
कबके आये थे ?
फिर ? अब कब ? कहाँ ..... ?
जिंदगी भर कमाया
तन से काम न आया
मन से कमाने आया
तब तक विनस गई काया
यही है संसार की ..... ?

हमारे गौरव

जैन सम्राट विमलादित्य

अम्म द्वितीय की पाँचवी पीढी में 1022 ई. के लगभग विमलादित्य नाम का राजा हुआ। वह भी जैन धर्म का परम भक्त था। देशी गण के आचार्य त्रिकालयोगी-सिद्धान्ति देव उसके गुरु थे। इस राजा ने अनेक जैन मन्दिरों को दान दिया। पूर्वोक्त रामगिरि भी 11वीं शताब्दी के मध्य पर्यन्त एक प्रसिद्ध एवं उन्नत जैन सांस्कृतिक केन्द्र बना रहा जैसा कि वहाँ से प्राप्त एक शिलालेख से प्रकट है। विमलादित्य के एक कन्नड़ी शिलालेख से यह ज्ञात होता है कि उक्त त्रिकालयोगी-सिद्धान्ति देव और सम्भवतया स्वयं वह राजा भी जैन तीर्थ रामगिरि की वन्दना करने गये थे। विमलादित्य के उपरान्त दो तीन अन्य राजा हुये और 11वीं शती ई. के अन्त तक वेंगि के इन पूर्वी चालुक्यों की सत्ता काभी अन्त हो गया तभी से उस प्रदेश में जैन धर्म का भी ह्रास होने लगा।

कविता

निशा का स्वप्न

❊ रचयिता -श्रीमति आसमाँ जैन (बांदकपुर) ❊

इस जीवन का हर क्षण-क्षण इस तन का हर कण-कण ।
हो प्रभु चरणों में अपर्ण हो प्रभु चरणों में अपर्ण ।।
प्रभु देख प्रभु में खोना प्रभु पा प्रभु-सा होना ।
बस प्रभु भक्ति में खोना ऐसा हो पूर्ण समर्पण ।।
मन का हर एक कोना हो सुन्दर और सलोना ।
सारे पापों को धोना चमके जैसे हो दर्पण ।।
नित स्वप्न निशा दिखलाती जल तेल दिया संग बाती ।
अब आई शुभ प्रभाली जब होगा पूर्ण जागरण ।।
मिथ्यातम हटा अंधेरा भया सम्यकदर्श उजेरा ।
भव-भव का मिटाये फेरा ऐसा निर्मल हो आचरण ।।

डाक टिकटों पर जैन इतिहास एवं संस्कृति

सुरेश जैन

जैन व्यक्तित्व

श्री झवेरचंद कालिदास मेघाणी (जैन)

झवेरचंद मेघाणी का जन्म चोटिला टाऊन-जिला सुरेन्द्रनगर गुजरात में 28 अगस्त 1896 को हुआ था। इनके पिता का नाम कालिदास तथा माता का नाम डोलिमा मेघाणी था। पिता कालिदास पुलिस फोर्स में कार्यरत थे जिनका नई-नई जगहों पर स्थानान्तरण होता रहता था। जिस से झवेरचंद की पढ़ाई पर असर पड़ता था। इसलिए पिता ने फैसला किया कि झवेरचंद की पढ़ाई को केवल राजकोट में जारी रखा जाए। उन्होंने 1912 में मैट्रिक पास की तथा 1917 में बी.ए. पास की। यहा बड़ा सादा जीवन जीते थे, जिसकी वजह से इन के कालेज के साथी इनको राजा जनक कहते थे, यह सदा सफेद धोती जो नीचे घुटनों तक लंबी होती थी, ऊपर लंबा कोट तथा आदर्श रूप से सिर पर बांधी हुई पगड़ी ही पहनते थे।

उन्होंने अपनी जिन्दगी की शुरुआत 1918 में जीवन लाल एण्ड कंपनी-कलकत्ता में निजी सहायक के तौर पर शुरु की तथा शीघ्र ही अपनी कर्तय निष्ठा तथा ईमानदारी के कारण इन्हें कंपनी की फैक्ट्री कराऊन एल्मुनियम-बेलूर में मैनेजर के पद पर नियुक्त का दिया गया। वे 1919 में 4 मास के लिए इंग्लैंड चले गए। भारत वापस आने के बाद इन्होंने इसी कंपनी में ढाई वर्ष कार्य किया।

इसके पश्चात् वापस सौराष्ट्र आ गए। इन्होंने 1922 में साप्ताहिक सौराष्ट्र पत्रिका के संपादक बोर्ड में कार्य शुरु कर दिया और सारी जिन्दगी गुजराती भाषा में लिखा चाहे इनका बंगला और अंग्रेजी पर भी सम्यक अधिकार था। इस प्रकार उन्होंने पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश किया जो जीविका की दृष्टि से कालांतर में उनका प्रमुख कार्य क्षेत्र बन गया। लोक साहित्य का अन्वेषण व अनुशीलन उनका मुख्यतम ध्येय था। उन्होंने लुप्तप्राय और उपेक्षित लोक साहित्य को पुनः जीवित कर प्रतिष्ठा प्रदान की। गुजराती उपन्यास व लुप्त लोक कथाओं को (जो इन्होंने गांव-गांव में भ्रमण कर के इकट्ठी की थी) उनको लिखने से इनको बड़ी ख्याति प्राप्त हुई। झवेरचंद की रचनाओं में गांधीवादी प्रभाव से युक्त उत्कृष्ट दे श प्रेम तथा स्वातंत्र्य भावना प्रायः सर्वत्र होती है, उन्होंने एक पुस्तक सिंघुडा लिखी जिसमें लिखी कविताओं के कारण भारतवर्ष कें युवा वर्ग पर असर पड़ता था तथा युव ब्रिटिश राज के विरुद्ध देश की आजादी की लड़ाई में भाग लेने लगे थे। इस कारण अंग्रेजों ने झवेरचंद को 1930 में दो वर्ष कारावास का दंड दिया तथा इनकी सिंघुउा नामक कृति को जब्त कर लिया।

उनकी रविन्द्र नाथ टैगोर से मित्रता थी, उन्होंने शांति निकेतन में व्याख्यान दिए। यह

अपनी रचना गाथा के लिए बड़े प्रसिद्ध हुए। महात्मा गांधी ने उन्हें अपने आप राष्ट्रीय शायर की उपाधि दी थी। उन्होंने 100 से ऊपर पुस्तकें लिखी। गुजरात के वह एक समाज सुधारक, स्वतंत्रता सेनानी, विख्यात कवि तथा महान् साहित्यकार थे। लोक साहित्य और लोकगीतों से संबद्ध उनकी प्रायः सभी कृतियां महत्ता रखती हैं, किन्तु गुजरात नो जय सौराष्ट्रनी रसधार तथा रोढियाली रात सर्वश्रेष्ठ है। इन का 9 मार्च 1947 को 51 वर्ष की आयु में देहांत हो गया।

झवेरचंद कालिदास मेघाणी (जैन) पर डाक टिकट

14 सितम्बर 1999 को भारत सरकार के डाक विभाग ने 4 डाक टिकटों का एक सेट जारी किया था, इसका शीर्षक था LINGUISTIC HARMONY OF INDIA इनमें एक डाक टिकट पर गुजराती लेखक व कवि श्री झवेरचंद कालिदास मेघाणी का चित्र छापा गया था। इस डाक टिकट को इण्डिया स्कयोरटी प्रेस द्वारा भारतीय लाल रंग, डल पीला रंग तथा हरे रंग को मिलाकर 4 लाख संख्या में छापा गया था। डाक टिकट का मूल्य 300 पैसे हैं। इस डाक टिकट का विवरण इंग्लैंड से छपने वाले स्टेनले गिब्णस केटालाग में No. 1863 पर दिया गया है।

नोबेल पुरस्कार सूची घोषित

क्र	क्षेत्र	वैज्ञानिक/पात्र के नाम	किस देश के
01.	चिकित्सा क्षेत्र में	एलिसन (जेम्स पी एलिसन) तासुकु हों जो	अमेरिका टेक्सास जापान
02.	भौतिकी क्षेत्र में	1 आर्थर एश्किन 2 गेरार्ड मेरो 3 डोना स्ट्रिकलेंड	अमेरिका फ्रांस कनाडा
03.	रसायन क्षेत्र में	फ्रांसिस अर्नाल्ड जार्ज स्मिथ ग्रेगरी विंटर	अमेरिका अमेरिका ब्रिटेन
04.	शाँति	डॉक्टर डेनिस मुकवेगे नादिया मुराद	काँगो इराक
05.	अर्थशास्त्र क्षेत्र में	विलियम नॉर्धोस पॉल रोमर	अमेरिका अमेरिका

टिमटिमाते-दोहे

❊ ब्र. सुदेश जैन ❊

बिना परिश्रम मिला धन, विन चरित्र का ज्ञान।
विना नीति **''धन कमाया''** सुख नहिं देते जान॥

लोभी **''लो-भी''** जब कहे लोभी पन घट जाय।
कह सुदेश लोभी तभी, मुक्ति मार्ग को पाय॥

किंचित भी मेरा नहीं , जग-वैभव-सुख-अंग।
अनंत सुखों का पुंज में, भोगूँ दुख ''पर'' संग॥

पर द्रव्यानि के निमित्त से, साता ऽ साता होय।
समदृष्टि समता धरे, कर्म निर्जर सोय॥

शत्रु हमारे हम स्वयं, जग में नहिं कोई और।
मित्र पाओगे अप्रतिम, पहुँचो स्वातम ठौर॥

ज्ञानी मरते भी हँसे, मूढ़ जिये भी रोय।
ज्ञानी निर्धन भी सुखी, धनी न सुख से सोय॥

अंधकार कुछ भी नहीं, वह है ज्योति अभाव।
ज्ञानदीप ज्यों ही जले, जगमग होत स्वभाव॥

अहंकार से घट भरा, मृदुता कहज्ञँ समाय।
पंडित मंडित अहं से, चारित क्या पलपाय॥

पर की भूलें देखकर, हँसते मूरख लोग।
ज्ञानी शिक्षा ग्रहण कर, ढालें निज दुख रोग॥

विद्वत तारा गणनि में,हूँ खद्योत समान।
लख **''सुदेश''** फिर भी लिखे, क्षमहु अल्पधी जान॥

हास्य तरंग

1. नेता जी चुनावी भाषण देते समय जोर जोर से चिल्लाकर बोल रहे थे हर आदमी को हर चीज मिलना चाहिए जो भी चीज तुम्हे अच्छी लगे यदि ठंडे लगे तो किसी भी दुकान से स्वेटर उठा लो, यदि भूख लगे तो खाने की दुकान लूट लो, । नेता जी भाषण देने के बाद मंच से नीचे उतरे तो चिल्लाये ! मेरी कार कहा है ?

2. रात को तीन बजे आनंद ज्वेलर्स के घर फोन आया ! सेठ जी आप की दुकान कब खुलती है ? दुकानदार रात को यही पूंछने को फोन किया-पूंछने वाला सेठ जी क्योंकि मैं आपकी दुकान में निकलने का रास्ता बाहर से बंद है।

3. नव विवाहित पत्नी, मेरे लिए टॉपी क्यों ले रहें, अपने लिए भी लो पति मैं बिना टॉपी के चुप रह सकता हूँ ।

4. पुलिस विभाग की निष्क्रियता के कारण शहर में चोरी की वारदातें होना आम बात हो गई थी । लेकिन बीती रात एक मॉल में हुए चोरी के अपराधियों को पकड़ने हेतु पुलिस का अमला एक दम सक्रिय होकर दूसरे ही दिन आपराधियों को पकड़ लिया जिससे पूरे शहरवासी आश्चर्य चकित थे। इस संदर्भ में खुफिया तंत्र के माध्यम से जो सत्य सामने आया कि इस बार चोरी का पूरा मॉल चोर स्वयं ही ले उड़े। पुलिस अपने हिस्से से बंचित रह गई इसलिए ऐसा हादसा पुलिस विभाग के साथ दुवारा न हो।

5. टीचर-भावित से 15 फलों के नाम बताओं , आम, अमरूद, सेवफल और 12 केले।

जिनेन्द्र कुमार जैन (गौरीनगर इन्दौर)

प्रोस्टेट बढ़ने के कारण लक्षण और नियंत्रण

वृद्धास्था में दूसरा प्रमुख रोग है प्रोस्टेट जो पुरुषों में पाया जाता है। प्रोस्टेट एक ग्रन्थि है जो देखने में अखरोट जैसी लगती है। पुरुषों के मूत्राशय के मुख-मार्ग में चारों और एक कड़ी गांठ होती है । ग्रंथि का पिछला भाग रेक्टम (मलांत्र) की ओर होता है । प्रोस्टेट ग्रंथि से दूध जैसा स्त्राव निकलता है । जो शुक्राणु को ले जाने में सहयोग करता हे। किसी कारण से इस ग्रंथि में प्रदाह हो जाता है जिसे प्रोस्टैटाइटिस, प्रोस्टेट का बढ जाना, प्रोस्टेट का केंसर रोग हो सकते है।

प्रोस्टेट रोग पुरुषों में 50 वर्ष के बाद होता है जो हर्मोनल असंतुलन प्रोस्टेट ग्रंथि की Cells में वृद्धि से होता है एवं घोड़ा सवारी करना, सही अन्डरगारमेन्ट का चुनाव न होने से पेट पर दबाव पड़ना, सामने पेंट की जेब में मोबाईल रखने, अधिक दो पहिया वाहन चलाने से पेट में झटके लगने आदि कारण प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त मूत्राशय की पथरी, वात, गठिया, किसी उत्तेजक दवा का उपयोग करना

प्रोस्टेट रोग होने पर पेशाब करने में तकलीफ बार बार पेशाब आना व जलन होना, पूरी पेशान होना, हर वक्त जाडा मालूम होना, पेट के नीचे हिस्से पेरिनियम की जगह टीस मारने का दर्द, कमर दर्द, किड़नी में संक्रमण होना।

50 वर्ष की उम्र से ही इसके प्रति सचेत रहते हुए अरहार दाल, मसूर दाल, काबली चना, गुड़ लाल मिर्च, मिठाई, चाय कॉफी का उपयोग बंद या सीमित करना एवं प्रतिवर्ष रोग की जाँच कराना, ब्रह्मचर्य पालन करना

रोग की प्रारंभिक अवस्था में ऐलोपैथी, आयुर्वेदिक व होम्योपैथिक चिकित्सा से पूर्ण लाभ हो जाता है एवं दवाई से लाभ ना हो सर्जरी ही विकल्प बचता है। रोग की शुरुआत में घरेलू उपचार में पाईन रूप का रस, कद्दू के बीज पीसकर सेंधा नमक मिलाकर पीना नियंत्रण में सहायक हैं। होम्योपैथी चिकित्सा में से बाल मूलअर्क की 10 बूंद थोड़े से कुनकुने पानी में मिलाकर दिन में तीन बार पीना, फेरम पिकरिक तीन बार जिंकम मेट 30 मी. उपयोगी है। उपचार के पूर्व अनुभवी योग्य चिकित्सक की सलाह से उपचार करना चाहिए।

जिनेन्द्र कुमार जैन (गौरीनगर इन्दौर)

बाल कहानी

समझदार ओम

सारनी के पास पाथाखेड़ा कस्बा है उस कस्बे में सुभाषनगर का एक ओम प्रकाश चौहान रहता था उसे भी चुहुल सूझी और उसने ब्लू ब्हेल गेम को लिंक किया क्लिक करने पर गेम इंस्टाल हो गया वह स्काईप पर एक ग्रुप से जुड़ गया । अब ओमप्रकाश को सुबह चार बजे उस गेम एंट्री का कोड़ मिला । अब बस ओमप्रकाश घर के सभी काम और अपनी पढ़ाई को छोड़कर गेम से चिपक गया । भोजन माता चिंता की चिंता छोड़कर गेम स्टेप पार करने लगा एक के बाद एक स्टेप पार करते हुए वह 7वें स्टेप पर पहुँच गया । इस दौरान उसने नुकीली चीजों से हाथ पर विभिन्न आकृतियों अंकित कर ली वह रेल की पटरी पर नंगे पैर भी दौड़ा एडमिन ने ओमप्रकाश के दिमाग और मोबाईल पर पूरा कब्जा करने का प्रयास किया धमकी देकर टास्क पूरे कराने की कोशि की ओमप्रकाश एडमिन की धमकी में उलझा नहीं 6 वें टास्क में ओमप्रकाश को उसकी माँ को खत्म करने की धमकी दी तथा उसकी माँ का नम्बर भी बताया इस धमकी को कोई भी प्रभाव ओमप्रकाश पर नहीं गेम में स्काइप ग्रुप में एडमिन सारे हिन्दी में टाईप करके दे रहा था एडमिन रूस से था और वह अपना नाम लिपिन बता रहा ओमप्रकाश ने अपनी सूझ बूझ का परिचय दिया धमकी से वह प्रभावित नहीं हुआ और उसने गेम और एडमिन की धमकी को समझदारी से फॉलो नहीं किया और वह बच गया । न तो उसने पुलिस को जानकारी दी और न ही कॉउसलिंग की अपितु पत्रकारों के माध्यम से मात्र युवकों और बच्चों को यह ही सलाह दी कि ब्लू ब्हेल गेम के पास ही नहीं जाना चाहिए तथा इस गेम में उलझना नहीं चाहिए इससे बचने का सर्वश्रेष्ठ उपाय यह ही है कि इससे दूर ही रहना चाहिए।

इस घटना के बाद ओमप्रकाश से अपना मोबाईल फार्मेट रीसेट भी कर लिया इसके बाद किसी का भी फोन नहीं आया। ओमप्रकाश की समझदारी ने उसे एक बहुत बड़ी दुर्घटना से बचा लिया तथा अनेक युवाओं और बच्चों की भी बर्बाद होने से बचने का उपाय बता दिया।

संस्कार गीत

तूँ अकेला है

अकेला है तूँ इस जग में
नहीं साथी सगा कोई
ये रिस्ता प्यार को जो है
इसी में दुनिया है खोई

1.
लगाये ये मेले हैं
कभी तो छूट जायेंगे
ये रिस्ते जो बनाये हैं
कभी तो टूट जायेगे
मोह की रात गहरी है
इसी में आत्मा खोई

2.
बनाया आशियां तूने
आखिर छूट जाता है
वीणा का तार झंकारे
ये आखिर टूट जाता है
यह तन रोग भय तेरा
नहीं निरोग है कोई

3.
मिले दुख सुख जीवन में
अकेला तूँ ही सहता है
नरक अरु स्वर्ग में जाकर
अकेला तूँ ही रहता है
नहीं कुछ साथ में जाता
समझले सत्य अब मोही

बाल कविता

फूल की कहानी

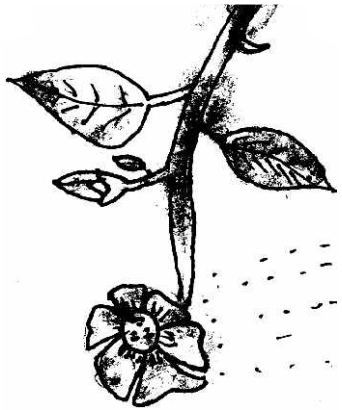

बोला सफेद फूल
क्यों उड़ती है धूल
क्या तेरा गोरख धंधा
करती है मुझको अंधा
मासूम धूल बोली
मैं तो हूँ बिल्कुल भोली
जब भी हवा ये चलती
मैं साथ उसके उड़ती
तूँ जाके हवा से कहना
मुझको भी साथ रखना
घोलो तुम साथ खुशबु
मिट जाये जग की बदबू
मैं फूल हूँ मैं हूँ फूल

समाचार

मुनि दीक्षायें सम्पन्न

गांधीनगर (गुजरात)- आचार्य श्री सुनील सागर जी महाराज के करकमलों से ब्र. विशाल भैया भिण्ड, ब्र. विशाल भैया मुम्बई, तथा सज्जन देवी मिण्डा प्रतापगढ़ को दिनांक 09 नवम्बर 18 को पंचकल्याणक के अवसर पर दीक्षायें दी गई। जिनके नाम क्रमशः मुनि श्री सुयत्नसागर जी, मुनि श्री सुमंत्रसागर जी, क्षुल्लिका सज्ज्ञान मति माताजी रखा गया।

पंचकल्याणक सम्पन्न

गांधीनगर (गुजरात)- आचार्य श्री सुनील सागर महाराज जी के संसघ सान्निध्य में दिनांक 09 से 14 नवम्बर 2018 तक श्रीमज्जिनेन्द्र पंचकल्याण प्रतिष्ठा श्री महावीर दिगम्बर जैन मंदिर गांधीनगर में सम्पन्न हुई।

सिद्धचक्र विधान सम्पन्न

चमररूआं (खानियाधाना)- आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के प्रिय शिष्य एलक श्री सिद्धांत सागर जी महाराज संसघ सान्निध्य में दिनांक 15 से 23 नवम्बर 2018 तक श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान ब्र. अनिल भैया बण्डा के विधानाचार्यत्व में श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान सम्पन्न हुआ।

नसिया इन्दौर- आचार्य विद्यासागर महाराज जी की शिष्या आर्यिका श्री अनुनयमति माताजी के संसघ सान्निध्य में दिनांक 08 से 16 नवम्बर 2018 तक श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान श्री दिगम्बर जैन हुकुमचन्द्र नसिया में ब्र. संजीव भैया कटंगी के विधानाचार्यत्व में सम्पन्न हुआ।

इन्दौर- आचार्य श्री अनेकान्त सागर महाराज के संसघ सान्निध्य में श्री दिगम्बर जैन बीसपंथी मन्दिर में दिनांक 15 से 23 नवम्बर तक श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान सम्पन्न हुआ।

सुदामा नगर- आचार्य श्री विनित सागर जी महाराज के संसघ सान्निध्य में श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर सुदामा नगर में दिनांक 08 से 23 नवम्बर को सिद्धचक्र महामंडल विधान सम्पन्न हुआ।

इन्द्रध्वज विधान सम्पन्न

इन्दौर- आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी की शिष्या आर्यिका आदर्शमति माताजी के संसघ सान्निध्य में दिनांक 15 से 24 नवम्बर तक श्री इन्द्रध्वज महामंडल विधान श्री दिगम्बर जैन मंदिर उदयनगर में सम्पन्न हुआ।

आचार्य पदारोहण दिवस सम्पन्न

इन्दौर- श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर इन्दौर में 24 नवम्बर 2018 को आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का 47वां आचार्य पदारोहण दिवस मनाया गया। जिसमें प्रातः काल अभिषेक शांतिधारा पूजन के साथ आचार्य छत्तीसी विधान किया गया। तथा आचार्य श्री के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला गया। रात्रि 7:30 बजे लगभग 1008 लोगों के द्वारा आचार्य श्री की महाआरती की गई। इसके बाद लगभग 51 वाहनों के द्वारा हजारों की संख्या में श्रद्धालु भक्तजन आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज को इन्दौर लाने के लिये ललितपुर के लिये रवाना हुये। आचार्य श्री को शास्त्र भेट करने का सौभाग्य हर्ष जैन, सचिन जैन, राहुल जैन स्पोर्टस, मनोज बाकलीवाल, मुकेश आवासा, प्रजेश जैन इन्दौर को प्राप्त हुआ। तथा आचार्य श्री ने अपने प्रवचनों में रेल जंजीर का उदाहरण देते हुए इन्दौर नगर को याद किया। तथा सभी पहुंचे श्रावक श्राविकाओ को आशीर्वाद दिया जिसके महानिर्देशक ब्र. सुरेश मलैया पंचबालयति मंदिर इन्दौर रहे। इसके बाद सभी ने देवगढ़, खंदारगिरी, चंदेरी, थुवोनजी, बजरंगगढ़ आदि क्षेत्रों के दर्शन कर पुण्य लाभ लिया। जिसमें हर्ष जैन, धमेन्द्र जैन सागर वाले,

नरेन्द्र जैन पप्पा बीडी वाले, राजेश जैन लॉरेल शर्ट, सचिन जैन उद्योगपति, राहुल जैन स्पोट्स, प्रजेश जैन सोधर्म उदयनगर, मनोज बाकलीवाल, आलोक आकाश जैन कोयला, सिंपल जैन, मुकेश नीलम जैन, राजीव रीता कासलीवाल का विशेष सहयोग रहा। जिसके मुख्य संयोजक संजय जैन मैक्स, मनोज अनामिका बाकलीवाल, अक्षय लीना कासलीवाल, सचिन जैन उद्योगपति, सलिल बड़जात्या, पं. प्रदीप टड़ा, वीरेन्द्र जैन, पं. राजीव जैन, राकेश पाटनी, निलय जैन, प्रकाश जैन अभिनंदन प्रेस, प्रकाश शास्त्री, महेन्द्र जैन चक्रूनकुल पाटोदी, सुगमचन्द्र जैन, संजय जैन, विनोद जैन, राजेश जैन, एम.के. जैन, महेन्द्र जैन, विशाल जैन, कमल जैन, विपुल बांझल, सौरभ जैन गुना वाले, एम.के. जैन (एल.आई.सी), अजित जैन रहे।

पिच्छिका परिवर्तन सम्पन्न

चमररूआं (खानियाधाना)- आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के प्रिय शिष्य एलक श्री सिद्धांत सागर जी महाराज का पिच्छिका परिवर्तन 24 नवम्बर 2018 को श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान के समापन अवसर पर सम्पन्न हुआ। पिच्छिका देने का सौभाग्य श्रीमति रानी कीर्ति जैन बामोरकला, श्रीमति राखी अनिल जैन (अन्नी), श्रीमति मुन्नी देवी निर्मल कुमार, डॉ. राकेश जैन मंडावरा, संतोष शास्त्री साढूमल, मनोज चौधरी खानियाधाना, श्रीमति सुषमा सुमत जैन अहमदाबाद को प्राप्त हुआ। तथा पुरानी पिच्छी श्रीमति संध्या प्रकाशचन्द्र जैन चमररूआ को प्राप्त हुई। कार्यक्रम का संचालन ब्र. जिनेश मलैया प्रधान सम्पादक संस्कार सागर इन्दौर ने किया।

समयसार प्रवचनसार ग्रन्थ का लोकार्पण

चमरुआं (खानियाधाना)- आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के प्रिय शिष्य एलक श्री सिद्धांत सागर जी महाराज संसघ सान्निध्य में दिनांक 24 नवम्बर 2018 को आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी का ग्रन्थ श्री समयसार जी श्री प्रवचनसार जी का पद्यानुवाद पंडित श्री हीरालाल जी सिद्धांत शास्त्री साढूमल ने किया था जिसका प्रकाशन श्री दिगम्बर जैन युवक संघ इन्दौर ने किया। जिसका लोकार्पण ब्र. समता दीदी, ब्र. अनिता दीदी, ब्र. अनिल भैया, ब्र. जिनेश मलैया इन्दौर, अमोलक चन्द्र जी बामोरकला, कीर्ति जैन, मनोज चौधरी मंत्री खानियाधाना, डॉ. राकेश जैन मंडावरा, देवेन्द्र जैन साढूमल, सुमत जैन अहमदाबाद, राजश्री जैन चंदेरी, राजकुमार जैन इन्दौर, राजु जैन इन्दौर, डॉ. विनित जैन, संतोष शास्त्री साढूमल ने किया।

सुशील जैन डबडेरा का निधन

इन्दौर-श्री दिगम्बर जैन परवार समाज इन्दौर के अध्यक्ष श्री सुशील जैन डबडेरा का 02 नवम्बर 2018 शुक्रवार को रात्रि 10 बजे हृदयघात से निधन हो गया। श्री सुशील डबडेरा दिगम्बर जैन सामाजिक सासंद के उपाध्यक्ष एवं आचार्य विद्यासागर महाराज के सान्निध्य में चल रही कई संस्थाओं के पदाधिकारी भी थे। आप धर्मशील कर्मनिष्ठ विराट व्यक्तित्व के धनी थे। समाज के प्रत्येक वर्ग चाहे वो युवा हो, या बुजुर्ग सभी के बीच लोकप्रिय थे एवं समाज में चल रही कुरीतियों को दूर करने को लेकर कृंतसंकल्प थे जैसे ही समाजजनों को उनकी निधन की खबर मिली सम्पूर्ण समाज शोक में डूब गया। सुशील का एकाएक यू जाना इन्दौर जैन समाज ही बरन सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड जैन समाज एवं कई परोपकारी संस्थाओं के लिए अपूर्णनीय छती है। श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक धार्मिक ट्रस्ट श्री दिगम्बर जैन युवक संघ संस्कार सागर परिवार उनको श्रद्धा सुमन अर्पित करता है।

अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षा

माह :दिसम्बर 2018 रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिये

01. उपास्य की उपासना .....बनने के लिये ही होती है।
02. उपासना से नहीं किन्तु .....से उदासीन होना जरूरी है बन्धुओं!
03. प्रभु का अवलम्बन लेकर ..... बना जा सकता है।
04. भगवान की वीतरागता देखकर..... आह्लादित हो जाता है और उन जैसा बनने की भावना होती है।
05. पंच परमेष्ठी के अलावा आत्म..... कल्याण के लिये इस संसार में न कोई मंगलकारी है और न शरण।
06. देव-शास्त्र-गुरु के माध्यम से जिस व्यक्ति ने अपने जीवन को ..... की ओर मोड़ लिया वह एक दिन अवश्य विराम पायेगा।
07. .....के हृदय की बात जब तक नहीं समझोगे तब तक आप उन जैसे चैतन्य की परिणति को प्राप्त नहीं कर सकते।
08. जब तक हमारा सम्बन्ध भगवान् से है तभी तक हम ..... कहलाने के अधिकारी है।
09. हे भगवान्! यह बात सही है कि आप सूर्य के समान हैं और हम दीपक के समान। लेकिन यह बात भी सही है कि सूरज की आरती सूरज से नहीं बल्कि.....से ही होती है।
10. भक्त और भगवान् की दिशा एक ही है यह बात अलग है कि.....भिन्न भिन्न हैं।
11. .....का ही यह प्रतिफल है कि हम भगवान् के समान होकर भी भगवान् जैसा अनुभव नहीं कर पा रहे हैं।
12. जिस प्रकार नदी सागर को देखकर ही नहीं किन्तु.....होकर ही सागर बन पाती है, ठीक उसी प्रकार भगवान् को अकेले देखने मात्र से भगवान् नहीं बना जाता किन्तु उस जैसा आचरण करने से भगवान् बना जाता है।
13. जिन और जन में इतना ही अन्तर है कि एक वैभव के ऊपर बैठा है और एक के ऊपर.....बैठा है।
14. जिसमें रागद्वेष, अहंकार, ममकार आदि नहीं पाये जाते वे ही वास्तव में.....हैं।
15. पारसमणि के स्पर्श से लोहा भी सोना बन जाता है लेकिन सच्चे देव तो ऐसी अदभुत पारसमणि हैं जो अपने स्पर्श से लोहे का सोना तो क्या .....ही बना देते हैं।
16. पूजा करो, पूर्ण की करो, अनंत की करो। लोक में विख्यात है कि .....की पूजा करोगे तो तुम भी सुखी बन जाओगे।
17. हम अपने परिणामों से ही भगवान से दूर हैं और परिणामों की.....से ही उन्हें हम निकट देख सकते हैं।
18. भक्ति-आराधना सातिशय पुण्य का कारण तो है ही साथ ही साथ परम्परा से..... का कारण भी है।
19. मंदिर और मूर्तियाँ हमारी आस्था-निष्ठा के केन्द्र हैं, जहाँ हम अपनी भक्ति-भावनाओं को..... कर सकते हैं।
20. पूजा के समय चढ़ाये गये द्रव्य के माध्यम से श्रावक का परिग्रह के प्रति.....घटता है।
21. भगवान् के सामने जाकर चावलादि चढ़ाने का अर्थ ही यही है कि हम त्याग के आदर्श के सामने जाकर त्याग की .....लेते हैं।
22. अधिक कुछ स्वाध्याय साधना नहीं होती तो कम से कम निराकुलता से भगवान् का नात तो लिया करो, यह नाम ही एक न एक दिन संसार से.....करा देगा।

23. संसारी प्राणी दुनिया की नकल करने में लगा है पर उसे सही-सही नकल करना भी अभी नहीं आता, यदि नकल करना ही है तो.....की नकल करो जो तुम्हें मुक्ति दिलायेगी।
24. भगवान् के मन्दिर में प्रवेश करते ही दुनिया के सारे महल और मकान.....लगने लगते हैं।
25. भगवान् की पूजा संसार को दग्ध करने वाली है तथा काम वासना को शांतकार.....को पवित्र बनाती है
26. मूर्ति, पाषाण और कला की कीमत हो सकती है पर भगवान् की नहीं, भगवान् तो..... हैं।
27. हे भगवन् अब हमें प्रसिद्धि की नहीं.....की जरूरत है।
28. मूर्ति पूजा का अर्थ मात्र धातु या पाषाण पूजा नहीं किन्तु मूर्ति में स्थापित..... रूप अपने आराध्य की कल्पना कर उनका गुणगान करना है।
29. सरोवर के बीच बैठा हुआ व्यक्ति जिस तरह दावानल से घिरे रहने पर भी उसकी दाह से बच जाता है ठीक उसी तरह भगवान् के मंदिर में पहुँचने पर भक्त पुरुष बाहरी विषय-कषायों के .....से भली-भांति बच जाता है।
30. इधर-उधर की पंचायत में मत रमो किन्तु पंच परमेष्ठी की भक्ति में लीन हो जाओ, वह भक्ति तुम्हारी.....का कारण बनेगी।
31. स्तुति करने का प्रयोजन मात्र रागात्मक क्षणों की प्राप्ति नहीं है बल्कि चित्त में शांति-वैराग्य और ..... में वृद्धि भी होनी चाहिए।
32. हे रसना ! तूने आज तक .....भरे गीत-संगीत में ही रस लिया है अब उसमें रस ना ले। अध्यात्म भरी भक्तिवीतराग विज्ञान में रस ले।
33. भक्ति, ...के लिये कारण है और भक्ति संसार के लिये।
34. भक्ति कभी भी हेय बुद्धि से नहीं होती बल्कि उसे तो.....बुद्धि से गद्‌गद् होकर करनी चाहिए।
35. भक्ति तो ठीक है किन्तु अन्धभक्ति ठीक नहीं। बंधुओं ! भक्ति को.....की डोर से बाँधे रखना।
36. पंच परमेष्ठी की भक्ति एवं ध्यान से.....बढ़ेगी, संक्लेश घटेगा, वात्सल्य बढ़ेगा।
37. जिनवाणी की स्तुति करने से जिनदेव की भी स्तुति हो जाती है क्योंकि भगवान् तीर्थंकर द्वारा ही प्रतिपादित सारा तत्त्व.....में है।
38. भक्ति जब पराकाष्ठा पर पहुँच जाती है तब वाणी मूक हो जाती है..... अवरूद्ध हो जाता है आँखों से अश्रुधारा बहने लगती है, ऐसी स्थिति भक्ति भावना के प्रवाह में ही होती है।
39. जैसे हो पृष्ठों के बीच गोंद लगाने पर दोनों पृष्ठ एक हो जाते हैं ठीक उसी प्रकार..... और भगवान् के बीच भक्तिरूपी गोंद लगाने से दोनों एकमेक हो जाते हैं।
40. भगवद् भक्त बीहड़ घनघोर जंगल में भी रास्ता पा लेता है और.....को भूल जाने वाला साफ सुथरे रास्ते पर भी भटक जाता है।
41. मुनि श्री क्षेमन्कर सागर जी महाराज की समाधि कहाँ पर हुई।
42. मुनि श्री सौम्यसागर जी महाराज की समाधि कब हुई।
43. आर्यिका अर्चितमति माताजी की समाधि किसके सान्निध्य में हुई।
44. शरद पूर्णिमा पर आरती नृत्य प्रतियोगिता में प्रथम स्थान किसने प्राप्त किया।
45. 24 अक्टूबर शरद पूर्णिमा पर निःशुल्क चिकित्सा नेत्र जाँच शिविर कहाँ लगाया गया।
46. हथकरघा सद्‌भावना सम्मेलन कहाँ पर कब हुआ।
47. डाक टिकिट में किसका परिचय दिया गया तथा उनका कितने रूपये का डाक टिकिट निकला।
48. हरी धनिया के पत्ती में कितने प्रतिशत पानी रहता है।
49. देश की पहली महिला आई.ए.एस अधिकारी कौन थी उनका निधन कहाँ हुआ।
50. मोतिया बिन्द कितनी वर्ष की उम्र के बाद होता है।

अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षाः दिसम्बर 2018

प्रश्न पत्र भरकर भेजने की अंतिम तिथि माह की 25 तारीख रहेगी

नाम .....स्थान .....

उम्र .....सदस्यता क्र. .....

पूर्ण पता .....

पिन कोड ..... फोन नं..... (एस.टी.डी.) .....

1	2	3	4	5
6	7	8	9	10
11	12	13	14	15
16	17	18	19	20
21	22	23	24	25
26	27	28	29	30
31	32	33	34	35
36	37	38	39	40
41	42	43	44	45
46	47	48	49	50

आपके नगर के संवाददाता का नाम ..... हस्ताक्षर

नियम :– ..... जब तक दूसरा प्रश्न–पत्र भरकर नहीं भेजतेतब तक के लिए।

वर्ग पहेली 236

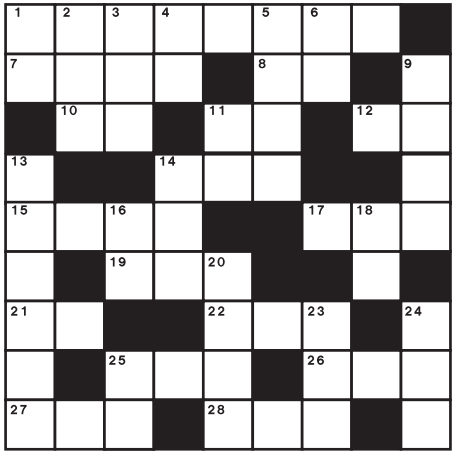

ऊपर से नीचे

1. होने योग्य, सुन्दर, रत्नत्रय धारने योग्य,जीव -2
2. घटाला घोटाला -3
3. बसंत ऋतु -3
4. किनारा वाणशर -2
5. किसी भी राज्य राष्ट्र का कार्य केन्द्र -4
6. रूपया, पैसा, अर्थ, वित्त -2
9. चैतन्य संबंधी आत्मा का परिणाम -4
11. चावल से बना एक खाद्य पदार्थ -2
13. आ. अमितगति द्वारा रचित सल्लेखना ग्रंथ -6
14. परामर्श -3
16. किसी विषय को खींचना, उड़ान -2
18. आत्मप्रदेशों के कम्पन का नाम -2
20. रजनी का स्वामी, चन्द्रमा -4
23. बदली, मेघमाला -3
24. सम्पत्ती, धन, जायजाद -3

बाये से दाये

1. आचार्य शिवकोढि द्वारा रचित एक आराधना ग्रंथ -8
7. आदान प्रदान का माध्यम बोलचाल -4
8. मनुष्य, जनता -2
10. पुरुष, पौरूष- -2
11. वृक्ष झाड़- -2
12. बुरे कार्य, अनैतिक कार्य -2
14. साहित्यकार भीष्म के बाद लगने वाला उपनाम -3
15. प्राचीन काल का वाद्ययंत्र, दुंदुभी -4
17. कमीशन, जाँच ऐजेंसी -3
19. तरंग उर्मी -3
21. गला, गर्दन -2
22. उत्तर, उलाहना- -3
25. प्रिया, पत्नी, कामनी -3
26. हस्ताक्षेप -3
27. सुन्दर, मनोहस प्रिय, स्त्री -3
28. भ. राम को जूँठे बेर खिलाने वाली भीलनी -3

वर्ग पहेली 235 का हल

1 का	र्ति	2 क	■	3 वी	त	4 रा	ग	■
र्ति	■	5 ल	ह	र	■	ह	■	6 मे
7 के	यू	र	■	■	8 जा	गी	9 र	■
या	■	10 व	11 म	12 न	■	13 र	ज	14 त
नु	■	■	15 ह	न	16 न	■	■	त्वा
17 प्रे	म	■	ज	■	ज	■	18 पा	र्थ
क्षा	■	19 ध	■	20 च	र	म	■	वा
■	■	21 क	22 र	म	■	■	23 पू	र्ति
24 प्र	जा	■	25 स	न	म	■	26 ना	क

.....सदस्यता क्र. .....

पता : .....

वर्ग पहली प्रतियोगिताओं के विजेताओं को **हरसाहमल सत्येन्द्रकुमार जैन** (गोकुल बाजार, रेवाड़ी, हरियाणा) की ओर से पुरस्कृत किया जाएगा। प्रथम पुरस्कार : 101रु. द्वितीय पुरस्कार 51 रू., तृतीया पुरस्कार 41 रू.)
प्रतियोगिता भरकर भेजने की अंतिम तिथि माह की 25 तारीख रहेगी